नहीं हमें काम अब अपने और बेगानेसे ।
है जुदा ज़माना हम जुदे ज़माने से ॥
है तलाश उसकी जिसपर दिल मायल है ।
तडफे है मीन की तरह ये आशिक दिल है ॥

दोहा–सहरा से राजी रहें, बस्ती से घबडांय ।
मोहन प्यारे के बिना, हमें न कछू सुहाय ॥

यह बात जोगनजीकी सुनकर साहूकार लोग कहनेलगे वा क्या बात है आपका कहना ठीक है इसमें फर्क नहीं मगर ह लोगों पर तो अवश्य ही कृपा होनी चाहिये अव्वल तो हमार ऐसी तकदीर नहींकि जो महात्माओंका दर्शन हो न मालुम किस पुन्य प्रताप के उदय से तुमारा दर्शन हुआ ।

यह वचन सुन और उनको देखा कि इनको मेरा गानापसंद है कहना मंजूर करना चाहिये जगह जगह गाना होनेमें शहरमें शोहरा होगाही और होले २ किसी न किसी दिन बादशाह सलामत के कान तक खबर पहुंचही जायगी यह विचारकरउन लोगोंसे कहा अच्छा बाबाजैसा तुम कहतेहो वैसाही होगा यह वचन सुन साहूकार लोग जोगनजीको प्रणाम कर अपनेअपने मकानोंको आये और जब शाम का वक्त हुआतो सब साहूकार रतनबागमें जमा हुए इसके गानेकी धूम तमाम शहरमें छा गई थी और यह चरचा फैलगई थी कि शाहीबागमें एकजोगनआई है गाने बजाने में एकही है आज उसी जोगन का रतनबागमें गाना है बश फिर क्या था एक घंटे के अंदर हज़ारों आदमी बागमें जमा होगये कुल खलकत उमड पडी रईसों ने दो चार आदमी और लियाकत दार अपने मुनीम मैनेजर वगैरह और सवारी जोगिनजी के लिवाने का भेज वह सवारी में

बैठ वहां आई और इस भीड भाड को देख दिलमें तो नि हायत खुश हुई मगर ऊपर मनसे तबियत बिगाड़ नाक चढ़ा कहने लगी बाबा हमको आज किस बलामें ला फँसाया यहां तो बडा आलम जमा है शहर में रकूवत रही या नहीं।

साहूकार कहनेलगे यहसब आपके दर्शनकी अभिलाषा किये डटे हुए हैं आप तशरीफ लाइये एक चौकी पर जो सबसे ऊंची बिछी थी मृगछाला पर जोगिनजी को बिठाया सुन्दर खुशबूदार फूलों का हार गलेमें पिन्हाया चँवर होनेलगे चारों तरफसे जैजै कार होने लगी बाद खामोशी उनने अपना सितार छेडा औ यह गजल गाना शुरू किया।

गजल—जबसे हुआ दिल उस यारपर माइल मेरा।
रहता काबू में किसी वक्त नहीं दिल मेरा॥
मिस्ले सीमाब उडा जाता है फुरकतसे तेरी।
तू जो आजाय ठहरजाय अभी दिल मेरा॥
कूचए इश्कमें रक्खाहै कदम जिस दिनसे।
कौनहै दिलके सिवा रहिबरे मंजिल मेरा॥
याद कर कर के तेरी सूरत को मोहन।
मिस्लेमाही तडफताहै यह दिल बिस्मिल मेरा॥

इस गजलके होते ही तमाम आलम मानिन्द बुत के होगये, जिस तरह कोई जादू पढ़के इन्सान को अपने बसीभूत कर-लेताहै उसी तरह कुल आलम इस गजल रूपी जुल्फ पेचां में फंसकर खामोश होगया तब जोगनने एक भजन और गाया॥

भजन।

प्रीति कर काहू सुख न लह्यो॥
प्रीत पतंग करी दीपक सों अपनो प्राण दह्यो॥ प्रीत कर

काहू सुख न लह्यौ ॥ १ ॥ भवँरन प्रीत करी जलसुत संपुट मुखहि गह्यौ ॥ प्रीत कर काहू सुख न लह्यौ ॥ २ ॥ सारंग प्रीत करी जु नादसों निकटहि बाण सह्यौ ॥ प्रीत कर काहू सुख न लह्यौ ॥ ३ ॥ हम हू प्रीति करी मोहनसों चलत न कछू कह्यौ ॥ प्रीति कर काहू सुख न लह्यौ ॥४॥ सूरदास जा दिनते बिछुरे नयनन नीर बह्यौ ॥ प्रीत० ॥५॥

बस इस भजन को सुनतेही चारों तरफ से वाह वाह होनेलगी जोगिनजी अपना सितार बंद कर जाने की तयारी करने लगीं लोगोंने इनकी बड़ी बीनती की और कहा अब आप कहां जातीहो यह जगह आपही की है सब तरह का आराम है जहां जी चाहे जबतक खुशीसे रहो हम सब लोग आपकी सेवा में हाज़िर हैं।

यह वचन रईसों का सुनकर जोगिनने वहांका रहना पसंद किया और एक क्यारी में आमके सघन वृक्षों के नीचे अपना आसन जमादिया जब इसको तीन चार दिन बीते कि बादशाहके सामने यह जिकर पेश हुआ कि गरीबपरवर रतनबाग में एक जोगन जिसकी उमर बीस बरस की होगी आनकर ठहरी है गाने में लासानी है तमाम शहर में उसके गानेकी शोहरत होचुकी है सरकार भी अगर गाना सुनेंगे हैरत अंगेज होंगे

यह सुन बादशाह ने फरमाया कि अच्छा आज शाम कोशाही बाग में महफिल बनकर तयारहो और मयकुल इजलासअहल कारान हाज़िर हों जोगन का गाना कराया जाये यह बात बादशाह की सुनकर वजीरोंने वैसाही किया तमाम शहर में ये बात जाहिर होगई कि आज शाहीबाग में जोगनका गानाहै खलकत पहलेसेही जमा होगई थी बादशाह सलामत भी आ

अरजन घोड़े की तस्वीर
एक पैर का सफ़ेद होना अजेल की
पहिचान है और यह अशुभ है
स्यारवालदार घोड़े की
तस्वीर
नोखे घोड़े की तस्वीर

फूलदार घोड़े की तस्वीर
सियाह ज़बान घोड़े की तस्वीर
ये अशुभ है
सिकाल घोड़े की तस्वीर
जिस घोड़े का दाहिना हाथ और पांव बायां और दाहिना
हाथ भव सफ़ेद हो उस को सिकाल कहते हैं
पंचल घोड़े की
तस्वीर

स्याह तालु घोड़े की तस्वीर
ये शुभ हैं
गजदंत घोड़े की तस्वीर
ये अशुभ है
घोड़े की तस्वीर

नरी घोड़े की तस्वीर
घनी घोड़े की तस्वीर
शुतरदंदा घोड़े की तस्वीर
ये शुभ है
अड़िया घोड़े की तस्वीर

अख़्ते घोड़े की तस्वीर
गमोजुन घोड़े की तस्वीर
शुतर दंदान घोड़े की तस्वीर
माऊ कुहन घोड़े की तस्वोर

चकावल वाले घोड़े कीतस्वीर
अरबघर
हद्दे की तस्वीर
पिछले धड़की तस्वीर हड्डी कीतस्वीर
पहिचान कीबनाई है एकतरफ हड्डी
नुकीली निकल आती है
काले की तस्वीर
पिछले धड़की
तस्वीर मोटड़े की
पहिचान

केरहड्डी की तस्वीर
चकावक घोड़े की तस्वीर
पुतकल घोड़े की त०
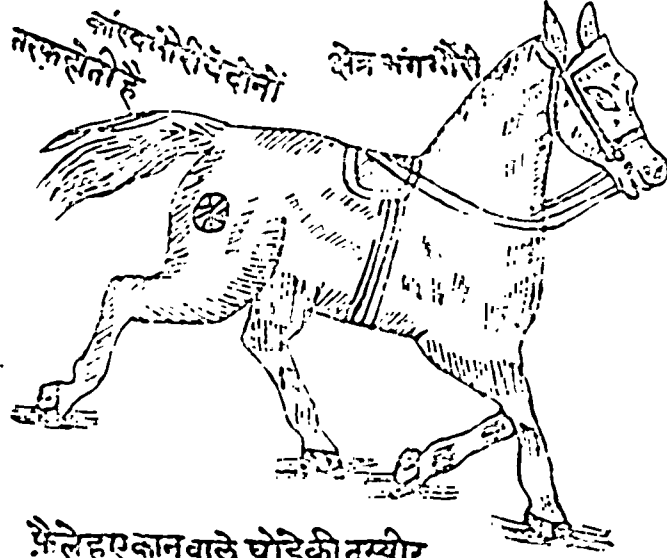
फैले हुए कान वाले घोड़े की तस्वीर
अंगूटाल घोड़ा
सिंह के निशान दो होते हैं तीन कान या
इससे ज्यादा भी

सांपन भौंरी
सीने की भौंरी
आदम भौंरी
इन भौंरेयों को अशुभ कहते हैं

देव मुनि गैरोदार घोड़े का
कटोली भौंरी
दप मुनि
सिंहन खूंटो
उरवाड़
स्याह गालू घोड़े की तस्वीर

ख़लदार घोड़े की तस्वीर जिसका हाथ सफ़ेद हो
उसको धम वरक़ कहते हैं

दुमदार घोड़े की तस्वीर
चकार घोड़े की तस्वीर
कपाती दुम घोड़े की तस्वीर

खूंटाउखाड़ भौंरी
सुजदल भौंरी
तवपोर भौंरी

यह घोड़ा ब्राह्मण वर्ण है
यह घोड़ा क्षत्री वर्ण है

अथ शालिहोत्र प्रारम्भः
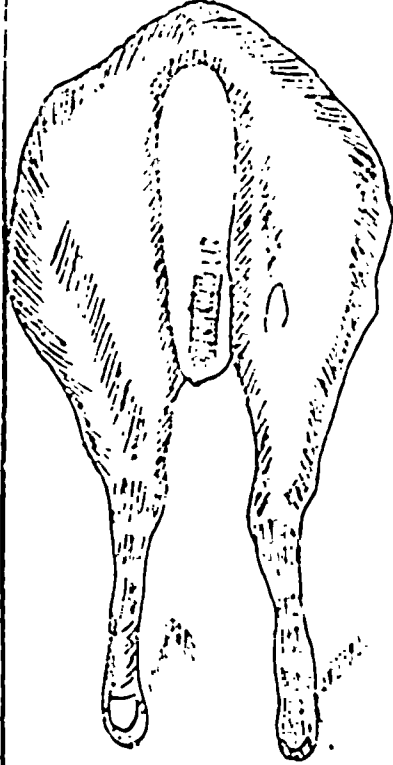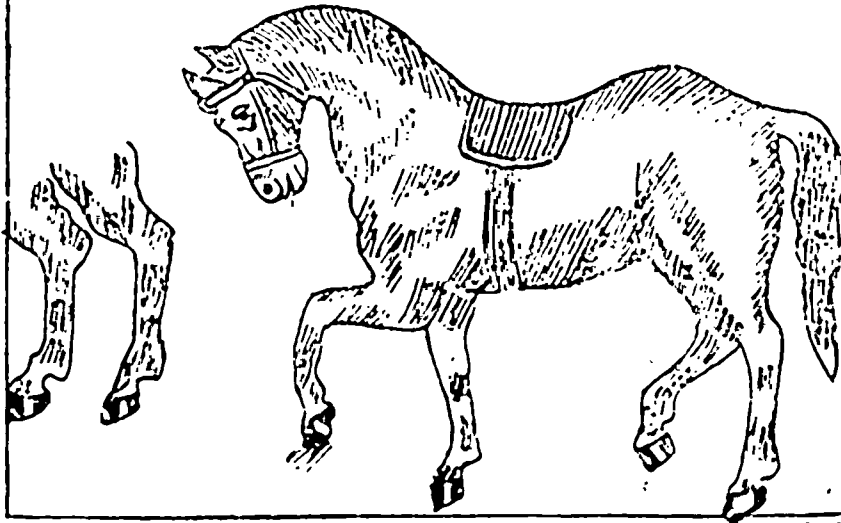
मंगलाचरणम् ।

❀ दोहा ❀

परब्रह्मको ध्यान करि, सब देवन सिर नाय ॥
शालिहोत्र वर्णन करूं, भाषा ललित बनाय ॥

प्रिय सज्जनो! परमात्मा ने अपनी सृष्टि में एक अद्भुत पशु जिसे घोडा कहते हैं और वह बग्घी इक्का टमटम आदि सवारियों में जोते जाते हैं इस घोडेसे संसार के अनेकों कार्य सिद्ध होते हैं जैसे घोडेपर व्यापारी लोग नाज लादते हैं, यह सवारीके लिये बहुत ही लाभदायक है घोडा चलने में तेज होताहै कहीं २ के घोडे ऐसे वीर होते हैं जो अपने स्वामी का विपत्ति समय में बडा काम करते हैं जैसे दरिया के अत्यन्त वेग में पार जाना कठिन हो जाता है परन्तु घोडा ऐसा बहादुर होता है, जो मालिक को पीठपर चढाकर पारकर देता है यहांतक कि यह चोर बदमाशों से समय पड जानेपर बचा सक्ता हैक्योंकि घोडेकी दौडमें पकडना मुश्किल हो जाता है इसलिये राजा महाराजा अमीर साहूकार आदि घोडेकी बड़ी कदर करते हैं किसी समय घोडा बीमार होजाता है तो बिना दवा के रोग से प्रायः मरजाते हैं इस लिये इस पुस्तक में उनके लक्षण शुभ अशुभका वर्णन करके उनकी चिकित्सा भलीभांति लिखी गई है जिससे घोडे सहज में

आरोग्य होसकते हैं इसलिये घोडों के पालनेवाले महाशयों के लाभार्थ यह पुस्तक अनेक ग्रंथोंसे संग्रहकी गई है. यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको लेकर रखना चाहिये और एकबार पढजाने से भलीभांति ज्ञान होसकता है कि अमुक घोड़ोंके अमुक रोग हो-गया है और अमुक औषधि का सेवन करना चाहिये.

भारतवर्ष में बहुत प्राचीन काल में शालिहोत्र नामक कोई महान् अश्ववैद्य हुए थे, उनने इस विद्या में बडी पारदर्शिता प्राप्त कीथी और इस विषयमें जो ग्रन्थ उन्होंने संस्कृत भाषामें लिखा था वह उन्हीं के नाम से विख्यात होगया. अर्थात् अश्व-विद्या पर अन्य महात्माओं के बनाये हुए ग्रन्थभी शालिहोत्र कहलाने लगे ।

संस्कृतभाषा में घोडे चार प्रकार के लिखे हैं. यथाः—उत्तम, मध्यम, अधम और अधमाधम ।

जिन घोडों के सिखाने में परिश्रम अधिक नहीं होता है, स-हज में सीख लेते हैं; और जिनका स्वभाव भी नम्र होता है. अपने स्वामी के मनोनुकूल काम करते हैं न चलनेमें अडते हैं; न पीछे को हटते हैं, ऐसे उत्तम उत्तम लक्षणों से युक्त उत्तम होते हैं, तथा इन लक्षणों से हीन होने पर उत्तरोत्तर मध्यम हैं अधम और अधमाधम जाने जाते हैं ।

घोडों के रङ्ग—संस्कृत में घोडोंके रङ्ग सात प्रकारके लिखे हैं जैसेः—सफेद, लाल, पीला, सारङ्ग, (विचित्र वर्ण) कपुशी, नील और कृष्ण । इनमें से सफेद रङ्ग का घोडा सबसे उत्तम होता है सर्वाङ्गश्वेत घोडा राजाओं के लिये प्रशस्त होता है ।

सफेद रंग बर्फ के ढेले के सदृश होता है, लालवर्ण कुंकुम के

समान होता है, पीला रंग हल्दी के समान और सारङ्ग चित्रवि-चित्र रङ्ग होता है, जिसे कबरा कहते हैं। कपिलवर्ण पिशंग कहाता है, दूध के समान रंगवाले को नीलक तथा जामुन के फल के सदृश रंग काला होता है।

जिस घोडे में पीली दमक मारती हो और पांव उसके सफेद हो, तथा नेत्र काले हों उसे चक्रवाक कहते हैं यह घोडा राजा-ओं के योग्य होता है।

जिस घोडे के मुख पर चन्द्रमाकी किरण के समान आवर्त अर्थात् भौंरी हो, जामुन के फल के समान आकृति हो, पांव सफेद हों उसे मल्लिक कहते हैं।

जिस घोडे का सब रंग सफेद हो, केवल एक कान काला हो उसे श्याम कर्ण कहते हैं, प्राचीन समय में यही घोड़ा अश्वमेध यज्ञ के काम में आता था।

जिसका सम्पूर्ण वर्ण सफेद हो परन्तु पांव काले हों, यह यम-दूत संज्ञक घोडा अशुभ होता है।

जिसके पांव सफेद हों, पूंछ, छाती, मुख और सिर के बाल काले हों वह अष्ट मंगल कहाता है।

जिसके रोम देखने से वर्ण की प्रतीति न हो सकती हो वह पुण्य संज्ञक कहाता है यह घोडा रखने योग्य नहीं होता है।

जिस घोडे के पांव सफेद और मुख मध्यम होता है उसे पञ्च-कल्याण बोलते हैं, यह घोड़ा शुभ होता है।

शुभाशुभ लक्षण—जिन घोडों के मुख दीर्घ परन्तु सूक्ष्म मास से युक्त होवे हैं वे घोडे शुभ होते हैं। जिनके कंधे ऊँचे; मुख

दीर्घ ग्रीवादीर्घ वाल कटिप्रदेश गोल और पुष्ट, सुघटित पुष्ट और मांस से गर्दन पर सघन रहित. अगले पांव टेढे और चक्राकार खुर, वक्षस्थल चौडी, कान छोटे, पार्श्व छोटी तालु लाल दंत पंक्ति शिखराकार सुडौल दीप्तिमान. खाल कोमल. ऊपर नीचे के ओष्ट ताम्रवर्ण, जिह्वा लाल, नासिका का रंग लाल, शरीर न अत्यन्त मोटा आंख चौड़ी. ललाई लिये हुए, अयाल के बाल कोमल; इन लक्षणों से युक्त घोडे शुभ होते हैं ।

आवर्त अर्थात् भौंरियों का वर्णन–इस देश में अच्छे बुरे घोडे की पहिचान प्रायः भौंरियों से हुआ करती है ये घोडेके अंग प्रत्यंग में हुआ करती हैं जैसे अंगों में होता है उसी अंग के अनुसार उनको शुभाशुभ फल कहते हैं, यदि शुभ अंगों में हो तो शुभावर्त और अशुभ अंगों में हो तो अशुभावर्त होत हैं ।

भौंरियों के मुख्य स्थान बारह हैं, जैसे ललाट, मस्तक, ग्रीवा हृदय, पाद, मणिबंध, नाभि; स्कन्ध, कण्ठ, मुख, कुक्षि, और तीनों छिद्र । रोमों के गोल घुमाव को आवर्त कहते हैं ।

शुभ आवर्तों के लक्षण–जिस घोडे के नासिका के अग्र भाग में एक, ललाट के अग्रभाग में एक. कनपटी में एक, कान में एक और मस्तक में एक गोलाकार भ्रमरी होती है वह घोड़ा उत्तम होता है ।

जिसके हृदय, स्कंध, कंठ कटि, नाभि, कुक्षि और पार्श्व भाग में भ्रमरी होती है वे मध्यम होते हैं ।

जिसके ललाट में दो आवर्त और तीसरा समुद्गम हो वह घोड़ा सबसे उत्तम और पूर्ण आयुवाला होता है ।

जिसके मस्तक पर एकके ऊपर एक लगा तार तीन आवर्त हों तो उसे निश्रेय वा निश्रेणी कहते है, यह घोडा बल और वृद्धि करने वाला होता है।

जिसके कंठमें उत्तरोत्तर तीन आवर्त होते हैं वह भी उत्तम होता है जिस घोडेकी पीठके वांसे पर एक आवर्त होता है, वह अशुभ और भ्रमोत्पादक होता है।

जिसके लिलाट में चन्द्र सूर्य नामक दो आवर्त हों और पास पास हो तो राज्य की वृद्धि कराने वाला होता है।

जिसके वांये कपोलपर एक आवर्त होता है वह घोडा यम कहता है यह अपने मालिक का नाश चाहता है।

जिसके दक्षिण कपोल पर एक आवर्त होता है. उसे शिव कहते हैं यह सुखकारक और अपने मालिक को शुभ होता है।

जिस घोडे के कान के मूलमें और कानके मध्यमें एक एक आवर्त होता है उसे बिजय कहते हैं. यह संग्राम में विजय सूचक होता है।

जिसके स्कंध प्रदेश में एक कमलाकार आवर्त होता है वह पद्म संज्ञक स्वामी को शुभकारक होता है।

जिसकी नासिका के मध्य भागमें एक अथवा तीन आवर्त हों उस घोडे को चक्रवर्ती कहते है यह घोडा राजाओं के योग्य होता है।

जिसके कंठ भाग में एक बडा भारी आवर्त दिखाई देता हो वह चिन्तामणि नाम घोडा बडा शुभ होता है।

जिसके तालुपर दो आवर्त होते हैं उसका नाम शुक्ल है यह घोडा शुभ होता है।

जिस घोडे की कुक्षिपर एक आवर्त होता है वह शीघ्र ही मर जाता है और यदि एकही स्थान पर ऐसे दो घोडे होंतो मालिक को भी भारी होते हैं।

जिस घोडे के जानुपर एक आवर्त होता है उसका मालिक क्लेशयुक्त होकर सदा प्रदेश में वास करता है

जिसके मेढ्के नीचे आवर्त होता है वह अशुभ है।

जिसकी त्रिवली में आवर्त होता है वह उत्तम होता है और उसे श्रीपार्श्व कहते हैं।

अशुभ घोडों के लक्षण–जिस घोडेकी जिव्हा काली होता है, वह कृष्णजिव्हा कहलाता है, जिसके तालुमें काला रंग होता है वह कृष्णतालु, जिसके दांत छोटे बडे, ऊँचे नीचे होते हैं वह कराली, जिसका संपूर्ण देह एक पांव दूसरे रंगका वह मुशली कहाता है, जिसके छेदन दंत चार या पांच हों वह हीन दन्त, और जिसके सात वा आठ दंत हों वह अधिक दन्त कहाता है जिसके कानके पास आवर्त होता है वह शृंगी है, ये छः प्रकार के घोडे अपने स्वामी का अनिष्ट चाहते हैं॥

जिसका एक अंडकोष वढ गया हो वह एकाण्ड कहाता है, जिसके दोनों अंड बडे हैं। वह जातकांड, जिसका कोई अंग हीन हो वह हीनाङ्ग जिसका कोई अंग अत्यंत वढ गया हो वह अधिकांग कहाता है ये चारों प्रकारके घोडे अशुभ समझे जाते हैं॥

जिसका सब देह एक रंग का और सिर काले रंग का होता है

वह त्रीसरी कहाता है जिसके अंडकोपके दोनों ओरदो थन होतेहैं वह स्तनी वा स्थली कहलाताहै जिसका एक पांव श्वेतवर्ण और शेप तीनों पांव किसी और रंगके होतेहैं वह आर्जिल कहलाताहैं।

जिसके पांव और गामचीमें भिन्न भिन्न रंगकी रेखा होती है उसे मार्जारपाद कहतेहैं जिसकी एक आंखकी पुतली काली और दूसरी आंखकी पुतली पिंगल अर्थात् नीलवर्ण होतीहैं उसे ताली कहते हैं। ये सब घोडे भी अशुभ समझे जाते हैं।

इनके सिवाय घंटी, वदनी और कांचाली आदि घोडे भी अशुभ होते हैं।

जो घोडा चलने में दुम घुमाता है, वा मारने से पीछे को हटता है वा दो पैर उठाकर कूदने वा पिछली दुलत्तिया झाडताहै उत्तम नहीं समझा जाता है।

जिस घोडेके खुर सफेद होतेहैं वह अच्छा नहीं होता क्योंकि सफेद खुर नरम होता है।

शुभ घोडोंके लक्षण—जो घोडा अगले पांवसे पृथ्वीको खोदता है, चलने में अपने स्वामी के मनोनुकूल चलता है, न कभी अड़ता है, न पीछे को हटता है, वही घोड़ा उत्तम समझा जाता है।

अश्वशाला—अश्वशाला को घुडसाल भी कहते हैं, घुडशाल चौडे मैदानों में बनवाना चाहिये जहां किसी प्रकार की शरदी न रहती हो और भूमिभी बहुत रेतीली वा ककरीली नहो,हवा और धूप बे रोक टोक आतीहो। घोडे रखनेके मकान ऐसे होने चाहिये जो बडे बडे एकही पंक्तिमें हो और उनमें चारों ओर

बहुतसी खिडकियां भी हों जिनमें होकर हवा वार पार निकल जाती हो। हरएक घोडेके लिये उसमें कोठरियां भी जुदी २ होवें जिनमें घोडों के दोनों ओर दीवारें कुछ ऊँची होनी चाहिये और ऊपरसे खुलारहे तो कोई हरकत नहीं। हरएक कमरेमें कोयलों की एक टोकरी लटका देनी चाहिये और ये कोयले हर पन्द्रवें दिन वदल देने चाहिये। पेशाव निकल जानेके लिये मोरियोंका प्रवन्ध अच्छा रहना चाहिये जिससे मकानमें दुर्गन्ध न वढे लीद को उसी दम हटवाते रहें। मकानकी गच घोडेकी छातीकी ओर कुछ ऊँची और पीछे को ढालू होना चाहिये. यदि मकान मैला न होगा तो मच्छर मक्खियां उसे अधिक दुःख न देंगी इस मकान की दीवारें छटे महिने चूने से पुतवा देना उचित है।

जिन घोडोंको किसी प्रकारका रोग होजाय उसको स्वस्थ घोड़ों से अलग करदिया जावे। जिससे वह शेष जानवरोंमें न फैलनेपावे सायंकाल के समय घोडे के नीचे सूखी घास का विस्तर वना देवे पृथ्वीपर घासकी तह आठ दस अंगुलकी होवे जिससे कड़ी पृथ्वी उसमें गढने न पावे और घासमें भी कोई कठोर वस्तु नहो जिससे घोडे को कष्ट हो, यह घास दिन निकलते ही उठा देनी चाहिये और रातमें जितनी घास लीद और पेशावसे खराव हो गई हो उसको सर्वथा दूरकर देवे पीछे उसमें उतनीही नई घास मिलाकर विस्तर वनादेवे। जाडेकी ऋतुमें ठंडसे वचानेके लिये खिड़कियों पर परदे लटका देने चाहिये जिससे ठण्डी हवा भातर न घुसने पावे और घोडेकी पीठपर कंवल वा और कोई गरम कपड़ा डाल देवे जिससे ठण्ड न लगे। वर्षाऋतुमें रक्षाकी

अधिक आवश्यकता है मलमूत्र और सडी घासको बहुत दूर फिकवाना चाहिये क्योंकि सडाएटके कारण मच्छर मक्खी इकट्ठे होकर पशुको बडा कष्ट पहुंचाते हैं उनको दूर रखने के लिये कोई पतला कपडा घोडे पर डाल देना चाहिये।

खाने पीनेका वर्णन—सबसे उत्तम खानेकी वस्तु घोडे के लिये सूखी दूब है. इससे किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुंचती और यह हर समय देनेके योग्य है, घोडा इससे बहुत प्रसन्न रहता है दूबको लाकर धोडालनी चाहिये और फिर सुखाकर घोडे को खिलावे। घोडेके पेटमें इतनी अधिक जगह नहीं होती है कि वह एक दमसे इतनी घास खाले जो बहुत देरतक काम देसके इस लिये थोडी थोडी देरके पीछे थोडी थोडी घास देनी चाहिये, इससे अधिक लाभ होगा, अजीर्ण आदि उदर रोग न होने पावेंगे। कभी २ थोडी गाजर खिला देनेसे घोडे को अत्यन्त लाभ होगा। परन्तु बहुत गाजर खिलाना हानि कारक है इससे पेट फूलने का डर रहता है।

घोडेकी शारीरिक शक्ति बढाने के लिये दिनमें दो बार दाना देना चाहिये. दानेके लिये चना सबके उत्तम वस्तु है, वेदला वा दला हुआ चना कुछ देर भिगोकर तोवडे में भरकर घोडेके मुखसे बांध दिया जाता है इस दाने के साथ कभी थोडासा नमक भी मिलाकर दिया जाताहै। प्राचीन कालमें घोडोंके बांधने के स्थान में सैन्धव नमकके बडे बडे ढेले रक्खे जाते थे. जिन्हें घोडा जब चाहता था चाट लिया करता था।

पीनेके लिये निर्मल पानी देना चाहिये. वर्षाऋतुमें नदीका पा

नी पिलाना ठीक नहीं है, ऐसे तालाव और पोखरों का पानी भी न पिलाना चाहिये. जिनमें धोबी कपडे धोते हों या गन्दा पानी उनमें जाता हो, घोडेके बीमार होजाने का डर रहता है। कुएका पानी वर्तनमें भरकर दिनमें दो तीनवार पिलाता रहे। पानी पिलाकर थोडी देरतक इधर उधर टहलाना बहुत आवश्यकीय बात है।

दिनमें दोनों समय थोडी २ देर तक खुले मैदान में टहलाना चाहिये. बिलकुल छाया और ठंडकमें बँधे रहने से भी घोडे को हानि पहुंचती है इसमें सर्दी होनेका डर रहता है इस लिये थोडी देर धूपमें रखना भी गुणदायक होता है।

स्नानादि विधि—जब घोड़ा परिश्रम करके आता है तब उसके देहमें पसीने आजाते हैं और धूल उडकर उसकी देहमें जम जाती है, जिससे मैला होजाता है इस लिये उस धूलको साफ करना बहुत आवश्यकीय है इस लिये दोनों समय खुरहरे से साफ करना चाहिये। खुरहरा करनेसे पहिले लगाम चढाकर गलेको कुछ खींच देना चाहिये। जो घोडा वदमाशहो और सहजमें खुरहरा न कराता हो तो लगामको तानकर दुमसे बांध देना चाहिये जिससे वह मुंहको इधर उधर न फेरसकै। प्रथमही घोडेके गले को खुरहरेसे साफ करें फिर और और अंगोंको साफ करे और थोडी थोडी देरमें खुरहरेकी धूल भी बुर्शसे साफ करता रहे क्योंकि खुरहरेको न झाडने से और २ अङ्गोंमें धूलभर जायगी और खुरहरेसे साफ करदी जाय तब उसपर बुर्श फेर देना चाहिये। इसके पीछे एक साफ कपडे से शरीरको पोंछ देना चाहिये इसी

तरह ख्याल और दुमके बालों को भी कंघी से साफ कर देना उचित है।

प्रत्येक साल में दोबार कार्तिक और फाल्गुन के महीनों में घोडे के पुराने रोम गिर जाते हैं और उनके बदले में नये आते हैं इस लिये उस समय खुरहरा न करना चाहिये।

गर्मी की ऋतुमें बहती हुई स्वच्छ नदी में वा निर्मल तालाब में घोडे को स्नान कराकर सूखे कपडे से पोंछ देना चाहिये, परन्तु इस काम को प्रति दिन नहीं करना चाहिये।

परिश्रम का वर्णन–जिस घोडे पर प्रतिदिन सवारी का काम न पडता हो तो एक ही स्थान में लगातार कई दिन तक बँधे रहने से वह बीमार होजाता है, परिश्रम करने की आदत कम होती है और फिर किसी दिन यकायक अधिक परिश्रम करने का काम पड़जाय तो भारी हानि की सम्भावना होती है; पैर फूल जाते हैं वा लँगडाने लगते हैं, फेंफडे में रोग होजाता है और कभी २ ज्वर भी हो आता है. इसलिये प्रतिदिन घण्टे दो घण्टे खुले मैदान में ले जाकर परिश्रम का काम लेना बहुत ही आवश्यकीय है। प्रतिदिन परिश्रम करते रहने से देह चुस्त और फुर्तीली बनी रहती है, प्रतिदिन शक्ति बढती चली जाती है; मिहनत करने से कभी जी नहीं चुराता है, और न व्याकुल होता है। घुडदौड और शिकार के घोडों से तो ऐसा परिश्रम कराना बहुत ही आवश्यकीय है। जिसको परिश्रम-करने की प्रकृति पड जाती है वह कभी कोई भारी काम आ पड़ने पर भी सहज में कर लेते हैं। जो प्रतिदिन ऐसा ही परिश्रम काम में लाया जाय तो बुढापे में भी

घोडा वैसाही परिश्रम करते रहतेहैं. मिहनतसे परिक्लान्त नहीं होते हैं।

परिश्रम आदि की रीति–घोडे पर सवारी करते ही उसे बहुत वेग से नहीं चलाना चाहिये, प्रथम ही धीरे धीरे चलावे फिर वेग से परन्तु रोकने के समय एक साथ रोक भी न लेना चाहिये, जैसे धीरे धीरे उसका वेग बढाया था वैसे ही धीरे धीरे उसका वेग कम करके रोकना चाहिये।

परिश्रम के पीछे उसी समय उसे घुडसाल में ले जाकर न बांध देना चाहिये, किन्तु स्वच्छ पानी से उसके मुख के फेन और अंड तथा उसके और पास के फेन धोकर इधर उधर टहलावे. जब पसीना सूख जाय तब घुडसाल में लेजाकर बांध दे और सुखी घास से उसका शरीर रिगड कर कपडे से पोंछ डाले ऐसा करने से उसकी सब थकावट दूर होजाती है तब उसकी पिछाडी बांध कर उसके सामने सूखी घास डाल देवे।

गर्भादि धारण विधि–घोडी सांड के अनुसार बच्चा देती है। कभी २ गर्भधारण के समय उत्तम जाति का घोडा उसके सन्मुख लाकर खडाकर देते हैं, इससे भी उत्तम बच्चा होने की संभावना होती है।

घोडी के ग्यारह महीने में बच्चा हुआ करता है और पैदा होते ही खुर से जानु तक जितनी ऊंचाई होती है, उससे तिगुनी ऊंचाई उस बच्चे की युवावस्था में होती है। जब बच्चा पैदा होता है तब उसके मुख के साह्मने कोई दांत नहीं होता है। परन्तु जावडे के दोनों किनारों पर दो २ पेषण दंत निकला करते हैं जिन में से एक को प्रथम पेषण

दन्त और दूसरे को द्वितीय पेषण दंत कहते हैं। जब बच्चा सात दिन का हो जाता है तब उसके प्रत्येक जाबढे में दो छेदन दंत निकल आते हैं। जो दांत पैदा होने ही साथ निकलते हैं उन्हें क्षार दंत कहते हैं। पांच सप्ताह के पीछे सामने की ओर दो छेदन दंत तथा एक पेषण दंत और निकल आता है तथा आठवें महीने में सामने की ओर दो छेदन दंत और निकल आतेहैं, इन सब दांतों का रङ्ग अत्यन्त सफेद होता है और इनके ऊपर एक काले रङ्ग का छोटा गढाभी होताहै।
जब बच्चा बारह महीने का हो जाता है तो चौथा पेषण दंत और दो वर्ष में पांचवां और कुछ दिन पीछे छटा दांत निकल आता है।

त्रिंशन्मासोद्भवास्सर्वे ह्यखण्डाः परिकीर्तिताः।
द्वौ स्यातां वाः त्रय स्स्यातामूर्ध्वाधस्तु यथाक्रमम्॥

ढाई वर्षकी अवस्थासे ऊपर दो तीन महीने निकल जाने पर बीचके दो छेदन दंत गिरकर उनकी जगह ऊपर नीचेके जावडों में क्रम से दो और तीन स्थायी दंत निकल आते हैं जिन्हें अखण्ड बोलते हैं, यह दांत भी सफेद गड्ढेदार होते हैं।

चतुर्भिर्वत्सरैर्दन्ताश्चत्वारः पतितोत्थिताः।
पञ्चभिर्बहुदन्तेषु जायन्ते त्वथकालिका॥

जब घोडा साडे तीन वर्ष से ऊपर और चार वर्ष के भीतर होता है तब उसके दो छेदन दंत और गिर कर दो बडे दांत ऊपर की ओर और निकल आते हैं और पांचवें वर्ष के अन्त तक शेष दो दांत निकल आते हैं इसी अवसर में नेश भी निकल आती हैं। जो नेश निकलती है तो हरएक

जावडे में बीस दांत, और न निकलने पर केवल अठारह दांत होते हैं।

षष्ठे संवत्सरे जाते कालिकादशनद्वये ।
तथा स्यात् सप्तमे वर्ष नाशो दंतचतुष्टये ॥

छटें वर्ष में बीचवाले दो अखण्ड दांतों का गढा भर जाता है और उनका कालापन भी जाता रहता है, और सातवें वर्ष में उनके पासवाले और दो दांतों का गढा भर जाता है उनका कालापन भी जाता रहता है।

अष्टमे वर्षेऽतीते तु नष्टाः स्युः सर्वकालिकाः ।
नवमेत्वथ ते सर्वे पीतत्वं सम्भवन्ति च ॥

आठवें वर्ष में शेष दो दांतोंका गढ़ा भर जाता है और उनका कालापन भी जाता रहता है और नवें वर्ष में उनमें पीलापन आने लगता है।

यावद्देकादशं वर्षं तावत् पीतत्वमागतम् ।
तिष्ठन्ति दशनास्तेषां वाजिनां ससिताभ्रमाः ॥

ग्यारहवें वर्ष तक पीलापन बढता रहता है, इसके पश्चात् उन में सफेदी की झलक मारने लगती है।

ततः श्वेताः प्रजायन्ते चतुर्दशसमाश्रिताः ।
ततः काचप्रभास्सम्यक् यावत् संवत्सरास्त्रयः ॥

तदन्तर चौदह वर्ष की अवस्था पर पहुँचने पर दांत फिर सफेद होजाते हैं, फिर सत्रह वर्ष की अवस्था तक कांच के तुल्य रहते हैं।

तावत्संवत्सरादूर्ध्वं यावद्वर्षाणि विंशतिः ।
माक्षिकाभा रदास्तेषां यावद्वर्षत्रयं पुनः ॥ १ण

फिर तीन वर्ष तक अर्थात् बीस वर्षकी अवस्थातक उन दांतों का रंग मक्षिकाके तुल्य होता चला जाता है ।

त्रयोविंशत्परा: पश्चात्सर्वे दूपलकास्स्मृता: ।
षड्विंशत्परतो दन्ता: स्थानाच्चलनमाप्नुयु: ।।

तेईस वर्षकी अवस्थातक उनका रंग शंखके तुल्य रहता है फिर छब्बीस वर्ष तक दूपलक रहते हैं इससे पीछे हिलने लगते हैं

यावद्वर्षत्रयम्पश्चात् पातम्वर्षत्रये पुन: ।
द्वात्रिंशद्वत्सरे प्राप्ते वाजी निर्याणमाप्नुयात् ।।

ये सब दांत बत्तीस वर्षकी अवस्थातक गिर पडते हैं और यही घोडे के जीवन कालकी परमावधि है ।

घोडेका प्रमाण ।

सप्तविंशत्प्रमाणेन मुखमश्वस्य शस्यते ।
कर्णौ षडंगुलौ प्रोक्तौ तालुकं चतुरंगुलम् ।।
चत्वारिंशच्च सप्ताढ्य: स्कंध: संपरिकीर्तित: ।
पृष्ठवंशश्चतुर्विंशस्सप्तविंशस्तथा कटि: ।।

घोडेके मुखकी लंबाई २७ अंगुल, कान ६ अंगुल, तालु ४ अंगुल, कंधा ४७ अंगुल, पीठ चौवीस अंगुल और कटिप्रदेश २७ अंगुल का होता है ।

अति सूक्ष्मं तथा निम्नं पुच्छं हस्तद्वयान्वितम् ।
लिंग हस्तप्रमाणन्तु तथाण्डौ चतुरंगुलौ ।।
मार्गस्थानं चतुर्विंशद् हृदयं षोडशात्मकम् ।
कटिकक्षान्तरं प्रोक्तं चत्वारिंशत्प्रमाणकम् ।।

में नेत्रात्यन्त महीन बालोंसे युक्त दो हाथ लंबी पूछ, गुलेन्द्री

एक हाथ लंबी, अंड चार अंगुल, गुदामार्ग २४ अँगुल, छाती १६ अंगुल कटि और कत्तका मध्यम प्रदेश ४० अंगुलका होताहै ।

इसी तरह फारसी ग्रन्थोंमें लिखा है कि घोडेकी गर्दन ४० अंगुल दुमसे सिरतक १६० अंगुल, ऊँचाई १०० अंगुल होती है, इस प्रमाणवाले घोडे अच्छे समझे जाते हैं जो इससे न्यूनाधिक होते हैं वे उत्तम नहीं होते ।

नापनेकी रीति–एक आदमी डोरका एक सिरा पकड कर कंधे पर लगादे और दूसरा आदमी इसे सुमतक लेजाय यही ऊंचाई होती है । लंबाई जाननेकी यह रीति है कि आंखके कोण से दुमकी जड तक नापा जाता है ।

उपयोगमें लानेका समय–जब तक घोडेका बच्चा चार वर्षका होता है तब तक उसकी अवस्था बालक समझना चाहिये, इस अवस्था में उससे किसी प्रकार का परिश्रम लेना उचित नहीं है, इस समय उनको कार्य में लगाने से उनकी युवा अवस्था में ही बुढापा आ जायगा और वे किसी काम के नहीं रहते हैं । परन्तु इस समय में भी उनको लगाम का अभ्यास कराता रहै पांच वर्ष से ऊपर यौवन काल आता है, तभी से उनको काम सिखलाने का यत्न करना चाहिये बीस वर्षकी अवस्था तक ये हर प्रकार के कठिन काम कर सकते हैं, बीस वर्ष से ऊपर वृद्धावस्था आ जाती है इस समय काम लिया जावे तो बहुत दिन तक काम दे सकते हैं ।

संस्कृत ग्रन्थसे ऋतुचर्यादि वर्णन ।

कूपोदकं सदा शस्तं पानाय जलदागमे ।
अभ्यंगे कटु तैलेन निर्वातस्थानबन्धनम् ॥

एकाहान्तरितं दद्याल्लवणं च विचक्षणः ।
पलद्वयप्रमाणेन मुखतापविशुद्धये ॥
वर्षोदकेन सिक्ताङ्गस्तेजसा त्यज्यते हयः ।
मुखरोगमवाप्नोति शालिहोत्रोऽब्रवीदिदम् ॥
अशुद्धोदकतो रोगान् प्राप्नोति शतशः परान् ।
वर्षोदकस्य पानेन बलहीनश्च जायते ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्रावट्काले उपस्थिते ।
अनेन विधिना प्राज्ञो वाजिनं परितोषयेत् ॥

वर्षा ऋतुमें कूएका जल, कडुवे तेलका लगाना निर्वात स्थान में बांधना, एक दिन बीच में छोड़कर चार तोले नमक देना, गुण कारक होता है, इससे मुखका ताप जाता रहता है । वर्षा का जल ऊपर पड जाने से घोडा तेज हीन होजाता है और उसके मुखका रोग भी उत्पन्न होता है । वर्षाका मैला जल पीने से और भी सैंकडों रोग तथा बलहीनता होती है, इस लिये यत्नपूर्वक वर्षा काल में पशुकी रक्षा करना उचित है ।

शरद ऋतुमें कर्तव्य विधि ।

ततश्शरदमासाद्य बहुखण्डसमन्वितम् ।
शस्तं क्षीरोदनं पानं पलाष्टपरिसंख्यया ॥
दुग्धं वा केवलं रात्रौ क्वथितं संप्रशस्यते ।
अथान्यदपि यत्किञ्चित् मधुरं सम्प्रदापयेत् ॥
पानाय सारसंतोयं यवसं सुमनोहरम् ।
नीलवर्णं मकुष्ठं च घृतं मांसेन संयुतम् ॥
वाहनं च प्रयत्नेन सुस्वल्पमपि जायते ।

एवं शरदि यःसम्यक् पुष्टिन्नयति वाजिनम् ॥

शरदृऋतुके आनेपर बहुतसी शक्कर डालकर ८ पल दूध चांवल खिलावे, अथवा रात्रिके समय औटाया हुआ केवल दूध देवे, अथवा औरभी कोई मधुर पदार्थ देवे, पीनेके लिये सरोवर का जल, खानेके लिये हरी दूब, मूंगका दाना अथवा घृतयुक्त मांस देवे । इस तरह शरद ऋतुमें घोडेकी परिचर्य्या करने से कैसा ही छोटा घोड़ा हो वह भी सवारी के योग्य हो जाता है ।

हेमन्त ऋतुमें घोडेकी परिचर्य्या ।

ततो हेमन्तमासाद्य निर्वाते निदधेद्धयम् ।
मासार्द्धं यवसं दद्यात् पानीयञ्च यथेच्छया ।
घृतं वा यदि तैलं वा पानं दद्याद्विचक्षणः ॥
वाहयेच्च शनैर्नित्यं सर्वदोषप्रशान्तये ।

हेमन्त ऋतुमें घोडेको निर्वातस्थान में बांधै । आधे महीने तक घासदे और यथेच्छ जलपान कराता रहै. घी वा तलभी कभी २ देता रहे और प्रति दिन उसपर सवारी करता रहै. जिससे सब दोष शान्त रहते हैं ।

ततः शिशिरमासाद्य दद्यात्तैलं हि वाजिनाम् ।
प्रमाणञ्च पलान्यष्टौ दिनानाञ्च त्रिसप्तकम् ॥
यवोत्थं यवसं दद्यात्पश्चाद्विंशद्दिनानि तु ।
यवाभावेऽथ चणकं दद्यादार्द्रतरं सदा ।
तदभावे मसूराश्च शुष्कार्द्रान् स्तैलसंयुतान् ॥

शिशिरऋतुमें २१ दिनतक घोडेको आठ पलतैल देता रहै फिर बीस दिनतक जौका भूसा देवे, जौ न मिलेंतो भीगे हुए चने देवै

चने भी न मिलें तो सूखी या भीगी हुई मसूर तेल मिला कर देवे ।

पर्वतानां यथामेरुरायुधानां च वज्रकम् ।
तथा सर्वोपचाराणां सत्ये श्रेष्ठतमा यवाः ।

जैसे पर्वतोंमें सुमेरु और शस्त्रों में वज्र सर्वोत्तम है इसी तरह घोडे के लिये जो सर्वोत्तम है ।

यश्चाश्नाति यवान् वाजी शुष्कांश्च स्वेच्छया सदा ॥
न तस्य जायते रोगः कदाचिदपि चान्यथा ॥

जो घोडा अपनी इच्छा के अनुसार सूखे जौ खाता रहता है, उसको कभी किसी प्रकार का रोग नहीं होने पाता है ॥

हमारे देशमें बहुत दिनों से मुसलमान बादशाहोंका राज्य रहा और उनके समयमें घोडों की परीक्षा आदि का काम भी इन्हीं लोगों के हाथमें रहा इससे अवश्य घोडेके नाम भेद, रंग, भोंरी आदिका वर्णन फारसी ग्रन्थों के अनुसार लिखते हैं ।

भोंरियों की पहचान ।

भोंरी आठ प्रकारकी होती है (१) पानीके भंवरसी, (२) कलीसी (३) खिले हुए फूल के सदृश, (४) मृगनाभिसी, (५)

गुलरसी; [६] सेवके समान [७] जूती के सदृश और [८] भोंरी ऐसी होती है जैसे गौके चाटने से बच्चे के बालों पर चिन्ह पड जाता है ।

भोंरियों का स्थान ।

घोडेकी देहपर दस जगह भोंरियां होती हैं, दो छाती पर, दो सिरपर, दो माथेपर, एक टीके पर, एक ओष्ठ के नीचे और दो

नाभि के पास जिस घोडे के यह दस भोंरी नहीं होती हैं वह उत्तम नहीं समझे जाते हैं ।

भोंरियों के नाम ।

टींके के पास वाली भोंरी को चकनी कहते हैं, यह भोंरियां यदि एक वा दो से अधिक होंतो सीकन कहते हैं । ईरानी वा मुगल लोग इसे खोश वा हेजचल कहते हैं । पञ्जाबी लोग दो गर और कोई कोई चुनक भी कहते हैं जुल्फ के नीचे की भोंरी एक, दो वा तीन हों तो उसे नसरत बीनी कहते हैं यवन लोग इसे अच्छा बताते हैं ।

आंसू ढाल की पहिचान—आंख के कोने के दाहिनी वा बाईं ओर हो अथवा कान के ऊपर नीचे होवे तो बुरी होती है ।

अरवल की पहिचान—कानों की जड में या ठुड्डीके दोनों ओर या सिर के ऊपर होवे तो सिर की भोंरी को छोडकर सबका नाम अर्वल है, जो दो २ भोंरी होवें तो अच्छी और जो एक एक हो तो बुरी होती है।

चांद सूरज की पहिचान—सिर के ऊपर की दो भोंरियों को चांद सूरज कहते हैं ये शुभ होती हैं ।

गंदा बागल की पहिचान—पिंडली, घुटने, गुह्येन्द्रिय और दुम इनमें से किसी जगह पर भोंरी हो तो अशुभ होती है, और इन भोंरियों का नाम गंदाबागल है ।

मारुत की पहिचान—घुटने के पीछे, अंडकोश के नीचे ऊपर नाभिके ऊपर नीचे, एक वा दोनों कंधोंके ऊपर, मुँहपर या ओष्ठ के नीचे जो भोंरियां होती हैं वह सब अशुभ होती हैं ।

सर्पिणी की पहिचान–केशों को जड़ में बालों के पास जो भौंरी होती है वह बुरी होती है।

खूंटीगाड़की पहिचान–किसी २ घोडे के हाथ पर भौंरी होती है, जो भौंरी का मुँह नीचे को होवे तो अच्छी समझो और पांव के नीचे की ओर बाहर वा भीतर की ओर होवे तो कोई उसे बुरा और कोई अच्छा बताते हैं।

खूंटी उखाड़ की पहिचान–जो भौंरी का मुख ऊपर की ओर होता है तो अशुभ होती है।

भुजबल की पहिचान–जिस घोडे की भुजा पर भौंरी होती है, वह बड़ा पराक्रमी होता है।

छत्र भङ्ग की पहिचान–जिस घोडे की पीठ पर अथवा जीन के नीचे भौंरी होतीहै उसे छत्रभंग कहते हैं यहभौंरी अशुभ होतीहै।

हरदावलकी पहिचान–छातीपर वा दोनों हाथोंके जोडपर जो भौंरी होती है उन्हें हरदावल कहते हैं ये बहुत बुरी होती है।

गामकी पहिचान–नाभिके सन्मुख जो पेटके ऊपर भौंरी होती है उसे गाम कहते हैं उसे कोई शुभ बताता है और कोई अशुभ, मरहटे लोग ऐसे घोडे को लेना नहीं चाहते हैं।

देवमन की पहिचान–जो भौंरी कंठमणि के निकट वा कुछ ऊपर नीचे भी हो तो यह बहुत शुभ होती है, इसके होने पर सहस्र दूषण भी कुछ नहीं कर सकते हैं।

गङ्गापाट की पहिचान–यह भौंरी पेट पर होती है. जो यह भौंरी तङ्ग के भीतर आजाय तो अच्छी होती है और तङ्ग से हटने पर बुरी समझी जाती है।

घोडे की गति--संस्कृत में घोडे की गति पांच प्रकार की लिखीहै यथाः--आस्कन्दित; धौरितक, वल्गित, प्लुत और रेचित

(१) आस्कन्दित गति--वह है जिसमें घोड़ा क्रोधित मनुष्य की तरह सिरको झुकायेहुए चारोंचरणोंसे दुरकी भरकरचलताहै ।

(२) धौरितक गति--इसके चार भेदहैं. यथा--धौरितक,धौर्य, धोरण और धोरित । नकुल की तरह चलने को धौरितक, कौवारी पक्षीकी तरह चलने को धौर्य, मोरकी तरह नृत्य करते हुए चलने को धोरण और वाराह के सदृश गति को धोरित कहते हैं । इसी में एक 'धाण' गति भी लिखी है जिसमें घोडा ऐसे वेग से दौड़ता है कि न कुछ सुन पड़ता न देख पड़ता है ।

(३) वल्गित गति- जो घोडा ऊंचा मुख करके और रीर दवा कर चलता है उसे वल्गित कहते हैं ।

(४) प्लुत गति--हरिणों की तरह चोकडी भरकर वा मेंढ़क की तरह चलने को प्लुत कहते हैं ।

(५) रेचित--जो समान भाव से चलता है अर्थात् न वेगसे न धीरे से उसकी गति को रेचित कहते हैं ।

फारसी ग्रन्थों के अनुसार ।

(१) रपट--उछलकर अत्यन्त वेगसे चलनेको रपट कहतेहैं ।

(२) छारतक--उछलकर धीरे से चलनेको छारतक कहतेहैं ।

(३) दुलकी--सब देहको हिलाकर चलना दुलकी कहलाताहै ।

(४) कूदना--अगले दो पैर उठाकर चलने को कूदना कहते हैं ।

(५) कदम--कदम चार प्रकार के होते हैं (१) सागम उस

गति को कहते हैं, जिसमें सवार के हाथ से पानी भरे हुए कटोरों में से बूंद भी न पड़े।

(२) गला उठाकर अगले पैरों को घुमाकर चलने का नाम इमगा है।

(३) गर्दन और सिर इतना उठाले कि सवार की पगड़ी भी दिखाई न दे।

(४) चारों पांव से एक ही बार उछल उछल कर कूदता चले उसे रहोवाल कहते हैं।

घोड़े के चार अङ्ग।

दीर्घाणि चत्वार्य्यथ चोन्नतानि चत्वारि रक्तान्यतिसूक्ष्मकानि। ह्रस्वानि चत्वार्य्यथ चायतानि भूयस्तु चत्वार्यथ निम्नकानि।

घोड़ेके अङ्ग प्रत्यंगोंमें चार दीर्घ, चार उन्नत, चार रक्त, चार सूक्ष्म, चार लघु, चार विस्तृत और चार निम्न ग्रहण किये गये हैं। यथाः—

आस्यं भुजौ केश कटी च दीर्घमेतच्चतुष्कन्तुरगस्य शस्तम्।
तथोन्नते घ्राणपुटे ललाटे शफश्च तज्ज्ञाश्चरणौ वदन्ति॥

मुख, भुजा, केश, और कटि ये चार दीर्घ अच्छे होते हैं। नासिका, मस्तक, खुर और चरण ये चार उन्नत अच्छे होते हैं।

ओष्ठौ च जिह्वात्वथ, तालुकञ्च मेऽढ्रं सुरक्तं शुभदं हयस्य।
लघूनि वन्धाश्चरणौ सुकोष्ठे श्रोत्राणि सर्वाणि तथैव पुच्छम्॥

ओष्ठ, जिह्वा, तालु, और पेढ़ू ये चार रक्त वर्णके अच्छे होतेहैं. इसी तरह बन्ध, कोष्ट, कान और पूछ छोटे अच्छे होते हैं।

करणान्तरौ कर्णसमन्विता च वंशी तथा ह्रस्वतरं प्रशस्तम्।

वक्त्रं मुखं कन्धरजानुनी च पार्श्वं च सप्तः शुभदं प्रदिष्टम् ॥

कानोंका मध्यभाग, दोनों कान पीठ का बांसा ये ह्रस्व अच्छे होते हैं। मुख, कन्धा जानु और पार्श्व यह लंबे अच्छे होतेहैं।

कक्षान्तरं चोदरमध्यमं च निम्ना कटी तालुसजानुकानि।
वक्षश्शिफोरुजघनस्थलंच चतुष्कमेतत् पृथुलं प्रदिष्टम् ॥

कक्षाओंका मध्य भाग, उदर मध्य भाग, कटि और तालु ये चार निम्न शुभ हे। वक्षस्थल, शेफ, उरू, और जंघा ये चार पुष्ट अच्छे होने हैं।

घोडेके खेत–जिस २ स्थानोंमें घोडे पैदा होतेहैं वे उसी देशके नामसे प्रसिद्ध होतेहैं और उनके शारीरिक बल आदि भी उन्हीं देशों के अनुसार होते हैं।

सर्वोत्तम घोडे–अर्बी, खुरासानी, इराकी, यमनी, तुर्की, तातारी, खुतन अदन. चीनी, काबुली; काश्मीरी. काठियावाडी, से।टिया और रंगपुरी। इस देश में अर्वी घोडे बहुत कम आते हैं। क्योंकि यहां आने पर शीघ्र मर जातेहैं। यहां जो अर्बी घोडे आया करते हैं वे ईरानी और अर्वी दोनों नस्ल के मिले हुए आते हैं। बहुत से आदमी इन्हीं मिली हुई नस्ल के घोडों से अपने बच्चे पैदा कराते हैं वे भी अर्वी नस्लके कहलातेहैं। काबुली घोडेभी बहुत प्रसिद्ध हैं और बहुधा सौदागर लोग इन्हें बेचने को लाया करते हैं।

जो घोडे ईराक से आते हैं वे ऐराकी कहलाते हैं ये अपने डीलडाल और बल के लिये बहुत प्रसिद्ध होते हैं।

काठियावाड के घोडे बहुत अच्छे होते हैं इन्हें काठियावाडी कहते हैं, ये घोडे ग्यारह प्रकारके होते हैं; जैसे—बादरिया, माकिया, मांगलिया, ताजनियां, रेडिया, लखमियां, रेशमियां, केशरियां, हरनियां बोदलिया और मोटरिया ।

मारवाडी घोडे मारवाड से आते हैं ये चार प्रकारके होते हैं जैसेः—डहा, राजघडा, बालोवडा और तलवाडा ।

दक्षिणी घोडे—यह घोडे दक्षिणसे आतेहैं, ये मिली हुई नस्ल के होतेहैं अर्थात् अर्बी और काठियावाडी से मिलकर उत्पन्न होतेहैं इनमें से भीमरा; मकुन्दासी, कुन्दासी और नागपुरी बहुत अच्छे होते हैं ।

सिन्ध देशके घोडे सिन्धी कहलाते हैं ।

पंजाब के घोडे पंजाबी कहलाते हैं, परन्तु सिंधी और पंजाबी दोनों दोगले होते हैं, ये ईरानी और हिन्दुस्तानी घोडों से उत्पन्न होते हैं, यह भी चार प्रकार के हैं, जैसेः—धन्नी, घेप, सायद्भ और भटंडा ।

मालवी घोडे—यह घोडे मलवा देशमें होतेहैं, परन्तु वहां अनेक प्रकारके घोडे रहने से मिली हुई नस्लके होते हैं ।

टांगन घोडे—ये घोडे बहुत छोटे और सुन्दर होते हैं। छोटे होने ही के कारण इनको टांगन कहते हैं, येछः प्रकार के होते हैं यथाः—

(१) बर्म्मापेगु—यह प्रायः ब्रह्मासे आते हैं । (२) मनीपुरी ये मनीपुर के होते हैं । (३) भूटानी भुटानसे काफरी गुट आते हैं । यहांके घोड़ोंको भोटियाभी कहते हैं । (४) नेपाली टांगन

ये नैपालमें देवीपाटन से आते हैं (५) तुर्की टांगन–ये तुर्किस्थान से आते हैं (६) कुर्दी टांगन कुर्दिस्थान से आते है ।

इनके सिवाय और भी अनेक प्रकारके घोडे होते है, जो अपने देश भेद से भिन्न २ प्रकार के होते हैं ॥

इनके सिवाय और भी अनेक स्थानों के अनेक प्रकारके घोडे होतेहै उन सबका वर्णन करना इस जगह बन नहीं सकता है ।

रंगके अनुसार घोडोंके नाम–असली घोडे चार रंगके होते हैं (१) नुकरा, (२) मुश्की, (३) सुर्खा और (४) जर्दा ।

नुकरेके लक्षण–इस घोडेका रङ्ग चारों सुम्मोंतक सफेद मोती के समान चमकदार होता है ।

मुश्कीकी पहिचान–मुश्की घोडा काली कोयल से भी काला होताहै सुर्खाकी पहिचान-यह घोडा केशरके रंगके समान होता है

जर्दाकी पहिचान–अलसी सुवर्णके से रंगवाला अथवा मशाल की लौके समान चमकदार जर्दा कहलाता है । इन चारों के सिवाय घोडे और और रंगतके भी होतेहैं, वे सब इन्हीं चारों के अवान्तार भेद है जैसेः–

अबलक़, मंगल, एसंदर, फुलवारी, काठुआ, चाल, सन्दली, मगसी सरगा, चीनी, सुरंग, संजाब, गर्रा, चौधर, हरा गर्ग, महताब, कोरद, अजरई, सनवानी, मुर्गा; टपर, फिरोजी नीला, अरक़क़ पतंग, टपाक, घुरकुल्ला, मन्होर, खीरा, सब्जा, श्यामकर्ण, फाखताई, अचम्भा, अर्जन, सुनक, लक्खा; पचकल्याण; परियल, बाचक़, अबतक,सूहा, बादामी, कुम्मेत, इकरंग, तुर्ही,बिल्लौरी, **खुतंग, गर्गामरगा, बाघंबरी, बिल्ली, ये सब ५२ प्रकारके भेदहैं ।**

अबलक की रंगत–जैसे कुम्मेत कितने ही रंग का होता है उसी तरह अबलक के भी कितने ही भेद हैं। अबलक हिनाई, पीला, लाल, उजला और नीले रंगका होताहै। कुम्मेत तेलिया और लाखौरी रंगका होताहै। खंगका अर्थ सफेद है, एवं खंग घोडा कई प्रकार का होता है जैसेः–नुकरा, खंग, सब्ज रंग यूज खंग; सुर्ख खंग।

इन रंगोंके सिवाय और रंग के घोडे देखनेमें नहीं आतेहैं।

घोडे को लेते समय प्रथम ही उसकी चोटी और दुम की परीक्षा करनी चाहिये।

सर्गा आदि घोडों की परीक्षा।

(१) अकरा–इसका माथा सफेद होता है। (२) अदहम इसका रंग काला होता है। (३) मुजाहिल जिसके दाहिने हाथ पांव सफेद होते हैं। (४) अरसम इसका ऊपर का होठ सफेद होता है। (५) बोहताद। (६) अश्कर यह सिर से पैर तक लाल रंग का होता है। (७) कुम्मेत यह तेलिया. लाखौरी या छुहारे के रंग का होता है।

जिसकी देह का रंग बादामी, किशमिशी वा छुहारे का सा होवे और चोटी तथा दुमका रंग मैलाहो उसे कुल्ला कहतेहैं।

जिसकी देहपर सिंह की सी चित्तियां होती हैं, उसे बाघंबरी कहते हैं।

जिसकी देह का रंग बादामी तथा दुम घुटने और हाथ पांव काले हों वह समन्द होता है।

जिसकी सेली और कान कालेहों देहपर छोटी २ वा बडी २ पास पास वा अलग अलग धारियां हों उसे अबस कहते हैं

जिसके हाथ पांव, दोनों कान, माथा छाती और दुम सफेद होते हैं यह बहुत अच्छा होता है। जिसके अण्डकोश और गुह्येन्द्रिय पर बिंदियां होती हैं वह भी अच्छा होता है।

लड़ाई के योग्य घोड़े-जिन घोड़ों की हरिण की सी काली आंख, ओष्ठ और नथने पतले, मुर्गाबकी सी गर्दन, माथा नीचा, लम्बी जिह्वा; मोर का सा सिर और गर्दन, चञ्चल गति, गर्दन की जड़ सफेद छोटा सिर, चौड़ी छाती, मोटे चूतड़, मोती की लड़ी के से दांत चौड़ा मुख और नासिका, दोनों बाहु पुष्ट, झुकी हुई पीठ; मोटे खुर पतली गटीली दुम, दोनों कान और दुम के बाल नरम, तथा चमकीले खड़े और घने होते हैं, ऐसा घोड़ा लड़ाई में ले जाने के योग्य होता है।

बुरे घोड़े के लक्षण-फाख्ताई, दूधिया, काला; सौर, नीला; शिब्दूह, जर्द चोटीवाला; सञ्जाव कुरका, गर्दास (जिसके माथे से नाक तक एक सीधी लकीर तलवार के समान हो और सब देह पर सफेदी का चिन्ह भी न हो) शेर, गीदड़, भेड़िये की सी सूरतका चूहे वा हरिण की रंगत का, जिसके पेट पर सफेद बाल हों, चल अर्थात् जिसके देह पर दो दो सफेद बाल मिल कर फैले हों ये सब घोड़े अशुभ समझे जाते हैं।

शकील और माहरू के लक्षण-जिसके माथे पर एक सफेद लकीर नाक तक चली गई हो और वैसी लकीर हाथ पांवों में न हो उसे शकील कहते हैं। और जिसके माथे की चौड़ाई पर एक लकीर हो उसे माहरू कहते हैं ये दोनों शुभ समझे जाते हैं।

सितारा पेशानी के लक्षण–जिसके माथेपर सफेद बाल नख के समान अर्द्ध गोलाकार हों और जो अंगूठे से ढक जाते हों उसे सितारा पेशानी कहते हैं, यह घोडा अशुभ होता है। चाहे ऐसे घोडे के हाथ पांवों में सफेदी हो।

पटल के लक्षण-जिसके मस्तकपर नील कमल के समान चांद सूरज बने हों उसे पटल कहते हैं, यह घोडा शुभ होता है।

अकवर के लक्षण–जो घोडा पटल; सितारा पेशानी वा शकोलकी सूरतहोवें परन्तु साफ न हो और जैसे चन्द्रमा में झाई होती है वैसेहीसफेदी में कुछ रंगीन बाल लिपटे हुए, गोल वा छिटके हुए से होते हैं। इन लक्षणों से युक्त घोडे को अकवर कहते हैं। यह घोडा अशुभ होता है।

मुतलकुद्दीन के लक्षण–जिसके चारों हाथ पांव सफेद हों, जिसके दोनों हाथ सफेद हो, या दोनों पांव ही सफेद हों अथवा बांया हाथ सफेद हो, वा जिसके पांव के मोजे (नीचके भाग) सफेद हों। ये घोडे बहुत अच्छे होते हैं। इन घोडे के नाम मुतुलकुदोन, मुतलकुलयसार, और मुतलकुल रजलेन कहते हैं।

गुलदस्तके लक्षण–जिसका हाथ सफेद होता हैं उसे गुलदस्त कहते हैं यह बुरा नहीं समझा जाता है

चम्पदस्त की पहचान–इसका दाहिना हाथ घुटने तक सफेद होता है, यह बुरा हैं।

पद्म के लक्षण–जिनके हाथ पांवों की सफेदी में तिल होते हैं यहघोडा पद्म कहाता है। इस देश में इसे बुरा नहीं समझते

है परन्तु ईरानी मुगल इसे अशुभ समझते हैं।

अरजल के लक्षण–जिसके संपूर्ण देहका रंग एक प्रकार काहो और एक पांव दूसरे रंगका हो यह घोडा बुरा समझा जाता है इसे हिन्दी में यमदूत कहते हैं।

फूलका लक्षण–मुश्की, जर्दा, कल्ला, कुम्मैत कैसा ही हो उसके चार जामेके तंग के बाहर सफेदी के दागहों, अथवा एक या दोनों पुट्ठोंपर हों उसे फूल कहते है यह घोडा बुरा समझा जाता है।

कृष्ण तिलके लक्षण–रंग या तुकरे पर फुलवारी की तरह काले फूल हों, यूजपर सफेद या जर्द फूल है और जर्देपर गुलाब के सदृश फूल हों, तो अच्छे समझे जाते हैं और इनके सिवाय जो रङ्गत होती हो वह बुरी समझी जाती है।

शकल के लक्षण–जिसके भिन्न २ हाथ पांव सफेद हों जैसे दाहिने हाथ और बांया पांव सफेद हों अथवा बांया हाथ और दाहिना पांव सफेदहो वह शकल कहलाता है, यह घोडा बहुत ही बुरा समझा जाता है।

आंख के दोषों का वर्णन–आंख में कई रङ्ग हों, कञ्जई, सुलेमानी, पीली वा सुनहरी कितने ही रङ्ग को हो एक आंख एक रङ्ग की हो, दूसरे रङ्गकी दूसरी हो अथवा आंखें सुअर, बन्दर वा कबूतर की सी हो ऐसा घोड़ा बुरा समझा जाता है।

चुगर की पहिचान–जिस घोडे की आंखें आदमी की सी हों और कद छोटा हो वह घोडा अच्छा समझा जाता है।

ताफी की पहिचान–जिसकी एक आंख काली दूसरी सफेद

हो अर्थात् एक आंख आदमीकी सी हो दूसरी हरिणकी सी हो यह घोडा बहुत ही बुरा समझा जाता है ।

शाखदारकी पहिचान–जिसके सिर, कंधे, माथे जुल्फ या चोटीके नीचे आदमी की छोटी उंगली का सा चिह्न पाया जाय उसे शाखदार कहते हैं. यह बहुत अशुभ होता है ।

गोदारके लक्षण–जिस घोडेके कानकी जड में एक और कान सा होता है, उसे गोशदार कहते हैं यह भी बुरा होता है ।

थनीकी पहचान–जिस घोडेकी गुहेन्द्रीकी बाहर की त्वचापर छुआरे के समान दो थन लटकते हों उसे थनी कहते हैं । यह भी बुरा होता है ।

मनी के लक्षण–जो थन के से चिन्हों पर लटके हुए न हों वह मनी कहलाता है यह घोडा अच्छा कहाता है ।

एकांड के लक्षण–जिस घोडे के अंडकोष मुहरेदार हों अथवा एक ही हो यह बुरा होता है ।

अरुतावारकी पहचान–जिस घोडेके अंडपर कुछ सीवनकासा चिन्ह हो और थैली साफ हो उसे अरुतावार कहते हैं, यह घोडा अच्छा होता है ।

शुतरदंदान की पहचान–जिसके ऊंटके से बडे दांतहों, गिनती में न्यूनाधिक हों, एकके ऊपर एक चढ गयाहो, अथवा एकही दांत हो उसे उष्ट्रदंत कहते हैं, यह बुरा समझा जाता है ।

गजदंतकी पहचान–जिस घोडेका दांत हाथी वा सुअरकी तरह बाहर निकला हो वह अच्छा नहीं होता है ।

सगजुबानके लक्षण–जिसकी जिह्वा सर्प वा कुत्तेकी तरह लटकी हुई हो उसे भी बुरा समझते हैं ।

कालजिह्व के लक्षण-जिसके तालु वा जिह्वा काले हों और मुख पर कुछ ललाई न हो उसे कालजिह्व कहते हैं, मुश्की के सिवाय ऐसे सब घोडे बुरे समझे जाते हैं ।

गावकोहानकी पहचान-जिसके कँधे अथवा गर्दनके पीछेकी जगह बैल के समान ऊँची हो उसे गावकोहान कहते हैं, यहभी बुरा होता हो ।

गावसुम्माके लक्षण-जिसका खुर बैलके खुरके समान बीचमें फटा होवे उसे गावसुम्मा कहते हैं यह भी बुरा होता है ।

अखगरीके लक्षण-जिसके शरीरसे वा अगले पिछले धड़से पत्थरके समान चिनगरी छुटती हों और नीचे खरखराहट हो उसे अखगरी कहते हैं यह घोडा भी बुरा होता है ।

रोगोंका वर्णन-ताजी घोडेके दोनों पावोंके घुटनोंमें यह रोग होता है कि यह दोनों घुटने ऊँचे और चौडे होजाते हैं और भीतर से फूलकर ऊपरको उठ आते हैं इसे मोतडा कहते हैं ।

हड्डेके लक्षण-जिस जगहसे घुटना मुडता है वहां एककडी चपटी वा नोकीली हड्डी निकलती है इससे पांव की सब हड्डियां नष्ट होजाती हैं, इसे हड्डा कहते हैं ।

बीर हड्डीकी पहचान-एक मोटी हड्डी पैरकी एडी से निकलती है परन्तु यह शीघ्र ही अच्छी होजाती है ।

पुश्तकी पहचान-सुमके ऊपर जहां बालोंके चिन्ह होतेहैं वहां का गोश्त गामची के ऊपर फूल जाता है उसे पुश्त कहते हैं ।

चकाव की पहचान-जिसके दोनों हाथों की गामची के नीचे मांस फूल आता है उसे चकावल कहते हैं यह पांचों प्रकार के

रोग वाले घोडों के पांव सदा टूटे हुए रहते हैं।

कान्ताके लक्षण-गामचीकी चौडाईमें या ऊपर जिस घोडेके कौडियोंके चिन्ह दिखाई देते हों वह कान्ता कहलाता है, इसका रोग उपाय करने पर जल्दी जाता रहता है।

कफगिरी की पहंचान–जिसके तलुएका मांस खुर से बाहर निकल आता है उसे कफगीर कहते हैं यह रोग बुरा होता है।

वेजाकी पहँचान–जिसके पांवके मुट्ठे में आगे पीछे वा ऊपर नीचे अंडेके बराबर मांस फूल जाता है उसे वेजा कहते हैं।

फीलपाकी पहंचान–इस रोगमें घोडेका पांव हाथीके पांव के समान फूल जाता है, यह रोग बहुत बुरा होता है।

गज चर्मकी पहंचान–इस रोगमें घोडे की खाल हाथी की खाल के समान खुरदरी होजाती है।

शिकाफके लक्षण–जिसका सुम जगह जगहसे फट जाता है उसे शिकाफ कहते हैं।

चहरेके गुण दोषोंका वर्णन–जिस घोडेका माथा ऊंचा होता है वह अशुभ नहीं होता परन्तु बदशक्ल होता है।

परेशांगोशका वर्णन–जिसके कान लंबे होवें और दोनों ओर को गिरे हुए होते है वह अच्छे नहीं होते।

तरुता गर्दनके लक्षण–जिस घोडेकी गर्दन सीधी होती है और सिर झुकाकर नीचेको देखता चलता है, जिसके गर्दन तक की जगह बराबर हो ऐसा घोडा तरुतागर्दन कहलाता है यह अच्छा नहीं होता है।

जीनपुश्तकी पहंचान-जिसकी पीठ नीचेको झुकी होवे उसे

कच्छी कहते है यह घोडा बोझ लादनेके योग्य नहीं होता।

आहू शिकमकी पहंचान–इस घोडेका पेट पीठ से लगा रहता है कम खाता है इस लिये दुर्बल भी होता है यह घोडा शौकीन लोगों के लिये अच्छा है।

तवरगूंकी पहंचान–जिसका पुट्टा दुमतक झुका हुआ होता है वह तवरगं कहलाता है।

कुचलकी पहंचान–जो घुटने टकराकर चलता है और जिसके पिछले पांवों में घाव पड जाते हैं।

कुशादहरूकी पहंचान–दौडनेके समय चलने में जिसके पांव चौडे पडते हैं और डामा डौलसा मालूम होता है, उसे कोई अच्छा और कोई बुरा कहते हैं।

घोडे के पांच अवगुणोंका वर्णन।

जो घोडेमें नीचे लिखे हुए पांच अवगुण हों तौ कभी न लेना चाहिये और खरीदने वालेको उचित है कि वेचने वालेसे कहदे कि जो इन पांच अवगुणों मेंसे कोई होगा तौ एक सप्ताह पीछे फेरदेंगे, (१) कमरो वह कि जिसके ऊपर सवार होकर चले और वह रुक जाय यह अडियल घोडा बुरा होता है। (२) कमखुर–यह घोडा दुबला पतला होता है इसे चाहे जितना खिलाओ परन्तु यह मोटा नहीं होता और सूखी लीद किया करता है (३) कुहनालंग उसे कहते हैं कि दो चार मंजिल करनेके पीछे लंगडाने लगता है (४) सबकोर वह है जिसे रातमें कम दिखाई देता है वा किसी वस्तुको देखकर झिझकने लगता है इसकी यह परीक्षा है कि अन्धेरी रात में

एक सफेद चादर और चाँदनी रात में एक काला कम्बल उसके सामने डाले इसे देखकर जो वह न भिझके तो अच्छा समझे ।

(५) दन्दागीर वह घोड़ा है जो बिना छेडे ही काट खाता है उसमें यह स्वभाविक दोष होता है उपाय करने पर भी नहीं मिटता ।

जब घोडा खरीदना हो तो घुडशाल में अकेला जाना उचित है उसके मालिक को संग न लेजाय । क्योंकि घोडेवाला जहां तक बन सकेगा उसके दोष छिपाने का उद्योग करेगा घोडे को घुडशाल में से निकालते समय खरीदनेवाले को उचित है कि घोडे के पीछे रहे क्योंकि घोडेवाले बहुधा पीछे से कुछ ऐसा कर दिया करते हैं कि वह चलने में तीव्र मालूम हुआ करता है परन्तु वास्तव में निकम्मा होताहै जिस घोडेकी गर्दन पर बाल घने होतेहैं वह सुस्त हुआ करताहै और जिसकी गर्दन पर कम बाल हुआ करते हैं वह अच्छा हुआ करता है ।

आखता करने की रीति–जिस जगह घोडे को आखता करना हो वहां की पृथ्वी समान हो और मिट्टी भी नरम हो, जिससे कङ्कर पत्थर न चुभने पावें उस भूमि में घोडेको पटककर चारों टांगें बांधदे और पांच चार आदमी इसे दृढतासे पकडे रहें जिससे हिलने न पावे । फिर आखता करनेवाला अपने दाहिने हाथ में एक तेज उस्तरा लेकर बांये हाथ से अंडकोष को पकड़ कर बडी सावधानीसे चमडेको चीरकर अंडोंकोनि काललेवे और धीरे २ इस तरह खींचे कि नस सहित निकल आवे । इस समय जिस लोहेसे दागनाहो उसे पहिले ही से कोयलोंकी आगमें सु-

रख करके तैयार रक्खे । और नस के बाहर निकालते ही इस लोहे से दाग देवे जिससे रुधिर न बहने पावे । इसके पीछे कपडेको पानीमें भिगोकर उसी जगह पट्टीसे बांध देना चाहिये। तब घोडे को खोलकर इधर उधर टहला कर बांध दे और दो घण्टे पीछे फिर इधर उधर टहला कर बांध दे उस दिन पानी बिलकुल न पिलावे फिर कई दिनतक थोड़ा २ पानी पिलाता रहे, चार पांच दिन तक कपडे की गद्दी को (जो पट्टी बांधे जिसको) पानीसे तर रक्खे फिर कार्बोलिक तेल और मरहम से घाव के सुखाने का उपाय करे । आराम होजाने पर चार पांच महीने तक सवारी आदि किसी तरह के परिश्रम का काम न ले, फिर धीरे धीरे उसको मिहनत पर लगावे । जो इससे अण्डकोश के इधर उधर सूजन और कमर में दर्द मालूम हो तो तेल की मालिश करदे ।

दवा देने की विधि– प्रथम ही घोडे को इधर उधर टहलाकर अस्तबल में लाकर बांध दे और उसकी जिह्वा को हाथसे पकड़ कर बाहर निकाल कर मुख के एक ओर थामे रहे और दवा को हाथ से मुख के भीतर कर तालु के पास छोड़ देवे और हाथ को झटपट सावधानी से खींचकर जिव्हा को छोड देवे. इस तरह घोडा अपने आप दवा खालेगा जो दवा सूखी हो तो उसे बेसन व गेहूंके चून या सत्तू में गुड़के साथ मिलाकर गोले से बना बना कर खिला देवे । जो दवा पतली हो तो उसे नाल में भर कर पिलादे ।

रोगोंके लक्षण–जैसे मनुष्यके देहमें कफ, वात, पित्त इन तीनों

दोषोंके बिगडनेसे रोगोंकी उत्पत्ति होती है वैसेही इन्हीं तीन दोषोंमें गडबड होने से घोडों के रोग की उत्पत्ति होती है इन दोषों को फारसी में क्रमसे बलगम, बादी और सफरा कहते हैं। इन्हीं दोषों के अनुसार बादी बलगमी और सफरावी इन तीन प्रकृतियों के घोडे होते हैं।

वातप्रकृति घोडोंके लक्षण–बादीकी प्रकृतिवाले घोडेके देहमें खुश्की होती है, तरी नहीं रहती दाने चारे को मन मार कर खाता है; अच्छी तरह खाने की रुचि नहीं करता, कडवी वस्तुओं के खाने को उसकी इच्छा रहती है, बहुत उछलता कूदता है और देहपर रगें और नसें दिखलाई दिया करती हैं।

कफप्रकृति घोडेके लक्षण-कफकी प्रकृतिवाले घोडोंके रोम और बाल; नरम, चिकने और मुलायम होवे हैं, चलनेमें बडे तेज और चालाक होते हैं, परन्तु चारा दाना कम खाते हैं।

पित्तप्रकृति घोडोंके लक्षण-पित्तप्रकृतिवाले घोडे बडे तेजस्वी, शक्तिमान्, चलने में तीव्रवेगयुक्त, बिजलीके समान चंचल होते हैं, और चारा, दाना बडी प्रसन्नता से खाता है' यह घोडों में उत्तम होता है, बीमार भी कम पडता है और देहमें तरी भी अधिक होती है।

नाडीपरीक्षा–रुधिर की गति से भी घोडों के रोगी निरोगी होनेके लक्षण जाने जाते हैं। घोडेकी नाडी प्रायः नीचेके जाबडे में देखी जाती है, यह नाडी उस जगह मिलती है जहां नीचेके जाबडाकी दो हड्डियां नीचे ऊपरसे आकर एक कोणसा बनाती है और वहां एक मोटी बत्ती के समान नाडी दिखाई

देती है. स्वस्थावस्था में इसकी गति एक मिनट में ४० वार होती है. इससे न्यूनाधिक के होने पर इसकी स्वस्थता में अंतर समझा जाता है ।

मूत्रपरीक्षा—मूत्रकी रंगत सफेद हो तो सर्दी, पीली और गाढी हो तो वात कफकी अधिकता और लालहो तो गर्मीकी अधिकता जानी जाती है ।

नेत्रपरीक्षा—आंखका रंग देखने से भी घोडे की बीमारी की परीक्षा होती है। घोडेकी आंखका पलक उंगलीसे उठाकर देखे जो उसकी रंगत गुलाबी हो तो निरोगी समझना चाहिये सफेद हो तो कफकी अधिकता पीली हो तो बादीकी अधिकता और ललाई होवै तो गरमी की अधिकता समझनी चाहिये । जो ललाई में कालापन भी हो तो घोडे के बचने की आशा नहीं रहती है ।

मलपरीक्षा—जो घोडेके पतले दस्त आते हैं और दुर्गन्ध भी उठती हो तो पशुको अजीर्ण रोग समझना चाहिये और जो उपाय करने पर भी दस्त जारी रहे तो दस्तों की बीमारी समझी जाती है ।

आंखके रोग उनकी पहंचान और दवा ।

जिस घोडेकी आंखमें कोई झटका लग गयाहो जिससे पानी वहता हो और आंखकी रंगत नारंगीके समान होगई हो तो पहिले दिन सायंकालके समय मिटी के एक पात्र में त्रिफला को कूट करके भिगो देवे, दूसरे दिन प्रातःकाल उसे छानकर घोडे की आंखमें छीटा मारे इस तरह दो तीन दिन करने से आराम हो जायगा ।

जो चोट लगने से आंखमें ललाई आगई हो तो दो तीन दिन तक नमक और फिटकरीके पानीसे धो डाले।

अन्य दवा-समंदरफेन, पके हुए चावलों का माढ और शहत तीनोंको मिलाकर आंखमें अंजन की तरह लगावें।

आंखकी फूलीका इलाज-आंखकी फूलीके विषय में वे उपाय काममें लाने चाहिये जो गौके आंखके रोगमें लिखे गएहैं उनके सिवाय नीचे लिखे उपाय भी करे।

पहिली दवा-साठी चांवलको आकके दूधमें भिगोकर छायामें सुखाके फिर इन्हें मिट्टीके पात्रमें भर आगपर जलाले, जबराख होजाय तबनीचे लिखीदवा और मिलाले। सिरसके बीज दोतोले हरे कांचकी चूडी दस माशे, लाहौरी नमक दो तोला इन सब को बारीक पीस कपडछन कर फूली पर लगावे।

दूसरी दवा-फूली हुई फिटकरी और उसके बराबर ही सिंदूर मिलाकर पीसले। इसमें से पांच वा छः रत्ती प्रतिदिन दो बार आंख में फूली पर लगाता रहे।

तीसरी दवा-मनुष्यकामूत्र लेकर घोडेकी आंखपर छींटा मारे

चौथी दवा-सांभर नमक और बंगलापन पीसकर पानी में घोलकर मुँहमें भर २ कर घोडे की आंख पर दोतीन दिन तक कुल्ले करें।

पांचवीं दवा-सिंदूर और चीनी सुर्मे की तरह महीन पीसकर आंखों में लगावे।

छटी दवा-पत्थर का नमक शहद में मिलाकर आंखमें अंजन लगावे।

सातवीं दवा—पुरानी ईंट को सुरमे के समान बारीक पीसकर पानी में घोल बार २ छीटे देता रहे ।

आठवीं दवा—एक रोठेको पत्थर पर पीसकर आंख में आंजें ।

नवीं दवा—गेरू और तिगुना शोरा इन दोनोंको बारीक पीस कर नलीमें भर फूली पर फूंके ।

दसवीं दवा—आदमी की खोपडी का सुर्मा बनाकर तीन दिन लगावे ।

ग्यारहवी दवा—घोंघाका चूना, पीली फिटकिरी और कांचकी चूडी इन तीनों को समान भाग लेकर महीन पीस कर बुकनी बनाले और नलीमें भरकर आंख में फूंके ।

बारहवीं दवा—गेहूं की मैदा, सांभरनमक और कांच की चूडी इन तीनोंको पीसकर गोली बांधले और फिर पानी में रिगड कर आंख में लगावे ।

तेरहवीं दवा—मुर्गी वा कबूतरकी ताजी बीट आंखमें आंजे ।

चौदहवीं दवा—हाथी का नख महीन पीसकर सुर्मे की तरह आंख में आंजे ।

नाखून या जाले की दवा

यह रोग आंखके कोने में तीन फांक का पतला नोकदार निकलता है, इसका मांस बडा कडा होता है ।

पहिली दवा—मुर्गीके अंडेके छिलके की राख, उसी के समान गंधक और नीलाथोथा इन तीनोंको पीसकर आदमी के मूत्र में गोली बांधे और आदमी के पेशाबमें ही घिसकर लगावे ।

दूसरी दवा—आदमीके बालकी राख, संगवसरेका पत्थर जिसे

मक दलई कहते हैं और समुद्रफेन इन तीनों को घिसकर ग्वारपाठे के रस में पीस कर दो सप्ताह तक लगावे ।

तीसरी दवा—कालीमिरच बीजबन्द, भांग, सुहागा, सेंधानमक फिटकरी फूली हुई, और गूगल इनको बराबर लेकर कड़वे तेल में मिलाकर अञ्जन लगावे ।

मूजा और लकलककी दवा—यह रोग आंख, अंडकोश वा होंठ में हुआ करता है, इसमें सूत का सा तार निकला करता है, फिर आंख भी जाती रहती है, इसका काट डालना भी अच्छा होता है ।

दवा—मेंढक को कुल्हडे में बन्द कर बहुत प्रचंड आगमें देदे जब जल कर राख होजाय तब उसमें तेल मिलाकर दोनों समय लगावे ।

नकोरी की दवा—रेशमी कपडे को पानी में आठवार भिगो-भिगोकर सुखावे फिर शराब में भिगो बत्ती बना पावभर तेल के दीपक में जलावे ऊपर से तांबे का बर्तन ढाक दे जब तेल जल जाय तब काजल निकाल शहदमें मिला आंखोंमें लगावे ।

दूसरी दवा—सफेद मूसली को सिरके में घिसकर लगावे ।

नाक से रुधिर बन्द करनेका उपाय ।

जिस घोडे की नाक से रुधिर बहता हो उसकी नाक में हिरन या भैंस के सींग की राख नली में भर कर फूँक देवे ।

दूसरी दवा—आदमी का मूत्र छः ड्राम और इतना ही तिल का तेल दोनों को मिलाकर नली में भरकर फूंके ।

तीसरी दवा—गौ का ताजी घी सिर पर मले और सीने के किनारे फस्द भी खोले ।

चौथी दवा—काले गधे की लीद और केले की जड़ इन दोनों का अर्क निकाल घोडे को लिटाकर पैसे पैसे भर दोनों नथनों में डाल दे ।

दांतों की खटाई और जीभके सूखेपन का उपाय ।

जो घोड़ा दाना घास खाने को चाहे पर खा न सके तो उसके दांतों में खटाई अथवा सूखापन होता है इसमें कनेर की छाल पीस कर शहद में मिलाकर नीबू के बराबर गोली बना चार दिन तक खिलावे ।

नासिका के कीड़ों का उपाय—कभी नाक से कीडे झड़ते हैं और दुर्गन्धित रुधिर निकला करता है । इसमें वच, त्रिकुटा, त्रिफला इनको पीस कर इतने ही गुड़ में मिला घी में सानकर खिलाना चाहिये ।

पानी में फिनाल मिलाकर पिचकारी द्वारा नाक भीतर से धुलवानी चाहिये ।

रुधिरका वमन का उपाय—जो घोड़ा रुधिरकी वमन करताहो उसके लिये जामनकी छाल छाया में सुखा तीन अंडेकी सफेदी मिला एक गोली प्रतिदिन प्रातःकाल सात दिनतक खानेको दे ।

दूसरी दवा—शातरा, दरड, आंवला इन तीनों को बराबर ले पाव पावभर दोनों समय दाना देनेसे घण्टेभर पहिले दिया करे, पानी ठीक समय पर पिलावे इस रोगको सरसंचूलाभी कहतेहैं ।

सिर के रोग का लक्षण—जब घोडे के सिर में वात पित्त वा कफ से दर्द होता है तो उसकी कान्ति मन्द पड जाती है, चारा दाना खाना छोड़ देता है, आंखो से पानी और मुख से लार बहने लगती है ।

सिरके रोगका उपाय-शातरा, सोंठ काली मिरच, पीपल इन सबको समान भागले पीसकर शराब में मिला सवेरे के समय खिलावे।

दूसरी दवा-नौसादर एक भाग, केशर चार भाग इन दोनों को मिला माजूम बना सात दिन तक खिलावे।

मुख रोगका लक्षण और दवा-इस रोगमें कफके साथ दुर्गन्ध निकलती है, मुखकी रंगतकाली पड जाती है, दाने दाने से निकल आते हैं और लगाम को नहीं चबा सकता है।

इस रोग में तालूकी फस्द खोलना अच्छा है।

दूसरा उपाय-सोंठ और पीपलको कूटकर चार सेर पानी में औटावे जब आध सेर रह जाय तब पिलादे।

मुखमें कांटोंका इलाज-इस रोगमें मुखके भीतर ऊपर नीचे कांटे पड जाते हैं।

पहिली दवा-कलमी शोरा, सेंधानमक, समंदर फेन, रसौत इन चारोंको समान भागले धायके फूलके रसमें मिला घोडे के मुख में तीन दिन तक मलै।

दूसरी दवा-धायके फूल, जड, पत्ती और छाल सब दो सेर पानी में उबालकर घोडेके मुखमें गरम छिडके।

तीसरा उपाय-किसी चमारसे उसके कांटे कटवा डाले फिर आंबाहलदी, कालाजीरा, और काली मिरच बराबर पीसकर दिनमें दस बार मले।

लवकामकी दवा-यह रोग दांतकी जडसे मिलकर होठ में होता है। इसको नश्तरसे चीरकर मवाद निकाल डाले फिर इसमें हलदी और नमक पीसकर भरदे।

दूसरी दवा—अदरख, पान, काली मिरच, ये तीनों चारा दाना खाने से पहिले प्रातःकाल तीन दिन तक देवें ।

काग या तालूका इलाज ।

यह सूजन दांतसे मिलकर तालू तक होती है । इसको दाग कर हलदी और नमक मले और लवकासकी दवा पिलावे ।

खांसी जुकाम—इस रोगमें घोडेको बडा कष्ट होता है, जब यह रोग बढ जाता है तो घोडे का मृत्युका कारण भी होजाता है, जब घोडा परिश्रम करके आता हो और पसीने निकल रहे हों; अथवा कुसमय पानी पिलाने से अथवा सर्दी लग जाने से यह रोग उत्पन्न होजाया करता है । इसमें घोडे खांसने लगते हैं, परन्तु इसमें पहिले उसकी नाक टपकने लगती है । खांसी उत्पन्न होते ही इलाज करना उचित है क्योंकि जुकाम के बिगडने से बडे बडे उपद्रव खडे होजाते हैं ।

पहिली दवा अदरख के एक छोटे से टुकडे में एक वा दो चनेके बराबर हींग भरकर उसे अग्निमें भूनना चाहिये फिर उसे मलकर रखले और जौके आटेको माडकर छोटी गेंदके बराबर उसकी गोलीसी बनाकर उसके बीचमें उस अदरखको रखदे, यह गोली सायंकाल के समय दाना देनेके पीछे चार दिन तक देनी चाहिये ।

दूसरी दवा—चनेके बराबर हींग लेकर पानी में गाढी गाढी घोलले उसे कागजपर लपेटले उस कागजको एक टाटके टुकडे में लपेटकर बत्तीसी बनाकर एक ओर उसमें आग लगादे और दूसरा सिरा नाकमें लगादे जिससे उसका धुंआं जल्दी

जल्दी नाक में घुसे ऐसा करने से दूसरे नथने में होकर कफ निकल जायगा तीन चार दिन तक ऐसा करने से घोडा को आराम होजाता है।

तीसरा उपाय-संभालू के पत्तों का रस निचोड कर तीन तीन चार चार बूंद दोनों नथनों में टपकाकर उन छिद्रोंको रुईसे बंद कर देवे फिर चार पांच मिनट पीछे रुई को निकाल लेवे तो कफ गिरना आरम्भ होजायगा, इसी तरह पांच चार दिन तक दिन में दो दो तीन तीन बार करने से पशु को आराम हो-जाता है।

चौथा उपाय-बडे घोडे को एक बादाम को मिंगी और छोटे को आधी मिंगी दो तीन दिन तक दिनमें दोतीन बार देवै।

पांचवा उपाय-प्याज आध सेर, घृत पावभर और बकरे का सिर इन तीनोंको कूटकर ढाई सेर पानी के साथ आगपर चढादे नीचे मंदी मंदी आग देता रहे, जब बारह घंटे होजांय और आधसेर जल रह जाय तब इसमें थोडासा नमक अंदाजसे डाल देवे, और दाना खिलाने के पीछे इस जलसे बेसन के आटे को मांडकर रोटी बना खिला देवै परन्तु उस दिन पानी न पिलावे फिर दूसरे दिन घास और दाना खिलाकर पानी पिलाना चाहिए यह औषधि अत्यन्त बलहीन घोडेको बहुत लाभकारी है।

छठा उपाय-रोग की दशा में घोडे को पानी पिलाने के पीछे एक प्याज खिला देनी चाहिए, पीछे बांस की थोडी सी हरी पत्तियां खाने को देवे।

सातवां उपाय–मकड़टैया जड, फल, फूल, पत्ते समेत आग जलाके उसमें से दो छटांक लेकर जौ के आटे में मिला गोली बना दोनों समय चार पांच दिन तक देवे।

आठवां उपाय–सेर भर अजवायन को आदमी के मूत्र में तीन दिनतक भिगोवे फिर सायंकालके समय दाना देनेके पीछे इसमें से जौके आटे में एक पैसे भर मिला गोला सा बना चार पांच दिन तक खिलाना चाहिये।

जुकाममें नाक टपकनेकी दवा–रोगी घोडेको दाना देनेके पीछे दो दिन तक भुनी हुई अदरख जौके आटेमें मिलाकर देवे फिर दो दिन तक दाना देने के पीछे एक छुआरा देवें।

दूसरा उपाय–जो जुकाम के कारण आंखें पीली पड गई हों तो दस बारह दिनतक पावभर मेथी दाना और पैसे भर कालीमिरच को पीसकर दोनों को मिला कर देता रहे।

तीसरा उपाय–हींग छः रत्ती, सोंठ ४ माशे इन दोनों को पीस जौ के आटे में मिला दाना देने के पीछे चार पांच दिन तक देता रहे।

कुरकुरी का वर्णन–यूनानी शालहोत्र वालों ने इस रोग को सात प्रकार का लिखा है और डाक्टर लोग इसे केवल दोही प्रकार का बताते हैं [१] मूत्र बन्द होने से [२] दस्त बन्द होनेसे यह रोग बहुधा खाने पीने की समता विषमता से हुआ करता है। इसमें घोडेके मुखसे पानी टपका करता है, और पसीना अधिक निकलता है, न वह लेट सकता है न बैठता है और कभी २ चारों पैरों को फैलाकर लेटता है, उसके पेट में बहुत पीडा मालूम होती है।

पहिली कुरकुरी मूत्र बन्द होनेसे-इसमें घोड़ा बारबार तनता है और मूत्रेन्द्रिय को कभी बाहर और कभी भीतर करताहै। इसमें लाल मिरच पीसकर मूत्रमें लपेट बत्तीसी बना मूत्रमार्ग में प्रवेश करे और जो घोड़ी हो तो केवल पिसी हुई मिरच वा एक बतासा उसकी योनिमें रखनेसे शीघ्रही पेशाब करेगी। जो इससे पेशाब न उतरे तो थोड़ा सा कतीरा खिलादे।

दूसरा उपाय-छटाकभर शोरा पानीमें घोलकर पिलादे अथवा शोरे के पानी से कपडा भिगोकर मूत्रमार्ग में रखदे।

अन्य उपाय-बेर की पत्ती पीसकर उसकी लुगदी मूत्रद्वार में रखदे. अथवा नासिकाद्वारा खालिस सरसों का तेल पिलावे अ-थवा उसके सिर में से दो चार जूंए निकाल कर उसके कानमें डालदे, अथवा राईको पानीमें पीसकर उसके अण्डकोषोंपर मले। अथवा एक सेर पानीमें थोड़ीसी इमली पीसकर पिलादे, अथ-वा खीरा वा ककड़ीके बीज समान भाग लेकर पानीमें पीसकर पिलादे. अथवा लोटेमें पानी भरकर घोडोकी योनिके पास टोंटी द्वारा धीरे २ पृथ्वीपर गिरावे और मुख से सीटी बजाता रहे।

दूसरी कुरकुरी-इसमें घोडेका मूत्र और लीद दोनों बन्द हो जाते हैं, बारबार पृथ्वी पर लेटता है और बगलोंकी ओर झांक ता है पेट में दर्द होता है।

पहली दवा-सोंठ और काजल समान भाग लेकर गोमूत्र में रिगडकर बत्ती बनाले और इसको घोडे वा घोडी के मूत्रस्थान में रख देवे।

दूसरी दवा-सेंधा नमक, पीपल, नीम की छाल; नागरमोथा

सिरसों इन सबको तेलमें पीसकर नलीद्वारा गुदामें भर देवे ।

तीसरी दवा–मुर्गीके दो अंडे जौके आटेमें मिलाकर खिलावे इसी तरह दो दो घंटे पीछे दो दो अंडे देवे ।

चौथी दवा–कंजेका गूदा पैसेभर भुना हुआ, कालानमक पैसे भर सफेद जीरा पैसे भर इन सबको पीसकर देवे, सूखा तँबाखू और कंजे का गूदा चने के चून में मिलाकर देवे ।

पांचवीं दवा–सोंठ दो माशे, गुड़ चार माशे, हींग चार माशे तीनोंको कूटकर गोला बनाकर खिलावे ।

छठा उपाय–हाथीकी लीद और पीपल की छाल दोनों छःसेर पानी में चढादे जब तीनसेर रहजाय तब छानकर पिलादे ।

सातवां उपाय–कालाजीरा, काली मिरच, भुना हुआ सुहागा सज्जी, कुटई, राई, हींग, और अजवायन इन सबको बराबर २ लेकर कूटडाले और अदरख के रस में छटांक २ भर की गोली बनावे । इनमें से एक एक गोली जब तक दस्त न आवे तब तक देता रहे ।

दस्त बन्द होजानेमें नीचे लिखे हुए जुलाब देने चाहिएः—

पहिला जुलाब–गुड तीन छटांक हींग दस रत्ती; सोंफ एक छटांक अजवायन आधी छटांक सुहागा आधी छटांक, नमक एक छटांक इन सबको मिलाकर तीन गोलियां बना लेवे और जबतक दस्त न हो तबतक घंटे २ भर में एक गोली देता रहे

दूसरा जुलाब–पाव भर अलसी का तेल वा सरसों का तेल पिलाकर कुछ देर तक टहलानेसे दस्त होने पर आराम होजायगा । जो बहुत जल्द दस्त कराने की आवश्यकता समझी जाय तो उसी तेलमें जमालगोटे के तेलकी दस बूंद मिला देवे ।

तीसरा जुलाब—आधसेर पानी में आधपाव तरकी तमाखू खूब कूटकर मसल डाले और छानकर पानी पिलादे, पिलाने के पीछे पसीना निकले वा न निकले गद्दी मार देवे जिससे घोडा बैठने न पावे। और शोरा का पानी मूत्र के स्थान पर लगाना उचित है।

चौथा जुलाब—पीपल, पीपला मूल, कसोंदी के वीज, कालीमिरच और सोंठ इन सबको समान भाग लेकर कूट कर कपडछन करले और इसमें से डेढ छटांक लेकर गौ के दूध में मिला कर पिलाना चाहिये।

तीसरी कुरकुरी—जब घोडा डाभ (दर्भा) खा लेता है तब वह उसकी आंतों को छीलने लगती है ऐसा होने पर घोडा अपनी दुम को बार बार मलता है और बार बार बेचैनी से पृथ्वी पर लेटता है।

इस रोग में सेर भर गर्म दूध में आधसेर कडवा तेल मिलाकर नाल में भरकर पिला देवे।

चौथी कुरकुरी—इसमें घोडा होठों को थप थपाकर मलता है और हवा पी पीकर राह चूकताहै। अपनी स्वाभाविक बातोंको भूल जाता है, मुख की शक्ति बन्द हो जाती है।

पहिली दवा—घोडे के तालु में गुड की एक चकती चिपका देवे।

दूसरा उपाय—ताजे नीमकी लकडीकी लगाम मुखमें लगादे।

तीसरा उपाय—भुना सुहागा छः माशे, गुड आधपाव दोनों को पावभर पानी में मिला कर पिलादे।

पांचवी कुरकुरी—इसमें घोडेकी आंतें स्थानसे अलग होजाती

है. अण्डकोशोंपर सूजन हो जाती है इसमें उँगलियों से दबा दबा कर धीरे २ आंतों को अपने स्थान पर करना चाहिये ।

छटी कुरकुरी–इसके लक्षण पांचवी कुरकुरी के विपरीत होते हैं, घोडे को बैठने उठने में बडा कष्ट होता है ।

पहली दवा–बकरी के कलेजे को दस सेर पानी में आगपर चढादे और गाढा २ पिलावे ।

दूसरी दवा–पावभर नरकचूर को सोठ के आटेमें मिला दोनों समय आधा आधा खिलावे ।

विशेष द्रष्टव्य–कोई चतुर आदमी हाथ को घी से चुपड कर गुदा में प्रवेश करके लीद निकाल लेते हैं,यह काम बहुत बुरा है. फिर कोई उपाय नहीं चलता है ।

सातवी कुरकुरी–इसमें आंतों में पीड़ा होती है, पेशाब और लीद कठिनता से होती हैं, कभी २ होती ही नहीं है, पेट में गडगडाहट होता है. बेसुध होकर बार बार लेटता है, चेहरा लाल पड जाता है, इसमें दाग देना अधिक लाभदायक है. जो न दागे तो नीचे लिखी हुई दवाइयां करे ।

पहली दवा–बोडाबच, गेरू हींग, वायविडङ्ग इनको समान भाग चार चार दिरम लेकर कूट पीस कपडछन करले फिर सेर भर शराब में मिलाकर नाल में भर भर कर पिलावे, जब तक अच्छा न हों तब तक प्रतिदिन करता रहे ।

दूसराउपाय–दो सेर दूध और आधसेर कडवा तेल दोनों को मिला गुनगुना करके पिलावे, जो दस्त न आवे तो फिर पिलावे ।

वास्तव में कुरकुरी दो ही प्रकार की हैं अर्थात् एक तो मूत्र बन्द होने से और दूसरी दस्तबन्द होने से और सब कुरकुरी इन्हीं दो के अन्तगर्त होती हैं।

खुजली का वर्णन—इससे सब देहमें घाव से होजाते हैं। यह रोग संक्रामक होता हैं, एक को होते ही उस अस्तबल के सब घोड़ों को हो जाता है, इससे पशु को बड़ी पीड़ा होती हैं।

पहिली दवा—प्रतिदिन बासी पानी से धो दिया करे।

दूसरा उपाय—दहीमें बारूद घोलकर पशुकी सब देहपर लगा देवे और पांच छः घण्टे पीछे साबुनसे धो डाले। और इस दवा करने के साथ ही धेला २ भर गंधक और सेंधा नमक जौ के आटे के साथ प्रातःकाल खाने को दे।

तीसरा उपाय—साबुन और चौथाई नमक दोनों को कूट कर पोटली बना लेवे, और घोड़ेको स्नान कराते समय इस पोटली से मलता रहे फिर जबतक दवा न सूखे तबतक धूपमें बैठा रहने दे। परन्तु उष्ण काल में विचार के रखना।

चौथा उपाय—आधसेर खट्टा दही और पावभर नमक मिला कर घोडेकी सब देहपर लगादे और चौबीस घण्टे पीछे धो डाले, इसी तरह दो तीन दिन करने से आराम होजाता है॥

पांचवां उपाय—हुक्के के पानी से भी दो दो तीन तीन बार धोने से आराम होजाता है।

छटा उपाय—खट्टा दही चार सेर, नीम की पत्ती आधसेर, काला जीरा पावभर, लहसन पावभर; काली मिरच आधपाव इन में से दही को छोड़ सब दवाओं को पीसकर दही में मिला तीन

दिन रख छोडें फिर घोडे को साबुन से धोयकर यह दवा लगा धूप में खडा रक्खे ।

सातवां उपाय-ग्वार पाठे को नमक मिलाकर खिलादे । अनुसार माफिक ।

आठवां उपाय-सफेद सरेक एक छटांक, सुरती छटांक भर, पानी सेर भर, चूनेका पानी डेढ पाव इनमें से पहिली दो दवाओं को पानी में औटाले फिर चूनेका पानी मिलाकर घोडे की देह पर लगादे ।

नवां उपाय-बाकूची, गंधक, मनसिल और वायविडंगइन सब को बराबर लेकर कूटके और पानीमें रातके समय भिगो देवें, प्रातःकाल मथकर थोडासा कडवा तेल मिलाकर मर्दन करे तीन घंटे धूपमें खडा रखने के पीछे मिट्टी लगाकर धो डाले ।

दसवां उपाय-खट्टे दही में वेद अंजीर मिलाकर तीन दिन मले तीसरे दिन घोडेके देहपर पीली मिट्टी मलदे और चौथे दिन पानी से धोडाले ।

ग्यारहवां उपाय-पाव भर कडवे तेलमें पैसे भर नील मिलाकर घोडे के शरीर पर मलै पहर भर पीछे चिकनी मिट्टी लगाकर गर्मी की ऋतुमें ठंडे पानी से और जाडे की ऋतुमें गर्म पानी से धोडालै ।

गजचर्मका उपाय-इस रोगमें घोडेका चमडा हाथी के चमडेके समान खुर खुरा हो जाता है शरीर की चमक दमक मारी जाती है ।

कासनी, कांजी; बच और भिलावा इनमें से सब दवाओं को

कांजी में मिला पाताल यंत्र में रख तेल खींचले और उसमें तिल का तेल मिलाकर लगाता रहै।

पित्तीका इलाज-सर्पकी कांचली थोडे गुड़में मिलाकर खिलावे अथवा काली मिरच और गेरू छटांक २ भर पीसकर तीन दिन तक खिलावे।

आग से जलजाने की दवा।

पहिली दवा-जले हुए पर प्याजका रस लगा देना चाहिए।

दूसरी दवा-आधी छटांक पत्थर का चूना ढाई पाव पानी में मिलाकर अच्छी तरह से हिलावे। पीछे रखदे तब थोडी देरमें चूना नीचे बैठ जायगा तब ऊपर के निर्मल पानी को धीरे धीरे निकाल कर एक बोतल में भर ले फिर एक बोतल में थोडासा अलसी का तेल और उससे तिगुना चूने वाला पानी मिलाकर हिलावे। हिलाते हिलाते जब गाढा होजाय तब जली हुई जगह पर लगादे इस दवा से घाव को सदा तर रक्खे।

अग्निबाद का इलाज—जिसके यह रोग होता है उसके देहके रोम और चमड़ा जगह जगह से गलकर ऐसे अलग होजाता है जैसे आग का जला होता है।

पहिली दवा-चांवलका भात नीमके पत्ते और दही तीनों आध आध सेर लेकर रातिब की तरह बीस दिन तक खिलावे।

दूसरा-सरसों का तेल दो सेर, गौ का घी दो सेर, चर्बी दो सेर, तीनों को अग्नि पर चढादे, फिर दो सेर साबन धीरे धीरे चम्मच से मिलावे, जब सब मिल जाय और जलकर राख होजाय तब जौ के चून में पाव भर प्रतिदिन खिलावे।

तीसरा उपाय—पारा पपरिया कत्था, बोल और कपूर इन सब के पैसे २ भर लेकर आध सेर घी में मिला लेवे और तीन दिन तक घाव पर लेप करे, तीसरे दिन पीली मिट्टी लगाकर पोले २ हाथों से धोवे ।

फ़ुकनबाद का इलाज—इस रोग में घोडा पांव उठाकर पटककर चलता है अथवा पैर को घसीट कर चलता है ।

पहिली दवा—लहसन और पारा दोनों दो दो ड्राम लेकर कूट ले और दोनों समय महेले वा सत्तू के संग देवे ।

दूसरी दवा—हलदी, पारा और पीपल तीनों को सत्तू के वा महेल में तड़के ही खिलावे ।

तीसरी दवा—थोड़ी सी हींग सत्तू में मिला इक्कीस दिन तक देवै । बरसाती का लक्षण—यह रोग घोडेके पैरों में हुआ करता है और विशेष करके यह वर्षा ऋतु में हुआ करता है इसलिये इसे बरसाती कहते हैं ।

पहिली दवा—हलदी, घुड़बच और पुरानो गव इनको पीसकर घाव में भर देवे ।

दूसरी दवा—नीमका तेल घाव पर लगावै और जब सूख जाय तब चूना भर देवै ।

तीसरा उपाय—भिलावा पावभर, विलायती मोम सेर १ और मीठा तेल सेरभर लोहेकी कढाईमें आगपर चढादे, जब जलकर राख होजाय तब उतारकर छानले और बोतल में भरकर रखले, घावको पहिले केवल नीमके पानीसे धोडाले और उसपर थोडा सा पिसा नीलाथोथा बुरककर उक्त दवा दोनोंसमय लगाना चाहिये

चौथा उपाय—नीला थोथा और फिटकरी दोनों एक २ तोले

लेकर पीस डाले और घावको नीमके पानी से धोकर बुरक दे फिर कपडे से बांधदे।

पांचवां उपाय–बकरीकी चर्बी दो सेर, मोम आधपाव, अरंडका तेल पावभर, कोलतार पाव भर इनमें से पहिली तीन दवाओं को आग पर रखकर पिघलालेवे, फिर कोलतार डाल कर मिला लेवें ठंडा होने पर जमकर मरहम बन जायगा, फिर नीम के पानी से घावको धो तृतियाका चूर्ण बुरक कर मरहम लगाकर कपडे से बांध देवें। दिनमें दो बार लगाता रहे।

छटा उपाय–सेंधानमक १ छटांक, पीपल ९ दिरम, बकरी का ताजा रुधिर पाव भर मिलाकर खिलावे और आंखों के पीछे तीने या दोनों पावों में फस्द खोले॥

बहुधा इन घावों में से बुरा मांस बाहर निकलकर त्वचा से ऊँचा होजाता है और प्याजकीसी गांठ पड जाती है।

पहिली दवा–प्याज और तृतिया पीसकर बुरे मांस पर बांधे ऊपर से अरंडके पत्ते बांधदें। इसी तरह प्रति दिन करता रहे।

दूसरा उपाय–तृतियाको पीसकर उस पर मांस बुरकता रहै। थोडी देर पीछे उसपर गरम प्याज बांधदे और एक दिन पीछे खोलै और जो बहुतही जल्दी आराम कराना हो तो मनसिल कांजी के पानी में पीसकर बांधे पर पहिले घावको नीमके पानी से धो डाले।

घोडेके गरम होनेका वर्णन–घोडे बहुधा चलने में अडजाया करते हैं इस समय उनको मारना उचित नहीं है? परन्तु उसके अडनेका कारण जानना चाहिये. ऐसे अवसर में उनकी आंखें लाल होजाया करती हैं और भूक भी जाती रहती है।

पहिली दवा–हरड, बहेडा और आंवला तीनों छटांक २ भर लेकर कुचल डाले और रात्रि के समय भिगोदे, दिन निकलते ही छान कर पिलादे इस तरह पांच छः दिन तक करने से आराम हो जाता है।

दूसरी दवा–रातके समय मिट्टी के घडे में जल भरकर उसमें आधसेर शीशमकी पत्तियां डालदे. दिन निकलने पर हाथसे पत्तियों को मसल कर छानले और उस जलमें पाव भर जौका सत्तू घोलकर पिलादे इसी तरह पांच चार दिन तक करने से आराम होजाता है। पहिले दिनकी पत्तियां निकाल कर दूसरे दिन भी काम में लाई जासकी हैं यह पत्तियां तीसरे दिन बदलदी जाती हैं।

तीसरा उपाय–रातके समय मिट्टी के एक नवीन पात्रमें सेर भर पानी भरकर उसमें छटांक भर कतीरा डालदो सवेरे के समय उसे मिलाकर पिलादे।

कमर के दर्दका इलाज–बहुधा चोट वा लचका खाजाने से यह दर्द उत्पन्न होजाया करता है।

पहिली दवा–थोडेसे चांवलोंका माढ निकालकर ठंडा करले, इस माढमें घोडेकी पूंछकी डंडीको उलटकर डालदे परन्तु प्रथम ही घोडेकी पिछाडी दृढतासे बांध देवैं। जब दुम भीग जाय तब पिछाडी खोलदे ऐसा करने से घोडा पूंछको बडे वेगसे फड फडावैगा और लचक जाती रहैगी।

दूसरी दवा–अंडीका गूदा दहीमें पीसकर तीन दिन तक कमर पर लगावे और चौथे दिन गरम पानी से धो डाले।

जो कमर में सूजन होजाय या फट जाय तो यह दवा लगावे सदाव की पत्ती, तिली का तेल और पानी तीनों दो सेर सेर ले एक देगची में चढादे जब पत्ती जल जाय और पानी भी जल जाय तेल रह जाय तब उसे बर्तन में रखले और उसकी कमर से मला करे । यह दवा और दर्दोंको भी लाभकारक है।

दूसरी दवा-शहद १ तोला; कपूर ३ माशे इन दोनोंको मिला कर मले; ऊपर से बकरीकी नरम खाल बांधकर धूपमें खडाकर दिया करे परन्तु खाल नित्य ताजी बदल दिया करे, ४० दिन तक ऐसा करने से आराम हो जाता है ।

बादगीरा का इलाज-इस रोगमें बादीके कारण घोडेकी कमर में दर्द होने लगता है इससे वह पेट को लटकाता है, पीठको झुकाता है और पीठ और पेट दोनों सूखने लगजाते हैं ।

पहली दवा-कडवा तेल आधपाव, भिलावा आधपाव इन दोनोको कढाईमें चढा खूब जलाले, फिर नीलाथोता दो तोले रस कपुर दो तोला इन दोनों को पीसकर दो पोटली बनावे और इस तेल में भिगोकर गरम कर करके रीढ से पीठ तक सेकै यह दवा एकही दिन की जाती है ।

दूसरी दवा-तिल के तेल से सेकै फिर तिल का तेल और जवाखार दोनों को पानी में औटा कर पिलादे ।

तीसरी दवा-गरम पानी के साथ साबुन लगा कर धोवे ।

चौथी दवा-दूध और नमक को औटाकर मले ।

पांचवीं दवा-सरेस को पानी में पका कर लगावे ।

छटी दवा-कुटकी आधपाव, सोंठ आधपाव, कमीला आध-

पाव, काली मिरच आधपाव गूगल डेढ़ तोला इनको पानी में पीस कर गरम करके लेप करे ।

पानी की दवा—कच्छ, मुसब्बर, पीपल प्रत्येक आधपाव; शहद एक सेर इनमें से हर एक दवा को अलग २ पीसकर शहद में मिलाले और डेढ डेढ तोले की गोलियां बना कर उनमें से प्रतिदिन दो दो गोली दाने के साथ खिलावे ।

पीठ की सूजन का इलाज—गेहूं की मैदा, हल्दी; सज्जी इन सब को मर्दन पीस कर अग्नि पर पकाकर लेप करे ।

पीठके घावका इलाज—चार जामा के ढीला कसने से रिगड खाकर वा और किसी रीतिसे छिलकर पीठमें घाव होजाताहै ।

पहिली दवा—पुरानी गच का चूना और कड़वा तेल दोनों दो सेर पानी में घोल कर रखदे, जब पानी ऊपर रह जाय और तेल चूना नीचे बैठ जाय तब उसे निकाल घाव में भरे और मक्खी न बैठने दे ।

दूसरी दवा—ऊँट की पसली की राख भरदे ।

तीसरी दवा—पुराने जूते की राख करके घावमें भरदे अथवा इस राख को कडवे तेल या मिट्टीके तेलमें मिलाकर लेप करे ।

चौथी दवा—प्रथमही चिकनी मिट्टी लगाकर साबुनके पानी से दो दिन तक धोकर सरसोंका तेल और नील मिलाकर लगादे ।

घाव को नीमके पानीसे धोते रहनाभी अधिक गुणकारक है ।

तङ्ग के नीचे घाव होजाने का उपाय ।

जो पेटपर तङ्ग के नीचे घाव होजाय तो सादे कागज की कई तह करके पानी में अच्छी तरह भिगोकर घाव पर रखदे ऊपर से तङ्ग कसदे ।

दूसरी दवा-फिटकरी, भुना सुहागा, काली मिरच, हल्दी इन सबको कूट छानकर चार पैसे भर दवाको सोंठके चूनमें मिला दोनों समय दे।

घावपर मरहम-सरसोंका तेल आधसेर, लहसन आधपाव, सुरती एक छटांक, लाल मिरच एक छटांक, नीमकी पत्ती आध पाव, मुर्दासंग एक तोला, सिंदूर दो तोला; संजराफत दो तोला इन सबको तेलमें पका लेवे और ठंडा होने पर घावके ऊपर लगाता रहे।

दूसरी मरहम-मुर्दासंग तीन माशे, मुसब्बर तीन माशे, मोम तीन माशे, तिलका तेल पावभर, एक पान इन सबको पीसकर तेलमें पका लेवे और घावको नीमके पानी से धोकर यह मरहम लगा देवे॥

तीसरी दवा-गोचिकित्सा में घावके प्रकरण में जो जो उपाय लिखे गये हैं उनसे भी आराम होता है।

तबक्का इलाज-तंगके नीचे रोटीकी टिकिया के समान सूजन उठती है, जो इसका उपाय करने में देरीकी जायतो यह सूजन नाभितक दौड आती है। इसमें देरी करना ठीक नहीं है।

पहिली दवा--काले धतूरेके पत्तोंका रस, कारी मकोयका अर्क कालीजीरीकी लकडी मैदा इन सबको सिलपर पीसकर लगादे।

दूसरी दवा-बकायन, नीम, संभालूके पत्ते इनको मुख मुला कर सूजन पर रख कपडे से बांध देवे। और इसीका बफारा तीन दिन तक दे।

तीसरी दवा-मूलीके बीज और कलमी शोरा इनको पानी में घिस गरम करके लेप करें।

अन्य सूजनोंके उपाय-सज्जीखार; सरसों, लोटाखार, सेंधानमक पीपल, आवा हलदी इन सबको समान भागले पानी में पीसकर लेप करे ।

दूसरी दवा-अजवायन, सेंधानमक हरड. गुडवच, चिरायता ये सब समान भागले सरसों के तेलमें चासनी कर खिलावे । यह दवा दोनों समय करनी चाहिये जो सूजन ऐसी जगह हो कि उसका बैठाना कठिन हो तो पकानेका उपाय करै ।

सूजनको पकानेकी दवा-कालीमिररच पीसकर रखले फिर उरदके आटेकी इतनी बडी रोटी बनावे जितनी सूजन हो, उसे एक तरफसे सेक ले और जिधर कच्चो हो उधरकी ओर कालो मिरचोंका चूर्ण बुरक कर सूजनपर बांधदे ऊपरसे अरंडके पत्ते रख कपडेसे बांधदेवै और आठपहर पीछै खोलेतो सूजन पक जायगी।

सब देहकी सूजनका उपाय-काली या लाल मिरच आधपाव पीसकर महेले में मिलाकर खिलावै और नीमकी पत्ती मठ्ठे में पीस कर तीन दिनतक सब देह पर मर्दन करै ।

लादीसे अङ्गदोषों की सूजनका उपाय ।

अबलूत जीरा; जवाखार, साथरी इन सबको कूट छान घीमें मिला मरहम बना दिनमें पांच सात बार लगावे ।

दूसरी दवा-मछलीको दो सेर पानी में उबालै जब चौथाई पानी रह जाय तब नालमें भरकर तीन दिनतक पिलावै ।

तीसरी दवा-दालचीनी और गोंड दोनोंको पीसकर लेप करे और जो कफके साथ सूजन हो तो वह कडी होती है ।

दवा-पीपल, सोंठ, गेरू, जवाखार, साथरी इनको कूट छान

कर सेरभर शराब में मिलाकर नाल में भर कर पिलावे।

दूसरी दवा—तीन दिन तक गौ का ताजा गोबर मले।

गर्मीदाने का इलाज—जिस घोडे के अण्डकोशों पर गर्मी से दाने से पड़जांय उसके अण्डकोषों को तेल से चिकना करके नीम की छाल को महीन पीसकर उसका लेप करदे।

गुप्त अण्डकोषों को प्रगट करने का उपाय।

रुधिर और कफ दोनों मिलकर घोडेके अण्डकोषोंको खींचते है जिससे एक या दोनों ओरके अण्ड लुप्त होजातेहैं, जो इसके इलाजमें देर होती है तो घोडा लङ्गडा होकर चलने लगता है, जिस घोडे के अण्ड पर सीवन का चिह्न नहीं होता और साफ मेंडासा चमकता है वह पैदायशी है उसका इलाज नहीं हो सकता और जो सीवन का चिह्न हो और उनकी दोनों तरफभी मालूम होती होतो जानले कि यह बीमारीहै इसका इलाज करे।

दवा पहिली—जङ्घा की रग अण्डकोषों के समीप खोले फिर अण्डकोषोंको तेलसे चिकना करदे और गायका मूत्र तेल और नमक इसको हांडी में भरकर हांडी का मुख बन्द करके आग पर औटावे, फिर हांडीका मुख खोलकर अण्डकोषोंको वफारादे तो नीचे उतर आते हैं। इस प्रकार सवेरे और सन्ध्या दोनों समय करे और यह दवा खिलावे।

खिलाने की दवा—एलुआ, भुनी हींग, जवाखार, छिला हुआ लहसन, प्रत्येक नौ दिरम और पीपल सवा दो दिरम सबको कूट छान कर नौ दिरम तिल के तेल में मिला कर सात दिन तक खिलावे, घोडे को कूआ का पानी पिलावे, दवा देने के बाद दाना न दे और इस दशा में सवारी भी न करे।

गुह्येन्द्रिय के रोगों का इलाज ।

जिस घोडे के उपस्थ पर गर्मी से दाने पड़ जांय और उनमें खुजली चले तो उसका शीघ्र उपाय करे क्योंकि देर करने से कीडे पड़ जाते हैं इस रोग में जानू में नश्तर लगावे और यह दवा करे ।

दवा—उपस्थ को ठण्डे पानी से छिडककर छुहारे या नीम का लेप करदे अथवा नीम के पत्तों को औटाकर उसे पानी सेधोवे अथवा घी को एक सौ एक वार धोकर उसमें पपड़िया कत्था और थोडा कपूर मिला कर लेप करे ।

घोडे की पूंछ के रोगों पर इलाज ।

घोडे की पूंछ में खराब रुधिर के इकट्ठे हो जाने से खुजली होती है और उसमें फुन्सियां होजाती हैं जिनसे भुसीसी उड़ने लगती है अगर रोग के इलाज में देर हो तो कीडे दुम की खाल को खा जाते हैं और सब बाल गिर पडते हैं और कीडों की खाल को खा जाने के कारण हड्डियां निकल आती हैं।

इस रोग का इलाज—पहिले पूंछ के सिरे की फस्द खोले फिर सरसों के तेल को धीरे २ दुम पर मले जिससे घोडे को कष्ट न हो और सेर भर छुहारे तथा पावभर नीम के पत्ते दोनो को कूट कर तीन दिन तक घोडे को खिलावे या खुजली को दूर करने वाला तेल बना कर प्रयोग करे ।

खुजली और अर्द्धांगका इलाज—घोडेका आधा शरीर बादीसे रहजाता है फिर धीरे २ आधा शरीर सूख जाता है तथा घोडा वेहोश और सुस्त रहता है तथा दाना घासतक नहीं खाता है।

दवा—तिल का तेल सेर भर, अवलुत आधसेर दोनोंको मिला

कर अग्निपर चढाकर औटाले, फिर उसको घोडे के शरीर पर मालिश करे इस रोगमें घोडेको हवासे बचावे तथा पानीके लिये यह दवादे: पावभर पीपलको पीसकर सेरभर गायके दूधमें मिला कर तीन दिनतक प्रातःकाल घोडेको पिलावे।

फालिजका इलाज–तिलका तेल गर्दन पर मलें और तेलके सूखने पर अरंडके पत्ते गौके गोवरमें पीसकर मले (अन्य उपाय) कुचलाके सतकी एक रत्तीमें ४० गोलियां बनाकर एक एक गोली दोनों समय दे और लिनिमेंट रोमानियाका मर्दन करे।

अन्य उपाय–लहसनके बीज, अमलतास, सोंठ इनको समान भागले दो सेर पानी में औटावे जब आधा पानी रहजाय तब छानकर सात दिन तक पिलावे।

मस्सेका उपाय–जब घोडेके मुखपर कोई मस्सा हो तो काग-जकी मोटी बत्ती बनाकर उसकी धूनी से जलादे।

दूसरा उपाय–तबकिया हरताल और चूना दोनों बराबर पीसकर लेप करे।

तीसरा उपाय–गंधक और उससे चौथाई केशर सिरकेमें पीस कर बराबर लगाता रहे।

वसका इलाज–जिस घोडे के मुखपर उजले दाग होजाते हैं उसे बरस कहते हैं। इस पर यह काम करना चाहिये कि बैंगन के टुकडे करके पानी में मलले और उस पानी को दिनमें दस बारह बार थोडा २ लगावे।

मुख बंधकी दवा-जिस घोडे के दांत बंध जाते हैं और मुख से लार टपकने लगजाती है उसका यह उपाय है कि तिलका तेल

उसके सिरपर लगावे और गौका गोबर वा अंजीरका हरा पत्ता इनको पीसकर गुनगुना करके लेप करें ।

गलसुराकी दवा-यह सूजन कानकी जड से हलक तक होती है । इसको पुरानी ईंटसे सेकना चाहिये ।

दूसरा इलाज-इन्द्रायनका भूना हुआ फल जौके आटेमें मलकर सात दिनतक खिलावै ।

तीसरा इलाज-अदरख पावभर, कालीमिरच आधसेर पानएक सौ (१००) काळेसर पावभर उनको कूट छानकर सात दिनतक सायंकालके समय खिलावै ।

खुश्केका इलाज-इसमें गलेके दोनों ओर दो गोले होते हैं, इस रोगके होनेसे जाडेमें मूत्रबन्द हो जाता है और गर्मी में खाना पीना छोड देता है ।

पहिली दवा-पान, पीपल, अदरख, कालीमिरच, सेंधानमक इन सबको बराबर लेकर चनेके चूनमें मिलाकर सात दिन तक खिलावै ।

दूसरी दवा-बिनौलोंकी पोटली बनाकर सेकें और थोडे से बिनौले मनुष्यके मूत्रमें पीसकर बांध दे तो तीन दिनमें आराम होजाता है ।

खुबकका इलाज-हलक के जोड में एक आलासा होता है इसे जहरबाद भी कहते हैं । इसका इलाज वैसाही होता है जैसा गलसुराका होता है जो उससे आराम न हो तो शिंगरफ की गोली बहुत अच्छी होती हैं और जो बीमारी यहांतक बढजाय कि मुख न खुल सके तो गौका गोबर और सांभरनमक मनुष्य

के मूत्र में पीसकर दोनों समय लगावे ऊपर से कपड़ा बांधदे । इससे पक कर फूट जायगा । फिर सफेद जीरा, हलदी एक २ दाम, गेहूं तीन दाम, नमक पांच दाम इनको पीस कर घाव में भरकर कपडा बांध दे । फिर तीन दिनतक केवल नमक पीसकर भरता रहे और नीचे लिखी मरहम लगावे । तिली का तेल डेढ़ पाव, भिलावा छटांक भर तेल में जला कर लगावे, जब उसकी ऊंचाई जाती रहे तब काली मिरच, नीलाथोथा और साबुन इनको तेल में पकाकर लगावे ।

अन्य दवा–सोंठ मिरच, पीपल, कुटकी, वायविडङ्ग, चिरायता, सफेद जीरा, नीबे की छाल; काकड़ासींगी, काला जीरा इन सबको कूट छान कर इसमें आधपाव, सत्तू के साथ खिलाता रहे ।

बाघनी कोलास का इलाज ।

यह रोग दुम म या चोटी में होता है, इसमें रुधिर विकार के कारण बाल जड़ से गिर जाते हैं और दर्द होता है ।

इसकी दवा–आक के पके हुए पीले पत्ते २० नग ले तथा हरताल और संखिया दोनों को बराबर लेकर पानी डाल कर दोपहर तक खरल में घोटे, फिर उसको उन आक के पत्रों पर लपेट ले और सेर भर तिल के तेल में उन पत्तों को डालकर अग्नि पर चढावे जब पत्ते जल जांय तब उतार ले और नीलाथोता, आंबाहलदी और आशखार तीनों बराबर उसमें डाल कर नीम की लकड़ी से खूब घोटले फिर जिस जगह पर बाघनी कोलास है उसको उपले से इतनी खुजलाओ कि रुधिर

निकल आवे, फिर आक के पत्तों पर उस दवा को लगा कर बद्धी बांध दे और तीन दिन पीछे पट्टी खोल कर उस स्थान को पानी से धोवे और फिर उस पर मरहम को लगावे।

किनारा, सुर्रा और सोना बन्द आदि का इलाज।

जो घोड़ा खानेसे मिठाई खाता है, या ठण्डी हवा खाता है। या हाजमा (पाचन शक्ति) बिगड़ जाय या वह हमेशा एक स्थान पर बँधा रहे और फिरे नहीं तो जुखाम हो जाता है, यह बीमारी बात और कफ से होती है और पीछे किनार नामक रोग उत्पन्न होजाता है।

किनार रोग के लक्षण—इसमें घोड़ा बारम्बार छींकता है और उसकी नाक से पानी बहता है तथा खाने पीनेसे उसे अनिच्छा हो जाती है।

किनार की दवा—सोंठ और पीपल दोनों को बराबर २ लेकर पीस ले और सहालू और सेमर दोनों के पत्तों का रस निकाल कर उसमें मिलाले फिर सुखा दे, जब सूख जाय तब पीस कर उसे बांस की नली में भर उसकी घोडे को नास दे अथवा उस दवा को टाट के टुकडे या नीले कपडे और स्याह सोख्ता में लपेट कर उसको जला कर नाक में धूनी दे अथवा कायफल को पीस कर उसकी नास दे।

तीसरी दवा—बारूद दो पैसे भर, सेंधा नमक एक पैसे भर और केशर धेला भर तीनोंको दूधमें पीस कर उसकी घोडे को सवेरे और सन्ध्या दोनों समय चार दिन तक नास दे तो घोडे का जुकाम दूर हो जायगा।

चौथी दवा–चार तोले कड़वा तेल लेकर उसको आग पर गरम करले और उसमें चार तोले शहद तथा चार माशे पिसा हुआ कायफल मिलाकर घोड़े के नथनों में डाले तो निश्चय आराम हो।

सुर्फा का इलाज–यह बीमारी भी सर्दीसे होतीहै, इसमें घोड़ा घांस घांसकर दिक होजाता है, जुकाम और सुर्फा दोनोंके लक्षण समान हैं, सुर्फेमें जमाहुआ कफ पतला हो २ कर निकलता है।

इसकी दवा–उत्तम शहद आधसेर, बकरी का दूध आधसेर और सोंठ, वेतरा नौ दिरम तीनोंको मिलाकर घोड़ेको पिलावे।

दूसरी दवा–बङ्ग छः माशेको अदरखकी गांठमें रखकर आग में भुल भुलाकर घोड़े को खिलावे तो इससे घांस बन्द हो जाती है। यह दवा तीन दिन दे।

तीसरी दवा–सेरभर अजवायन को मनुष्य के पेशाब में भिगोकर कई दिन तक रक्खी रहने दे। फिर उसे साफ करके कूट ले और दो दो पैसे भर नित्य दाना खाने के बाद घोड़े को खिलावे इसी प्रकार तीन दिन तक करे।

चौथी दवा–सहजने की छाल छटांकभर (हाल की काटी हुई को) बारीक पीस कर तीन दिन तक खिलावे।

पांचवी दवा–ढाई पत्ता आक का (पत्ते पके हुए) घोड़े को खिलावे तो घांस दूर हो जाती है।

छठी दवा–पानी पिला कर पीछे घोड़े को मिलाई खिलावे किन्तु तीन दिन तक इसी प्रकार करे तो घांस दूर हो जाता है।

सातवी दवा–अदरख में अफीम भर कर ऊपरसे गेहूंका आटा

लपेट कर आग में दबादे जब सिक जाय तब उसको निकाल कर सोंठ के चून में तीन दिन तक खिलावे । अफीम अनुमान से लेनी चाहिये ।

जीकुलनफसका इलाज–जीकुलनफस रोग पित्त के विकार से उत्पन्न होती है, इसमें घोडे की आंख लाल हो जाती है और शरीर गरम हो जाता है तथा वह कठिनता से श्वास लेता है और बारम्बार पसीना आते हैं और शरीर की नसें ऊपर आती हैं ।

इसकी दवा–हर्र आठ तोले, आंवले आठ तोले, शकर पाव-भर और चांवल पावभर, सबको पीसकर हलवा बनाकर घोडे को खिलावे ।

दूसरी दवा–अरण्ड की जड का छिलका, इन्द्रायन; गुजराती बोल, काली मिरच, लाल मिरच, अजवायन, सेंधा नमक, नीला-थोता, बन्दाल, अजमोध, दारु हल्दी, कुलीजन, फुलेला और लोंग प्रत्येक आध २ पाव लेवे और ५ सेरथूहर के दूध में जौ के आटे का खमीर कर उसको कंडों की आग पर जलाले, जब ठंडा होजाय तब पीसले और उन दवाओं को भी इसमें मिला कर पीसले, और फिर चार पैसेभर दवाको शराबमें भि-गोकर नाल में भर घोडे को पिलावे और जो गर्मी अधिक माळूम हो तो चार पैसे भर आंवले और बढाले । खाने को चना और मोठ का दाना तथा सूखी घास देवे ।

शेरदुमी का इलाज–यह ऐसा रोग है कि इसमें घोडा सवारी करने के वक्त हीसने लगता है और श्वास खींचता है ।

इसकी दवा–काली मिरच और सोंफ प्रत्येक छटांक भर सोंठ आधी छटांक, मिश्री सवा छटांक इन सबको कूट छानकर दस दिन तक खिलावे ।

दूसरी दवा–काली मिरच सात तोले, सोंफ दस तोले, आंवला छः तोले, कंजा छः तोले, मिश्री दस तोले इन सबको कूट पीसकर दस दिन तक दोनों समय दे ।

तीसरी दवा–मुलहटी, बीदाना प्रत्येक छः तोले, किशमिस १ तोले सफेद जीरा सात तोले, काली मिरच, पीपल प्रत्येक सात तोले, अदरख दो तोले सोंफ, मनुक्का और बबूलका गोंद प्रत्येक दस तोले, इनमेंसे गोंदको पानीमें भिगोदे और ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको कूटकर गोंदके पानीमें गोलियां बना लेवे, एक २ गोली दोनों समय दे ।

चौथी दवा–प्याज दो सेर, कतीरा आध सेर दोनोंको पीसकर मिलाले और आठ दिन तक दे ।

पांचवीं दवा–धानकी भुसी पहरभर पेशाबमें भिगोकर दानेके पीछे खानेको दे । और जो श्वास बराबर चलता हो तो सोंफ धनियां, महदी के बीज, बायबिडंग, आंवला, कतीरा इन सब को आध आध पाव लेकर कूटले और जौके आटे में मिला प्रातःकाल देवै ।

हिचकीका इलाज–जो बादी सेहिचकियां आती हों तो मोंमियाईकी एक गोली प्रातःकाल के समय दे । दूसरी दवा है कि मोरपंख की राख शहत में मिलाकर देवै ।

सीने बंदका इलाज–जब घोडे के कंधे पर सूजन हो जाती है तो उसे सीनाबन्द कहते हैं, यह रोग अजीर्ण से होता है । इसमें

महेला खाने को देना अच्छा होता है और सवारी भी लेना अच्छा होता है।

पहिली दवा—अरंड की कोंपल खारी नमक इनको पाव भर कूटकर खिलावे। और पीनेको गरम पानी दे, ठंडा पानी न पिलावे।

दूसरी दवा—आककी जडकी छाल खुब भुलाई हुई टके भर, गूगल टके भर, पाव भर गुडमें मिलाकर खिलावे।

तीसरी दवा—आंबाहलदी टकेभर, सज्जी टकेभर, गूगल दो टके भर अफीम पैसे भर सबको पानी में घोलकर उस पानी में जौका आटा गूंदकर टिकिया बना लेवे इस टिकिया में ऊपर की सब दवा भर भूभलमें दबा कर सेंकले, सिकने पर दवाओं को निकाल कूट पीसकर छः मात्रा करले और खिला दे।

चौथी दवा—स्पंद; अजवायन, गूगल; असगंध ये सब समान भाग मालकांगनी, लहसन पावभर, फिटकरी, सुहागा छटांक २ भर इन सबको कूट पीस सेर भर गुडमें १५ गोलियां बना कर दोनों समय एक एक गोली देवै और लोहेका तपाहुआ पानी पिलावे।

पाचवीं दवा—नीला थोथा एक तोला, बडी हरड पाव भर दोनों को सिरके में महीन पासकर ४० गोलियां बनावे और एक २ गोली सवेरे और संध्याको खिलावे।

छठी दवा—हींग, भिलावा, कालीमिरच, बडी पीपल, कूट जीरा सुहागा, गूगल, गुजराती बोल और हल्दी सबको कूट छानकर छटांक भर रोज सात दिन तक खिलावे।

सातवीं दवा-एलुआ, गूगल, अफीम सुहागा, वायविडंग सब को पांच २ माशे लेकर फंकी बनाकर तीन दिन तक घोडे को खिलावे और गरम पानी पिलावे ।

आठवीं दवा-सुहागा; अजवायन खुरासानी, फिटकरी, गूगल, वेद इन्जीरकी कली इन सवको दो दो तोले लेकर एक खुराक करे इस तरह तीन दिन तक दे और घोडे को गश्तदे तथा नदीका पानी पिलावे ।

नवीं दवा-भैंसागूगल, मालकांगनी, हल्दी, तिवरसा गुड इन सबको पाव २ भर लेकर दाना खाने से पहिले खिलावे ।

जौ गीरा, वादगीरा, आवगीरा और सीनागीरका इलाज ।

जो घोडा वक्त वे वक्त दाना और पानी खाता पीता है तथा उसके हाजमा (पाचन शक्ति) पर ध्यान दिये बिना कच्चा पक्का भोजन उसको खानेको दे दिया जाता है इसको जौगीरा नामक बीमारी हो जाती है, वह सब बीमारी बुरी होती है । सीनागीर, आवगीर और जौगीरा इन सबका एकही उपाय है ।

दवा-घोडेको थोडी देरतक पानीमें तरावे, या उसके दांतों की जडमें नश्तर लगादे, या गधेकी चर्बीको एक वर्त्तन में पिघला कर सिरसे पांवतक मले अथवा सुअरके पित्तको पानीमें घोल-कर पिलावे ।

अन्य दवा-आंबाहलदी, सात पैसे भर, कच्चा सुहागा टकेभर, गुगल टकाभर, फिटकरी पैसे भर, इस्पन्द एक पैसा भर और साबुन चार पैसाभर सबको तीन गोली बनाले और प्रातःकाल एक गोली निहारमुख खिलावै ।

अन्य दवा-फिटकरी, सुहागा और अफीम प्रत्येक पांच माशे नीला थोथा २ माशे, सज्जीर २ दाम और तिल पांच मांशे सबको पीसकर तिलके तेलमें मिलाकर तेरह गोलियां बनावे और दाने पानी के साथ चौथाई गोली खिलावे तथा हवाका परहेज रक्खे।

वेल, वदनाम, खिनाम और गुप नामका इलाज।

जब महेला और घी घोडेको बहुत ज्यादह दिया जाता है तो उसके सब शरीर पर दाने पड जाते हैं तथा हाथ, पैर, सिर और सीने में गांठ पड जाती है। जो दाने आगे को होते हैं जुकामके कारण होते हैं और उन्हें नर कहते हैं तथा जो पीछे होते हैं वह गर्मीसे होने हैं और उनको मादा कहते हैं सिरकी सूजन को कछुई या वेल कहते हैं कभी सिरसे सीने तक और और कभी पांवसे चूतड तक आंवले से गोल पड जाते हैं यह बीमारी गर्मी से पैदा होती है और घोडे के तमाम शरीर में हरारत होजाती है।

दवा-काली जीरी; अफीम और कुचला, दश २ माशे लेकर तीनोंको पीसले और धतूरे के अर्कमें घोट कर दानों पर लगा कर ऊपर से इन्जीर के पत्ता बांधदे तो निश्चय तीन दिन में आराम हो।

दूसरी दवा-दानोंको नश्तरसे चीरकर उनका मवाद निकालदे और फिर उनमें आक या सेंहुडका दूध भरदे, जब घाव भर आवें तब आधसेर कडवे तेल को गरम करके उसमें आधसेर नीला थोथा मिलाकर घावके ऊपर लेप करे तो आराम हो।

तीसरी दवा-सौ मेंडक और सौ मकडियोंको मंगाकर छील-कर सुखादे, जब सुख जाय तब उनको बारीक पीसकर कपडे में छानकर पावभर चनाके सत्तूमें मिलाकर ४० दिन तक घोडेको खिलावे और गश्तदे।

चौथी दवा-सहजनेकी छाल पावभर और लाल मिरच आधपाव दोनोंको कूटकर और छानकर हुहेलामें मिलाकर दानेके साथ दोनों वक्त खिलावे और जबतक अच्छा न हो यही दवा देता रहे और अगर घोडेको दाग दे तो यह बीमारी बढती नहीं है।

पांचवीं दवा-चोबचीनी एक सेर, गंधक आधसेर, पारा पाव भर और सुर्मा आध पाव लेकर पहिले गंधकको आगपर गरम करके उसमें सुर्मा और पारा मिलादे; फिर नीचे उतारकर उसमें चोबचीनी कूटकर मिलादे और खूब बारीक पीसले फिर उम्दा शहद मिलाकर डेढ २ तोले का गोली बना ले और दोनों समय एक २ गोली खिलावे। यह गोली किरमक रोगको दूर करती है।

किरमकका इलाज-यह बीमारी गर्मीमे होती है, इसमें सिरसे गर्दन तक दानेसे पडजाते हैं इस रोगके चिन्ह यह हैं कि घोडा बेहोश हो जाता है, बहुत बेकली होती है. मुख सूख जाता है पसीने बहुत आते हैं, हरघडी घोडा कांपता है और उसको नींद नहीं आती है, यद्यपि यह बीमारी बुरी है परन्तु उसका नीचे लिखा उपाय करे।

जो दाने गर्दन में पडे हों उनमें से दो दाने चीर कर देखे,

यदि दोनों की रंगत पिस्ता के समान हो तो बुरी है इस में कोई उपाय लाभ दायक नहीं होता हरी रंगत के सिवाय सब रंगत के दानों का वही उपाय करे जो बदनामक इलाज में लिखा है।

अन्य उपाय-लोंगों को पीसकर थोडी सी दानों में चीरकर धरदे और कुछ पानीमें घोलकर (अनुमान माफिक) पिलावे, इसी तरह थोडे दिनतक करता रहे तो आराम होजायगा।

दूसरी प्रकारकी किरमक-यह बीमारी गर्मीसे भी उत्पन्न होती है, परंतु साध्य होती है इसमें छोटे २ दाने तमाम शरीर में पड जाते हैं और घोडा बहुत दुर्बल हो जाता है। यह दाने अपने आप फूटकर इनमें से रुधिर बहने लगता है और यदि इन दानों के मुखको चीरा जाय तो उनमें सूतसा निकलता है,इसमें सीनेकी फस्द खोलना लाभदायक है।

पहिली दवा-खिरनीके पत्ता, तितबीके पत्ता, दोनोंको पानीमें औटावे और जब पानी ठण्डा होजाय तब उससे घोडेके शरीर को धोवे।

दूसरी दवा-आंवला, हर्रा, और कच्चे चांवल तीनोंको आधर सेर लेकर कूट छानकर सात खुराक बनाले और आधसेर तेल में एक खुराक मिलाकर नित्य खिलावे, इसी प्रकार सात दिन तक करें।

तीसरी दवा-त्रिफला; सेरभर, कालीमिरच सेरभर बकायनका सूखा फल आधसेर नीमकी छाल सूखी आधसेर, सबको कूट छानकर शहद में मिलाकर ८० गोली बनाले और संध्या और

सवेरे एक २ गोली नित्य खिलावै इसी प्रकार चालीस दिन तक करे।

जो लेप करना हो तो खुजली के प्रकरण में लिखा हुआ लेप लगावे।

हाथ और पांवके रोगोंका वर्णन।

जो पांव कलम अथवा जंघामें सूजन हो तो सेंधानमक चार पैसेभर और मुसव्वर गोंद एक पैसेभर दोनोंको मिलाकर लेप करदे और मजबूत पट्टी बांध दे अथवा तालुकी फस्द खोले।

पट्टा पकडनेका उपाय–हाथकी नलीमें एक पट्टा होता है जिसके चढजाने से बहुत दर्द होता है और उसके पास एक रग होती है जो कडी और ऊंची नीची जमीन पर चलने से ऊपर आती है इसका उपाय करे।

दवा–एक हांडा में पानी भरकर उसमें एक मुट्ठी भर खारी नमक और दस ढाकके पत्ते डालकर आगपर रख दे और जब आधा पानी रहजाय तब आग पर से उतार ले और गरम २ पत्तों को एकके ऊपर एक रखकर नलीपर मजबूत पट्टी से बांध दे और पट्टी उस गरम पानी से तर रक्खे परन्तु इस बातका ध्यान रक्खे कि सुमपर गरम पानी न पडने पावे क्योंकि यह हानिकारक है इस लिये सुमको एक चमडेकी थैली में रखकर बांध दे, यह उपाय तीन दिन तक करे तो आराम हो।

छोप करने की रीति–जिस घोडेका पट्टा भडकता हो, और सूज गया हो उसका छोप करना लाभकारक है, सर्पकी बांवीकी मिट्टी और भेडकी मेंगनी दोनोंको समान भाग लेकर मनुष्य

दे सूत्रमें सानले फिर इसे मिट्टी के वर्तन में पकाकर दर्द के स्थान पर लेप करै और घोडेको धूप में रक्खे, इसी प्रकार तीन दिन तक करै तो आराम हो ।

दूसरी विधि—बकायन; नीम और सुण्डी की ताजी पत्ती मंगवाले कोल्हूकी मिट्टी तथा थोडी सज्जी लेकर सबको मिलाकर पीसलें और पकाकर लेप करै और घोडेको धूपमें टहलावै जब तक कि दवा सूख न जाय, इसी प्रकार तीन दिन तक करै ।

तीसरी विधि—अफीम और गेरू दोनों को बराबर लेकर पीसले और कडवे तेलमें मिलाकर खूब घोटले. फिर इस दवा को सुम्मसे जांघतक लगावै. प्रातःकाल और संध्या दोनों समय तीन दिन तक इस दवाको लगावै तो दर्द बिल्कुल बन्द होजाता है परन्तु इस बातका ध्यान रक्खे कि जिस जगह गेरू लगजाता है । उस जगह फिर कोई दवा असर नहीं करती इस लिये इस दवाको उस समय लगावै जब कि और सब दवा कर चुके होवे ।

तीर हड्डीका निदान—यह तीर हड्डी हाथ की कलाई में उत्पन्न होती है यह एक हड्डी होती है जिसकी कि आकृति नश्तर या तीर के समान होती है, इसके कारण घोडे को चलने में बडी तकलीफ होती है ।

इसका इलाज—बताशे एक भाग और अफीम दो भाग दोनों को मिलाकर एक फिटकरी के टुकडे पर लगाकर उसे आग पर पकावे और गरम करके उस हड्डी पर बांध दे और थोडी देरतक बंधी रहने दे तो आराम होगा ।

दूसरा उपाय-एक तोलाभर मिश्री को कूटकर नित्य उस हड्डी पर बांधे तौ आराम हो।

तीसरी दवा-बकरी का गुर्दा मंगाकर उसे आग में भुलभुला ले और थोडा सा नमक मिलाकर उस हड्डी पर बांध दे।

चौथी दवा-बकरी के गुर्दे में थूहर की डाली मिलाकर आग पर भून ले और उस पर साबुन लगाकर सात दिन तक बांधे, फिर उस जगह को तेल से चिकनी करके उस जगह के चमडे को काट दो, और उसमें सेंहुड का दूध भर देवे तथा धतूरे के पत्ते औटा कर उस पर बांध दे और पट्टी को उसी पानी से तर रक्खे इसी प्रकार सात दिनतक रहने दे, पट्टीको अपनी जगह से न हटने दे; घोडे को उसके मुँह या पांवसे पट्टी न खोलने दे जो घाव से मवाद बह कर आवे तो उसे पोंछ दे, लेकिन पट्टी को न हटावे। सात दिन पीछे पट्टीको खोले तौ हड्डी बिल्कुल नष्ट होजायगी।

पांचवी दवा-अण्डी की मिंगी और काले तिल दोनों को बराबर लेकर कूट ले और टिकिया बना कर गरम करके बांधे और तीन दिन बाद पट्टी खोले।

बजर हड्डीका वर्णन-यह हड्डी जंघा या घुटनोंकी गांठपर उत्पन्न होती है. इसमें दर्द होता है।

इसकी दवा-सज्जी, काली मिरच, पीपल सोंठ, हीराकसीस, सांभर नमक, कडवी तूंबी और सेंधा नमक सबको समान भाग लेकर कूटकर छान ले, फिर आक के दूधमें सान के उसी प्रकार बांधे जैसे कि बीर हड्डी के बयान में लिखा गया है।

जानुंआ रोगका निदान—जो घुटनेपर कोई हड्डी उभरे (ऊँची) हो जाती है उसको जानुंआ कहते हैं, इसी हड्डी का मुंह बन्द होता है, और कगूंरेदार होती है।

इसका इलाज—इस स्थान पर पछने लगवावे अथवा नील, हरताल, नीलाथोथा, शिंगरफ, चमेली का तेल, वच्छनाग इन सबको बराबर लेकर कुरण्ड के पत्थर पर पीसले और उसकी मालिश करे तथा आग से सेके, जब तक आराम न हो इसी प्रकार करे, यह क्रिया सवेरे और सन्ध्या दोनों समय करनी चाहिये। इस रोग में उस स्थान पर दाग देना भी बहुत लाभकारक है।

अथवा—उस स्थान के बालों को उस्तरा से साफ करके वहां पर थूहर की कांटेदार डाली को काट साफ कर आग में भुलभुलाकर दोनों समय बांधे इसी प्रकार तीन दिन तक करे परन्तु उस स्थान को खुला न रहने दे।

अन्य दवा—जमालगोटा की मिंगी आधपाव लेकर उन्हें नीबू के रस में घोट २ कर चालीस बार सुखाले, फिर उसको नीबू के रस में खरल करके तदन्तर उस स्थान के बाल साफ कर पछने लगावे तथा उस दवा में पांच चार बूँद नीबूके रस को डाल कर धूपमें रखदे और जब उसमें कुछ गर्मी आजाय तब उस स्थान पर लेप करे और ऊपर से अरण्ड के पचास पत्ते बांध दे पट्टी को दृढ बांधे जिससे कि वह तीन दिन तक न खुले। जब तीन दिन होजांय तो उस पट्टीको खोल डाले और पीली मिट्टी को घोलकर उस जगह लेप करे, किन्तु जब तक घोडेके आराम न हो तब तक उसे अस्तबल से न खोले; जो घोडे को सूजन

अधिक हो तो इस दवा को लगाया करे, कभी घबड़ावे नहीं और घावपर पानी न पड़ने दे. यह दवा वेल हड्डी; चकावल; मोतेडा और पुस्तके हड्डी में भी लाभदायक है।

हड्डी का इलाज—नीलाथोथा, उरद का चून, अण्डी के बीजों की मिंगी और सेंधा नमक प्रत्येक चार चार तोले लेकर सब दवाओं को कूट पीसकर उरदके आटेमें सानकर टिकिया बनाले और उसे एक ओर से लोहे के तवे पर सेंक कर दूसरी ओर से हड्डे पर रखकर वांध दे और तीन दिन पट्टी को खुलने न दे फिर तीसरे दिन पट्टीको खोलकर उसी तरह टिकिया बना कर वांधदे. और सूजन बाकी रहे तो फिर इसी प्रकार टिकिया बनाकर वांधे तथा जो घाव फटने लगे तो घीको धोकर उसका लेपकरे। अरमनके फूल और डालीको आगमें जलाकर राख करले फिर उस राखको पानीमें डालकर सात गोली अनुमान माफिक बनाले और नीबूके रसमें भिगोकर, गोली प्रातःकाल खिलावे।

सेंक— अञ्जीर के बीजों का गूदा, भिलाये, काले तिल, कूट, मोम, ऊँट की हड्डी इन सबको पीसकर सिंदूर और सेंधा नमक मिला कर दो पोटली बनाले. और कडवे तेलको आगपर चढा कर गरम करे फिर उसमें दोनों पोटलियों को डालकर एक २ पोटली से सुहाता २ दोनों समय सेंक करे।

मोतेडे की चिकित्सा।

पहिली दवा—अमरवेल चार पैसेभर लेकर कूटले और गुड़ में मिलाकर दाना खाने के पीछे खिलावे. कुछ दिन तक यही उपाय करे। तो यह दवा लाभदायक होगी।

दूसरी दवा—हींग भुनी हुई तीन पाव, और हल्दी डेढ सेर,

अजवाअर सेंधा नमक और काला नमक, प्रत्येक आध आध पाव इन सबको चक्की में खूब महीन पीस कर इकीस खुराक बनावे आधपाव गुड़ में एक खुराक मिलाकर नित्य खिलावे ।

तीसरी दवा—करंजकी गूदा, कुटकी, पीपलामूल, कालीमिरच कायफल, पीपल, काली जीरी घोडावच और भुना हुआ सुहागा सबको आध २ सेर लेकर कूट ले और उसमें से पाव भर नित्य पानी पीने से पहिले खिलावे ।

मोंढे और ढट्ठे पर सेक—कूट चार तोले अफीम आठ तोले दोनों को धतूरे के अर्क में मिलाकर लेप करे और कण्डों से सेदे, इसी प्रकार इक्कीस दिन तक करे तो निश्चय है कि सब मवाद सुम की राह से बाहर निकल जायगा ।

दूसरा सेक—थूहर की कांटेदार डाली पांच अंगुल लेकर उसके कांटे और सब्जी को साफ करदे और उसे भीतर पोली करदे उसमें सुहागा और अजवायन कूटकर भर दे और कपड़मिट्टी कर आग में डाले जब पकजाय तब निकाल कर कूटकर मोंढके आटे में मिलाकर दोनों समय खिलावे और सेक भी करे । दवा अनुमान से खिलावे ।

पुश्तक और चकावल का इलाज ।

पुश्तक और चकावल रोगों में ऊँटकी हड्डी को गरम करके उससे सेक करे परन्तु इससे सेक करनेसे उस जगह बाल नहीं आते हैं सो विचार करे ।

दूसरी दवा—जहां पुश्तक और चकावल हो उस जगह के बालोंको मुडवा कर पछने लगावे और जब रुधिर बहुत निकल जाय तब आक की ताजी जड लेकर छीलले और उसे मनुष्यके

मूत्र में पीसकर आगपर पकाकर उस जगह लेप करे और ऊपर से पट्टी बांध दे, जो पांव फूल जाय तो भुनी हुई फिटकरी और मक्खन दोनों मिलाकर लेप करे और उसके पांव में एक शीशे का कड़ा डालदे ।

बैजा और काना का इलाज ।

यह दोनों एक ही रोग हैं इसमें चूना और मक्खन मिलाकर मालिस करे और कण्डे की आग से सेके, फिर अरण्ड के पत्ते रखकर बांध दे ।

दूसरी दवा–साबुन, भिलावा, नीलाथोथा; आंबा हल्दी और जवाखार इन सबको बराबर लेकर पीसले और पानीमें घोटकर लेप करे ।

तीसरी दवा–हल्दी, मिरच और नीम के पत्ते एक एक पैसा भर लेकर पावभर तिल के तेलमें चढ़ाकर जलाले; फिर उनको उसी तेल में घोटकर थोड़ा मोम मिलाके मरहम बनाले । यह मरहम घाव और नासूर के वास्ते भी फ़ायदेमन्द है ।

रसौली की चिकित्सा–जब तक रस बन्द नहीं होता है, तब तक रसौली नहीं होती, यह पांव में या बगल में होती है, एक गांठ सी सूजन के साथ पड जाती है ।

पहिली दवा–काली जीरी, मुसब्बर, कुचला और निर्बिसी चारों को बराबर लेकर मनुष्य के पेशाबमें पीसकर गरम करके लेप करे और ऊपर से अरण्ड के पत्ते बांधे तो तीन दिन में गांठ बैठ जायगी।

दूसरी दवा–जब रसौली पकजाय तब उसको नश्तर से चीर कर मवाद निकाल दे और जवाखार, सज्जी और खिजूर का

फल बीज निकाला हुआ, इन तीनों को बराबर लेकर उनका लेप करे और अजवायन तथा लहसन चार २ दाम, सेंधानमक और पीपल तीन तीन दाम सबको कूट कर चूर्ण बनाकर चार पैसेभर गुलकन्द में मिलाकर सात दिन तक प्रातःकाल खिलावे जब तीन दिन होजायँ तब लेपकी दवाओं को नीबू के रस में पीस कर लेप करे ।

तीसरी दवा–सूजन के मुख को छुरी (नश्तर से) चीरकर उसमें यह दवा भरेः–नीलाथोथा; साबुन, नौसादर और शिंगरफ चारों को बराबर लेकर खूब महीन पीसले और तिलके तेल में पकाकर एक बर्तन में रखले और नित्यप्रति घाव के मुख में भरदे जब तक अच्छा न हो तबतक यही उपाय करे ।

गिल्टी गांठ और बतौरी की औषधि ।

पहिलो दवा–नौसादर आधी छटांक, सिरका आध पाव और स्प्रिट, कपूर आधी छटांक मिलाकर कपडे में तर कर बांधे ।

दूसरी दवा–गुलाई यक्मट्राक, दो ड्राम, सिरका डेढ छटांक और स्प्रिट आधपाव तीनो को मिलाकर लगावे ।

तीसरी दवा–नौसादर पैसाभर, मिउरीइटिक ऐसिड दो ड्राम और जल पावभर मिलाकर लगावे ।

चौथी दवा–नौसादर आधपाव और सिरका १८ छटांक मिलाकर लगावे । यह चार नुसखे बडे२ अँग्रेज अश्वचिकित्सकों के लिखे हुए हैं ।

फीलपा का इलाज–इसमें पांव हाथी के पांव की तरह फूल जाता है और चकतियां बांधकर जगह जगह घाव होजाते हैं ।

जिनसे पीला पानी झरता है इसमें दाग देने से बहुत फायदा होता है। तथा सिंगरफ की गोली प्रातःकाल खिलावे और मरहम कर लगादे।

सुम के रोगों का इलाज—जो घोडे की नाल गिर गई हो तो उसे अपने थान से न खोले और जो नालबन्दी में देर होजाय और सुम घिसते घिसते बदसूरत हो जाय तो नीचेके मरहम लगाने से अच्छा होता है।

मरहम नं०१—मोम, अलसी का तेल, शूकर का तेल, बकरे की चर्बी तारपीन का तेल और शहद सब चीजों को बराबर ले और पहिली चार चीजों को पिघला कर आग पर से उतार ले और फिर तारपीनका तेल तथा शहद मिलादे जबतक ठण्डा न हो और कभी २ यह मरहम कज्जल मिलाकर काला कर लेते हैं।

मरहम नं०२—चर्बी दो सेर, मोम आघ पाव और पत्थर के कोयले का तेल पावभर इन तीनों चीजोंको धीमी (मन्द मन्द) आग पर पिघलाकर और चलाकर मरहम बनाले, अगर खता या घाव में भरना हो तो थोडा सा पीव और मिलादे।

ये दोनों नुसखे अंग्रेजी शालिहोत्रों के हैं।

सुम फट गया हो उसका इलाज।

अक्सर पत्थर और बालू के ऊपर चलने से सुम फट जाता है तब उस हालतमें यह दवा करेः—मोम आधपाव,धूप एक छटांक तारपीन का तेल आधी छटांक और चर्बी डेढ पैसाभर इन सब चीजों का मरहम बनाकर सुमके घाव में भरदे और घोडे को

घास पर टहलावे अथवा अलसी का तेल दो भाग और पत्थर के कोयलों का तेल एक भाग मिलाकर सुम पर लगावे ।

अन्य दवा—फिटकरी, नीलाथोता, हीराकसीस और इनकी तिहाई सोनामाखी सबको पीसकर घाव में भरे । पहिले नीबू के रस में चूना मिलाकर यह दवा मिलादे और नीबू के रससे घाव को तरकर यह मरहम लगाकर ऊपर से कपडा वांध दे, इसी प्रकार सात दिन तक करे ।

खुर्दगाह का इलाज—यह बीमारी ऐड़ीके पास होती है इसमें सूजन और दर्द भी होता है ।

दवा—ऐड़ी पर तेल लगाकर सेंके और अरण्ड के पत्ता तीन दिन तक बांधे तो यह तकलीफ दूर हो ।

मेख, कङ्कड या कांटा चुभ जाने के कारण घोडा लङ्गडाता हो तो उसकी यह दवा करेः—पुरानी ईंट को आगमें लाल कर के निकाल ले और उसपर कई तहकी कपडे की गद्दी बिछादे फिर घोडेका पांव उस गद्दीपर रखकर थोडा २ पानी छिड़कता जाय जिससे घोडे को बहुत गर्मी न मालूम हो इस बफारे का नाम सङ्गबाद है ।

सुम का जमा हुआ खून निकालने का इलाज ।

कड़ी जगह पर दौड़ने से घोडे के सुम में खून जमा हो जाता है, जिससे वह लङ्गडाता है और अपने थान पर बहुत बेचैन रहता है, कभी पांव को उठा लेता है कभी कांपने लगता है ।

सुमसे घी मलकर लीद छोप दे और ऊपरसे कपडा बांध दे,

इसी प्रकार तीन दिन तक दोनों समय करे और संगवाद का बफारा दे।

सुमसे रस जारी करनेका उपाय—अजवायन और गुड बराबर ले और इसका चौथाई सुहागाले, सबको कूटकर उसकी पतलियोंमें भर दे और एक टाटकी थैला बनाकर उसमें सुमको रख दे इसी प्रकार तीन दिन तक बन्द रहने दे और जब गतिलियों का खोखलापन साफ होजाय तब खारी नमक और कच्चा सुहागा छः छः दाम कूटकर भर देवे।

दूसरी दवा—कुटकी, भुनाहुआ सुहागा और फिटकरी तीनों कूट कर पुराने गुडमें मिलाकर चालीस गोली बनावे और पानी के पीने से दोघडी पहिले एक गोली देवे पानी पीने के वक्त कायजा रक्खे जिससे पानी कठिनतासे पीवे और पानी पिलाने के बाद कायजा खोल डाले।

रस उतरना—बहुधा घोडे तथा और पशुओंका भी पैर फूल जाता है और रस बहने लगता है बहुधा घोडोंके पैरके ऊपरसे और सुमके पुतलीसे रस बहा करता है, उस दशामें नित्य दोनों समय नीम के पानी से पैरको धोवे और सडी हुई पुतली को चाकू या सुमसे तराशके काटकर फेंक देवे और नीचे लिखा मरहम लगावै।

मोम और चर्बी दोनेको समान भाग लेकर रेंडीका तेल दूनाले इन सबको चुराकर पैसा भर तूतिया और अधेलाभर कपूर मिलाकर काममें लावै।

दूसरी-तारपीनका तेल आधसेर, गन्धकका चूर्ण तीन पाव

शीरा एक पाव, शहद पाव भर और सत्तू आवश्यकतानुसार मिलाकर छटांक भरकी गोली बनाले और दिनमें दो बार घोडे को खिलावैं।

चौथी दवा–तारपीनका तेल आधपाव, साबुन आधपाव, जीरा पावभर; अदरख आधा छटांक और सत्तू जितना आवश्यक हो मिलाकर सबकी तीन गोली बनावे और दिन भरमें तीन बार घोडे को खिलावे।

बागमा और कैसरजादका इलाज।

जो किसी घोडेको चांदनी मार जाय तो दोनों आंख बैठ जाती है, सिरसे पांवतक तशनुज होजाता है तथा तमाम शरीर तख्ते की तरह हो जाता है, इस बीमारी में घोडा दाना घास छोड देता है क्योंकि उसको मुँह हिलाने में भी कष्ट होता है यह भी एक प्रकार का वात रोग है. इसमें जब तक मुँह रहता है तब तक इलाज हो सकता है।

पहिली दवा–एक जवान मुर्गके दोनों पंख और पांव काट कर शेषको उबाल कर खरलमें डालकर कूटले, फिर उसमें पाव भर काली मिरच महीन पीसकर मिलादे और सेर भर उत्तम शराब में एक सेर महेला के साथ खिलावे और गरम पानी पिलावै।

दूसरी दवा–एक छपकली के हाथ, पांव और पूछ काटकर शेषको खरल में कूटकर आटे में मिलाकर खिलावे और दोनों कान पुरानी रुई से बन्द करदे।

तीसरी दवा–शिगरफको पीसकर उसकी पूछकी नोंक चीरकर

उसमें भरदे और एक तोला पारा दोनों कानों में डाल कर पुरानी रुईसे बन्द करदे और चार पांच फेर बन्दूक की कान पर करे ।

देगमाका इलाज–इसमें घोडेको सिरसे पैर तक पसीना जारी हो जाता है, यह बडा कठिन रोग है, इसके लिये यह दवा करे ।

कंडेकी राख जब तक पसीना न सूखे तब तक शरीर से मले और दोनों कानों के सिरों पर दो गुल देवै ।

दूसरी दवा–मिरच आधपाव; हरताल टका भर और अकरकरहा छटांक भर सबको पीसकर ४० दिन तक सेर भर शराव में मिलाकर पिलावें ।

दीवानगीका इलाज–जो घोडा अपने हाथ पैर और सीना आदिको अपने आप काटै तो जानों कि पागल होगया है ।

दवा–अंगोज सीर अर्थात् लहसन, सोंफकी जड, अजवायन सेंधानमक, ढाकके बीज, सेंहुडके बीज सब नौ २ दिरमले और गुलकन्द सेरभर सबको कूट छानकर आधसेर दहीमें मिलाकर तीन दिनतक खिलावें ।

सोगंद्रेका इलाज–जो घोडा आप ही दुबला होजाय और आंखों में सफेदी आजाय तथा घोडा औंघता रहै उसको पेश्तर जुल्लाब देना चाहिये क्योंकि यह आमाशय संम्बधी रोग है ।

दवा–हल्दी, सोनामक्खी, छोटका सज्जी, प्रत्येक चार २ तोले पलास पापडी तीन तोळे सबको कूट छानकर तीन गोली

बनावे और प्रतिदिन एक गोली प्रातःकाल खिलावे रातिब खाने को न दे गर्म पानी पिलावें जो दस्त आने में देरी हो तो एढिलास खिलावे और जो बहुत दस्त आवै तो ठण्डे पानी से सोंठ की गोली बांधकर खिलावें और ऊपर से एक नीबू खिलादे।

ज्वरों का वर्णन- ज्वर में शरीर गरम होजाता है, घोडा सुस्त रहता है, न कुछ खाता है और न कुछ पीता है, मूत्र कारंग बदल जाता है। ज्वर में सब से पहिले जुलाब दे।

पहिली दवा- टारटार एमटिक आधा ड्राम, कपूर आधा ड्राम और शोरा दो ड्राम उनमें थोडी सी अलसी की खली और शीरा मिलाकर गोली बनाले और दिन में दो बार खिलावै।

दूसरी दवा-कपूर और सुर्मा प्रत्येक अधेलाभर और शोरा तीन पैसाभर इनमें शीरा और मैदा या आटा मिलाकर गोली बनाले। प्रति दिन एक या दो गोली खिलावै।

तीसरी दवा-सुर्मा आधा पैसा भर, सीरा डेढ पैसा भर और काला निमक एक पैसा भरले इनमें थोडा शहद मिलाकर गोली बनाले और प्रतिदिन दो बार घोडे को खिलावै। यह इनफ्लूएंजा नामक (शीत) ज्वर पर बहुत लाभदायक है।

सन्निपातज ज्वर-यह ज्वर घोडेको अचानक उत्पन्न होजाता है और यदि इसका उपाय शीघ्रही न किया जाय तो घोडा मर जाता है। इस ज्वर में घोडे की नाडी तेज चलती है, नाक के भीतर सुर्खीसी दिखलाई देती है सामने की टांगे तनी हुई सी

होती है, श्वास अधिक वेग से चलने लगता है और शरीर गरम होजाता है।

पहिली दवा—सुर्मा धेलाभर और डिजिटेलिस, शोरा और काला नमक प्रत्येक एक पैसा भर इन सबको थोड़े शहद में मिलाकर एक गोली बनाले और ऐसी एक २ गोली प्रत्येक आठ घण्टे के पश्चात् घोड़े को खिलावे तो आराम हो।

दूसरी दवा—शोरा दो पैसेभर और टार्टरयमेटिक आधा पैसा भर दोनों को मैदा और शीरा में मिलाकर गोली बनावे और दिन में दो वार खिलावे।

तीसरी दवा—क्यलम्यम ४५ रत्ती, टार्टरयमेटिक ४० रत्ती, डिजिटेलिस १० रत्ती, और मुलहटी चार पैसाभर इन सबको शहद में मिलाकर एक गोली बनाले और ऐसी एक २ गोली प्रत्येक छः घण्टे पश्चात रोगी को खिलावे।

चौथी दवा—कार्वनेट आफ यमोनियां डेढ ड्राम अफीम एक ड्राम और सोंफ आधा आऊंस इन सबको थोड़ा शीरामें मिलाकर गोली बनाकर दिन में दो वार खिलावे। यह दवा उस समय देनी चाहिये जब कि बीमारी वहुत वढ जाय और फेंफड़ा सडने लगे।

कफज ज्वर का इलाज—इस ज्वर में शरीर गरम होजाता है, मुंह से कफ निकलता है।

पहिली दवा—डिजिटेलिस आधा ड्राम, कपूर एक ड्राम; सुर्मा एक ड्राम, अलसी की खली एक ड्राम और शोरा तीन ड्राम इन सबको मिलाकर एक गोली बनावे और ऐसी २ दो गोली दिन में दो वार घोड़ा को खिलावे।

दूसरी दवा—जङ्गली प्याज छदाम भर, हिंगडा पैसाभर और अफीम छदामभर इन सबको मिलाकर एक गोली बनावे और प्रतिदिन रात को एक गोली खिलावे ।

तीसरी दवा—गन्धक दो पैसाभर, हींग आधी छटांक, मुलहटी का चूर्ण आधी छटांक, और तारपिन का तेल आधी छटांक, इन सबको मिलाकर चार गोली बनावे और प्रतिदिन रात को एक गोली खिलावे ।

चौथी दवा—मुलहटी का चूर्ण दो पैसाभर, जौ का चून आधी छटांक और कोलतार छदाम भर इनमें थोड़ा शहद मिलाकर एक गोली बनावे और ऐसी ऐसी एक गोली प्रतिदिन रात के समय दे ।

कंवल रोग का वर्णन—उस रोग में घोडे के नेत्र पीले पड जाते हैं, मूत्रका रङ्ग पीला तथा गाढा हो जाता है, दाना खाने से घोडे को अरुचि होजाती है दस्त साफ नहीं होता है और कभी २ बन्द हो जाता है ।

जो दस्त साफ न होता हो तब यह दवा करेः—

पहिली दवा—कैलोम्यल एक ड्राम, सुर्मा टुकराभर और मुसब्बर धेलाभर सबको शीरा में मिलाकर एक गोली बनावे । चार २ पांच पांच घण्टे के पीछे ऐसी ऐसी एक एक गोली जबतक दस्त न हो तबतक दे ।

दूसरी दवा—मुसब्बर धेलाभर और कोलम्यल एक ड्राम इनको शीरा में मिलाकर एक गोली बनाले और ऐसी ऐसी दो गोली दिनभर में दो वार खिलावे ।

प्रमेह रोग–इसमें धातु गिरती है इसके लिये यह दवा दे (१) कतिला देवे। (२) कत्था, केलाकी जड और कतिला प्रातः-काल देवे (३) सफेद जीरा अथवा मुली की जड का चूर्ण बनाकर दे।

गांठ फूट जाना–बहुधा घोड़ों का गांठ फूल आता है और पीछे फूट भी जाता है और वहा करता है, इस दशा में घोडे को बांध रखना चाहिये।

पहिली दवा–फिटकरी और चीनी के बर्तन का टुकड़ा दोनों को पीसकर पानी में सानले, न बहुत गाढा हो न बहुत पतला फिर इसका लेप करे ऊपर से पत्ती रखकर पट्टी बांध दे (बहुधा इस लेप में काजल भी मिला लेते हैं।)

कृमि रोग–बहुधा घोडे के पेटमें कीडे पडजाते हैं, जो दस्त में भी निकला करते हैं, इससे भूख बन्द होजाती है।

इसकी दवा–नमक दो पैसाभर, जुन्तआना पैसाभर, लोहेका जङ्ग पैसाभर सभैन धेला भर और शीरा थोडा सा ले इन सब चीजों को मिलाकर गोली बनावे, सात दिन तक सवेरे के समय एक गोली दे और इसके पीछे जुलाब दे।

दूसरी दवा–काली जीरी और नीम की पत्ती खिलाना भी बहुत उत्तम है।

कुत्ता का काटना–जिस घोडे को कुत्ता काट खाय उसको मनुष्य की खोपडी का चूरा छदामभर, मकोय डेढ रत्ती और कुछ गुड इनकी गोली बनाकर सवेरे और सन्ध्या के समय एक एक गोली खिलावे, इसी प्रकार छः सप्ताह तक दे तो घोडा पागल न होगा।

सोचका इलाज-जिस घोडे का पांव सोच आने से फूल गया है। उसके पांव को नौसादर आधी छटांक, और शोरा एक छटांक आधसेर पानी में मिलाकर उसमें कपडा तरकर उससे बांध दे और हर समय कपडा को तर रक्खे, जो सूजन और दर्द अधिक हो तो उस स्थान पर जोंक लगादे, और यदि आवश्यकता हो तो उस स्थान की फस्द भी खोल सकते हैं।

आंव और दस्तों का इलाज-जो घोडेके दस्त में आंव और खून आता हो तो उसके लिये यह दवा देनी चाहिये।

पहिली दवा-मेंहदी की पत्ती आधी छटांक, सूखी बेलगिरी एक छटांक, कतीरा आधी छटांक और सफेद जीरा आधी छटांक इन सबको कूट कर मिलाले और आधा सवेरे तथा आधा सन्ध्या को खिलावे।

दूसरी दवा-अफीम टुकरा भर; छुई मिट्टी का चूर्ण आधी छटांक, बबूल का गोंद आधी छटांक और पोदीना की पत्ती आधी छटांक इन सबको कूटकर एक या दो दफे खिलावे।

तीसरी दवा-अफीम टुकराभर, कत्था का चूर्ण धेलाभर सोंठ का चूर्ण टुकराभर और अतमब या मुर्गी का अण्डा एक इन सब चीजों को मिलाकर आधसेर मांढ के साथ पिलावे।

चोट का इलाज-पुट्ठे और रानों पर चोट लग गई हो और पीठ या रीढ पर दर्द हो तो नीचे लिखे हुए लेप लगावे और पटुआ या सन से बांधे।

(१) पिंच आधपाव और तारपीन का तेल आधी छटांक इन दोनों को मन्दी मन्दी आग पर पिघला कर लेप करे।

दूसरा लेप–पिच ढाई पाव, पत्थर के कोयलेका तेल तीन छटांक और मोम आधी छटांक तथा थोडा तेलिन मक्खीका चूर्ण पहिले तीन दवाओं को पिघलाकर फिर तेलिन मक्खी का चूर्ण मिलाकर लेप बनाले।

तीसरा लेप–पिच दो सेर, तारपीन का तेल तीन छटांक और अलसी का तेल आध पाव इन तीनों को आग पर पिघला कर लेप बनाले।

जहरबाद।

पहिली दवा–मिरच, कसोंदी, अदरख और पान बराबर लेकर सबको कूटले और छटांक २ भर दिनमें दो बार खिलावे।

दूसरी दवा–चन्दाल, सोंठ, मिरच, पीपल, कुटकी, वायबिडंग, चिरायता, सफेद जीरा, नीबे की छाल, काकडासिंगी, काली जीरा लहसन, गेरू, सोया के बीज सबको धेला २ भर लेकर कूटकर बुकनी बनाले और आधसेर सत्तू के साथ खिलावे।

घोडेको जुलाब देनेकी औषध–जो घोडेको साल भरमें एक बार जुलाब दिया जाय तो कभी बीमारी पैदा नहीं हो सकती जब जुल्लाब देना हो तब पहिले दिन घोडे को दाने के बदले में चोकर पानीमें सानकर खिलावे और दूसरे दिन कुछ न दे, संध्या समय चोकर दे और तीसरे दिन मामूली दाना दे तीन दिन सवारी न ले॥

पहिला जुलाब–मुसब्बर तीन तोले सोंफ दो माशे और विलायती साबुन छःमाशे इनको कूटकर गुलकन्द में मिला गोली बांधकर खिलावै और टहलावे और जो चाहे कि पेशाब भी

खुलकर हो तो कलमी शोरा छः माशे और बबूलका गोंद ६ माशे और मिलाले।

दूसरा नुसखा—एलुआ, हल्दी और काला निमक तीनों को पांच तोले लेकर बारीक पीसकर दो गोलियां बांधे। एक गोली शामको देवे और जो दस्त होने में देर हो तो दूसरी गोली और दे देवे। जो ज्यादह दस्त हों तो तुलसीकी पत्तीकी गोली बनाकर देवे या नींबूकी पत्तीमें चार तोले मिरच मिलाकर खिलावे।

तीसरा नुसखा—काला नमक एक पाव, सनाय के पत्ता आध पाव सोंठका चूर्ण आधी छटांक इन द्रव्यों को एक सेर चांवल के गरम मांढ के साथ खिलावे।

चौथा नुसखा—अरण्डीका तेल एक पाव और नमक एक पाव इनको आध सेर अलसी के मांढमें मिलाकर पिलादे।

जुलाबके दस्तों को बन्द करना।

जो जुलाबसे घोडेको दस्त बहुत आवे और बन्द करने की आवश्यकता हो तो सोंफ, सफेद जीरा, और कालीमिरच चार २ तोले लेकर कच्ची पक्कीकर पीसकर गोलियां बना लेवे और एक गोली दे, फिर थोडी देर बाद दूसरी गोली दे और जो इस दवा से दस्त बन्द न हो तो भुनी हुई हींग एक तोले; घी चार तोले और साठी चांवल आठ तोले इन सबको पीसकर गोली बनाकर खिलावे।

अतिसारका इलाज—जिस घोडेका पेट चलता हो उसको यह दवा दे:—

(१) भंगकी लुगदी खिलावे (२) सोंठ और सौंफ प्रत्येक एक दाम दोनोंको आधी आधी भूनले और आधी कच्ची रक्खे. माई एक दाम घीमें मिली हुई, मोचरस एक दाम कमरगिरी दो दाम, वंग चार दाम धावे के फूल एक दाम: लोध एक दाम, मीठे इन्द्रजौ एक दाम और मोंठ एक दाम सबको कूट पीसकर एक सेर खट्टे दहीमें मिलाकर खिलावे ।

चारों फसलोंकी बीमारियों का इलाज ।

बसंत ऋतु (फस्ल बहार) में घोडेको कफके जोर से बीमारी होती है इसमें चिकनाई और मिठाई से परहेज रक्खे जिससे कफ न बढने पावे, सूखी घास और कूएका पानी पीने को देवे; सबेरे और संध्याको सैर करानी चाहिये तथा यह चीज खिलावेः—शहद, कुटकी, बांसेकी पत्ती, नीम, सेंधा नमक, पीपल, शराब आतशी और सेबकी पत्ती आदि खिलावें ।

गर्मीके दिनोंका इलाज—इन दिनोंमें घोडेको बहुत गर्मी और पित्तका जोर होता है, इस लिये जिससे गर्मी बढे वह चीज न देनी चाहिये, पोइया या सरपट दौडावे, दिनमें दो तीन बार पानी पिलावे दाना कम कर देवें, बदन को धोता रहै. थान ठण्डा रक्खेः पानी, मट्ठा, हरी घास, खिलावे और ठण्डी दवा देवै । गर्मीके दिनों में घोडे को तीन प्रकार की बीमारियां होती है ।

पहिला—जब घोडेका बदन गरम हो, रंग कांपता हो दोनों कूखतनी रहें, बुतानेका रंग पीला रहै धीरे २ बदन सूखता जाय, सुस्त रहै और भूखसे खाना न खावे तौ यह ताव खा-

जानेकी पहिचान है, इसके लिये यह दवा करे—सोंठ, पीपल, काली मिरच, छोटी इलायची के दाने, जवाखार, सज्जी भूनी हींग बराबर २ लेकर कूट छानकर रखले फिर देवदारु और शीशम दोनों की लकडी पाव २ भर पानी में उबाले जब दो सेर पानी रहै तब छानकर उस चूर्ण को मिलाकर पिलावे, जो दस्त आवे तो अच्छा है ॥

दूसरी बीमारी का इलाज—दूसरी बीमारी वह है जिसमें घोडे का लिङ्ग खालीसे बाहर निकल आता है और सूजन होजाती है घोडा बार २ गरम श्वास लेताहै, चांदनी को देखकर डरता है मार्ग नहीं चलता है, पानीसे उसका जी नहीं भरता है आंखों को मुश्किलसे खोलता है तालू और जीभका रंग पीला पडजाता है, नाक और मुंहसे पानी जारी होजाता है इसमें भी पहिला सा इलाज करें। तीसरी बीमारी का इलाज—जो मुंहसे लुआब जारी हो तो उस वक्त पावभर भंगकी लुगदी बनाकर खिलावे।

पेशाब में गाढापन होनेका इलाज ।

जिस घोडे को पेशाब गाढेपन के साथ होवे उसको यह बीमारी सात दिन से अधिक न बढने दे अर्थात सात दिन इसका इलाज करे।

दवा—त्रिफला, सफेद जीरा और कतीरा तीनोंको बराबर ले कूट छानकर आध पाव सवेरे दाने से पहिले और आध पाव संध्या को दानेके पीछे खिलावे और ऐसी दवा न करना चाहिये जो गरम होवै और पेशाब के गाढेपन में जर्दी होवे तो अदरख और काली मिरच दाने के बाद देना चाहिये।

बे वक्त पानी पिलाने से बीमारी होवे उसका इलाज ।

जब घोडा मंजिलका चला और दौडा हुआ आवे तब उसको

पिलाना न रक्खे किन्तु उसी समय ठण्डा करके पानी पिलावे जिससे दाना घास अच्छी तरह खाय और जो घोड़े को बिना ठण्डा किये पानी पिला देवे तो रुधिर जोश खा जाता है और शरीर गरम होजाता है और कभी२ लीद और पेशाबभी बन्द होजाताहै और आंखोंसे पानी जारी होजाता है।

जो ऐसा हाल हो तो कस्तसीरी और तिल का तेल दोनों को गुनगुना करके मालिश करे।

दूसरी दवा–अरण्डकेपत्ते और गोबरकी पोटलीका सेककरे।

तीसरीदवा–टूंडीकेपास नश्तरदे और शहदका शर्बत पिलावे।

रातिब हजम होनेका इलाज–अदरक आध पाव, काली मिर्च आधपाव, पीपलामूल, आध पाव, गिरी छटांक भर, बादाम की मिंगी आधपाव, लौंग छटांकभर, गुजराती इलायची छः दाने सोंठ छः टंक, तज छटांकभर और पान सात सौ सबको कूटकर तीन भाग करे और एक२ भागको दिनमें तीन २ बार खिलावे और दवाके बाद पहर भर कायजा रक्खे।

बछेडेको मलीदा खिलानेकी रीति।

सेरभरचनेके चूनकीरोटी बनाकर सेरभरदूधमें मलले औरउसमें सेरभर बूरा मिलाकर पानीपीनेकेबाद चालीसदिनतक खिलावे।

बुड्ढे घोडेको कल्ला खिलानेका इलाज।

बकरीके दोचारकल्ले मंगाकर आगमेंभुलभुलाले,फिरमांसकोहड्डी से अलगकर पानीके साथ देगचीमेंभर चूल्हेपर चढ़ादे और हाथों से मलता रहे तथा आग मन्दी २ जलावे जब घी ऊपर आजावे तब उसे महेले के साथ चालीस दिन तक पानी पीने के पीछे घोडे को खिलावे।

मेथी खिलाने की तरकीब–जो मेथी के साथ महेला दिया जाय तो बहुत लाभदायक है। तथा मोठ चार भाग और मेथी एक भाग पकाकर जाडेके दिनोंमें खिलावे मेथी कम खिलावे। हल्दी खिलाने की रीति–आधपाव हल्दी को कूटकर खालिस दूध में आठ पहर भिगोवे फिर दूसरे दिन निकाल कर मलकर हलुआ बनाकर खिलावे, और दूसरे दिन से हल्दी को थोडी२ बढाता जाय यहां तक कि पांचवे दिन पूरी पावभर होजाय। इसी प्रकार चालीस दिन तक हल्दी घोडे को खिलावे।

अदरख का हलुआ खिलाने की रीति।

यह हलुवा, जवान; बुड्ढे और बछेडे सब प्रकार के घोड़ों को मोटा करने के लिये लाभदायक है, इससे शरीर की कान्ति बढती है. इस हलुएको जाडे और चौमासे में खिलावे तो घोडा कभी दुबला न हो।

हल्दी, अदरख और मेथी प्रत्येक ढाईसेर लेकर सबको महीन पीसले फिर इनमें घी डालकर अग्नि पर चढा कर भूनले किन्तु बहुत लाल न हो जाय फिर उसमें शक्कर पांच सेर और गाय का दूध दस सेर मिलादे और चमचे से चलाता रहे जब हलुआ तैयार होजाय तब उतार कर एक बर्तन में रखले और पानी पिलाने के पश्चात् पावभर खिलावे तथा क्रमशः बढ़ाता हुआ सेर भर की खुराक तक पहुँचावे।

खांड खिलानेकी विधि–खांड खिलानेसे भी घोडा बहुत मोटा होजाता है कि जितनी मोंठ हो उससे चौथाई खांड मिलाकर घोडे को नित्य खिलावे–यह प्रयोग पाचन शक्ति को बढाता है।

हाजमे का चूर्ण– जिस घोड़े की पाचनशक्ति ठीक न हो उसको दवा रातिव खिलाने के पश्चात नित्य देवें।

दवा–कचरी, राई, बंगलामला, सोंठ घोड़ावच, हर्रा पाक सोंजर और कालानमक सबको बराबर लेकर कूट छानले और उसमें आध पाव चूर्ण महेले में मिलाकर घोडेको खिलावें और कायजा रक्खे।

पन्लोदा बनानेकी विधि–यह नुसखा सूजन, वादी और कफ को बहुत लाभदायक है इससे घोडामोटा होताहै और पाचन शक्ति ठीक होती है।

कालीजीरी, चीता, सोंठ, मिरच, घोड़ावच, त्रिफला, वायविडंग पीपल, सेंधानमक, खारी नमक, राई, भुनी हींग; कचरी अज वायन, हल्दी, भुनीहुई फिटकरी, भुना हुआ सुहागा; कुटकी, जवाखार; कचलोन और सोंजर सबको कूट छानकर चूर्ण बना कर रातिव के बाद घोडा को खिलावें और इसकी मात्रा चार दामकी हैं महेले के साथ। जिसको वादी का रोग हो, जिसको नालकी तकलीफ हो जो वादगीरा अथवा जोगीरा से पीडित हो उसको वेसन में मिलाकर यह चूर्ण खिलावें। इस प्रकार सात दिनतक खिलावे तो सब वीमारी दूर हों। यदि इसनुसखे में सुहागा न डाला जाय तो उत्तम है क्योंकि इससे रस जारी हो जाता है।

फरियाद रस चूर्ण–इस चूर्णसे वादा, कफ, गर्मी और दम ये बन्द होजाते हैं:–जीरा पावभर, हरड, वहेडा, आंवला आधसेर सोंठ, पावभर अजमोद, पीपला मूल, जवाखार घुडवच, वायविडंग, तवाखीर, काला गूगल और मग्जफलूस प्रत्येक पाव २ भर, सोंफ एक सेर, वेलगिरी आध पाव मरोडफली, फिटकरी

कलोंजी, असपन्द, सांभर नमक, कुटकी, मिरच, हलहुल के बीज विलासपापडा, काकडासिंगी, कसेसर, काला जीरा; सुहागा, सोंचर नमक हल्दी वंग प्रत्येक आध २ पाव कचरी और मेथी प्रत्येक आध २ सेर सहजने की छाल, चार सेर और लोध आध पाव इन सबको कूट छानकर आध २ पाव की मात्रा दाना देनेके पहिले घोडे को खिलावे अगर दाने के पीछे दे तौ भी कुछ हर्ज नहीं है।

हून्ननिगार बनानेकी विधि—राई, वन्दाल, हींग पीपल, भिलावा हींग चीता कुटकी तिल और अदरख इन सबको कूटकर बेर की बराबर गोली बनावे। एक गोली नित्य संध्या के समय खिलावै और कायजा रक्खै।

सादिकुलनफा चूर्ण—त्रिफला, सोंठ, लालमिरच, सोवा, हुलहुल के बीज, गुरच, जंगी हरड प्रत्येक पावभर, अजवायन और कचरी प्रत्येक एकसेर, असगंध, पीपलामूल, चीता, बेलपत्र, अकरकरा, इन्द्रजौ, पीपल और शातरा प्रत्येक एक २ छटांक घुड़वच सज्जी काला नमक सोंफ कत, मूली के बीज, मैनफल, कालेसेर बन्दाल प्रत्येक आध २ पाव, राई सवासेर, कुटकी सवा सेर, हल्दी लहसन और खारी प्रत्येक आधसेर सांभर नमक तीन पाव हींग तीन दाम और पोहकर मूल तीन दामले। सबको कूटकर और छानकर तीन सेर सिरके में भिगोकर सुखाले और एक छटांक रातिब के पश्चात् नित्य खिलावै।

मुफ्ताहुलनफा चूर्ण—राई अजवायन बहेड़ा हरड सरशफ असवन्द, मुसब्बर, बेल, अजमोद, काकडासिंगी, अंजीर के बी-

ज, कचरी. मेथी, मस्तंगी; भङ्ग, अदरख; गुगल, कुचला, इलायची, पीपल लोंग, स्याहजीरा, सफेदजीरा, अरनी, असगन्ध; धाय के फूल, कवांच के बीज, इन्द्रायणकी जड, जायफल, कत्रावा, इन्द्रजौ, तज, अतरज, आंवला, गिलोय, भङ्ग, भारङ्गी, भिलावा, हल्दी, सोंठ, सोंफ, सतुआ, गन्धक, वायविडंग, काली मिरच, घुडवच, वेलगिरी, खारी नमक, असखार; सांभर नमक, सज्जी, जवाखार, काला नमक, सहजने की छाल, चिरायता, देवदारू, दारुहल्दी, जंगली कनेर की छाल और पोहकर मूल सबको आध २ सेर ले और जायफल टकाभर ले सबको मिलाकर कूट छानकर नीबू के अर्क में भिगोकर सुखाले, फिर दही में भिगोकर सुखाले इसमें से प्रतिदिन आठ या नौ दिरम गुड के साथ खिलावे और जो किसी प्रकार की बीमारी हो तो सत्तू के साथ दाना खाने के पश्चात् खिलावे।

रूमी चूर्ण–यह चूर्ण बहुत लाभदायक है, इससे जहरवाद बादी और कफ आदिक अनेक रोग दूर होते हैं तथा यह प्रत्येक ऋतु में लाभदायक होता है।

दवा–अजमोद, चिरायता, जवाखार, काकडासिंगी, कूट विलास पापडा, कुटकी, तीखर, पापल, सम्हालू के पत्ता, गूगल, चीता, मरोड़फली, पीपलामूल प्रत्येक पावभर प्याज, बन्दाल हल्दी, सोंठ, हर्रा, बहेडा, कचरी, सहजनेकी छाल और पोदीना प्रत्येक एकसेर, सेंधा नमक, काला नमक, सांभर नमक, पांगा नमक, घुडबच, सज्जी, राई, काली जीरी; अदरख, कालीमिरच, इन्द्रजौ देसी अजवायन, गिलोय, वेलगिरी, बंग, मँगरेला, दोनोंजीरे, नीम के पत्ता, बकायनका पत्ता, इन्द्रायनका सूखा फल और छोटी हरड

प्रत्येक आध २ सेर, फिटकरी और सुहागा भुना हुआ, कुचला आधपाव, भुनी हुई हींग छटांकभर; सबको कूटछान कर रखले और दाना देने के पश्चात् सत्तू के साथ आधपाव चूर्ण खिलावे और एक पहर पर कागजा रक्खे।

सम्बुलखारकी गोलियां—जहरबाद और कुकुरी आदि सबको फायदा रखती है :—

दवा—बचनाग, सम्बूल, दरतार, संगरफ, संगरेजा सोंठ, लोंग, सुहागा, काली मिर्च; प्रत्येक एक तोला और अदरख पांचसेर ले अदरख को कूटकर उसका अर्क निकालले और उसमें शेष सब दवाओंको कूटकर खरलमें डालकर अदरखके अर्कके साथ सात दिनतक घोटे और ऐसी बारीक करे कि सुर्मासी उसके सामने कुछ न रहे जो अदरख न हो तो पानके अर्क में ही घोट ले खरल भी पक्के पत्थर का हो जिससे दवा में पत्थर का अंश न आजाय, फिर चनाकी बराबर गोलियां बनाले, जब आवश्यकता हो तब छटांकभर गेहूं के चून की रोटी बनाकर उसमें एक गोली को पीसकर रखकर घोडे को खिलादे. दाना खिलाने के बाद सन्ध्या समय घोडे को खिलावे ।

मरहमकी बनानेका विधि—राल पावभर, मोम टकाभर, शीशम का तेल सेरभर ले; तेलको लोहे की कढाई में नीमकी सेरभर पत्ती डालकर जलादे, जब पत्ती जलजाय तब निकालकर फेंक देवे, फिर राल और मोम डालकर नीमकी लकडी से घोटे. तदुपरान्त पानी से पचास बार धोकर रखले यह मरहम सब प्रकार के घावों को लाभदायक है।

मरहम जंगार बनानेकी विधि–यह मरहम नासूरके लिये बहुत ही लाभ दायक है; चाहे मनुष्यके नासूर हो और चाहे घोडे के सबको लाभ देता है।

नीमकी हरी पत्ती आठ दाम, मोम, राल, जंगार; प्रत्येक एक दाम, माजून पांच दाम, तूतिया चार रत्ती इनको कूट छानकर रखदे, फिर गर्मियों में पावसेर तिलका तेल और जाडे में कडवा ले नीमकी पत्तियों को डालकर जलावे, जब जल जांय तब पत्तियों को निकाल कर फेंक देवै और उक्त सब दवाओं को छानकर धीरे २ मिलावे, नहीं तो गोली बंध जायगी और दवा बिगड जायगी।

मरहम बदरोजा के बनाने की विधि–काला जीरा, तूतिया, सिलाया, हरताल, सम्बुल चूक, दारुहल्दी और जवाखार पचीस २ दाम ले, पावसेर तेलको कडाई में चढाकर जोशदे, फिर उतार कर सब दवाओं को कूटकर धीरे २ नीमकी लकडी से चार पहर तक घोटे यह तेल सब प्रकार के घाव, नासूर, तंग और पीठ के घाव सबको दूर करता है।

आश्चर्य जनक नुसखोंका वर्णन।

पहिला नुसखा–अगर घोडेकी भौंरी दूर करनी हो तो उस जगह की खाल काटकर वहां सिन्दूर और तेल मिलाकर लगावे जब तक घाव न भरे तब तक बराबर इसी उपाय को करता रहै।

दूसरा नुसखा–चूना और सज्जी दोनों को पानी में मिलाकर धनी पर लगावै तो यह रोग दूर होता है; लगातार २ चार दिन तक यही उपाय करे।

तीसरा नुसखा-जो घोडा आग या बारूद से जल जाय तो उसके घावको प्याजके पानीसे धोया करे. मनुष्यों के लिये भी यह लाभदायक है बरसाती भी इससे दूर होती है ।

चौथा नुसखा-जो घोडे के घावसे रुधिर बहना बंद न होतो मकडीका जाला लेकर उस जगह पर लगावे अथवा सुहागे के चूर्ण को घाव पर छिडके ।

पांचवां नुसखा-यदि घोडेके घावको नीमके पानी अथवा आदमी के मूत्र से धोवै तो बहुत लाभदायक है ।

छठा नुसखा-जिस घावमें कीडे पड गये हों उसमें सूखा तम्बाकू भरना उत्तम है अथवा कुटकी पीसकर भरै ।

सातवां नुसखा-जब इन्द्रमालका घाव होजाय तब यह इलाज करै कि फिटकरी; माई, बडी हरड, अनारका छिलका और एलुआ भुना हुआ सबको समान भाग लेकर बारीक पीसले और नित्य घावके मुखपर भरा करे ।

आठवां नुसखा-जो घावपर बाल न जमते हों तो थूक में कडवा तेल फेंटकर लगावे (२) साबुन और नील मिलाकर मले । (३) चमडाको जलाकर उसमें तेल, सिन्दूर और थोडा साबुन मिलाकर लगावै ।

नवां नुसखा-जो घोडेको सांप काट खाय तो उसको जितनी वह खा सकै उतनी नीमकी पत्ती खिलावै ।

दसवां नुसखा-जिस घोडेके कफ बहुत गिरता है उसको पीपल अदरख और कालो मिरच तीनों को पीसकर खिलावे ।

ग्यारहवां नुसखा-जिस घोडे की मनी झडती हो उसे कत्था, केलेकी जड और कतीरा मिलाकर तीन दिन तक देवै (२)

सौंफ, सफेद जीरा और मूलीके बीज नौ दिरम पीसकर सात दिन तक खिलावे।

बारहवां नुसखा–घोडेको पसीना बहुत आता हो तथा जो थोडी मेहनत से ही घबरा जाता हो उसको दो दाम गेरू शक्कर में मिलाकर खिलावे।

तेरहवां नुसखा–जिस घोडे का डोमडे ढोग गोली खिला देते हैं वह बहुधा मर जाता है, क्योंकि उसका इलाज बहुत मुश्किल से होता है किन्तु एक डाक्टर ने उसके लिये नुसखा बतलाया है।

(१) दो या चार गिरगिटों को पानीमें जोश देकर उस पानीको नली द्वारा घोडे को पिलावे।

(२) करण्डाकी पेडएक मंगाकर उसकी कडी लकडी दूर करके शेष पत्ता, फूल कांटे और फल सबको औटाकर उसमें से आध सेर पानी घोडे को पिलावे॥

चौदहवां नुसखा–जिस घोडे की चोटी और दुमके बाल न बढते हों उसके बालों को साठी चांवलों के धोवन से धोवें अथवा आंवला, कायफल और मेथी तीनों को कूटकर कपड छन करके थोडे पानी में मिला कर गुनगुना कर सवेरे और संध्या दोनों समय धोया करै।

पन्द्रहवां नुसखा–जो घोडा दांत मारता है वह बुरा होताहै क्योंकि वह बहुधा आदमी पर चोट करता है उसका यह इलाज करै कि साईस लौकी या बैंगन खूब गरम करके तयार रक्खे और जब वह घोडा किसी आदमी पर दांतमारै तभी उस लौकी

या बेंगनको उसके मुखमें धरदे, ऐसा करने से उसकी आदत छूट जाती है।

सोलहवां नुसखा—जो घोडा पानीमें बैठ जाता हो उसका यह इलाज है कि एक टुकडा बिना बुझे हुए चूनेका उसके तंगपर रखकर तंगको खींचदे और घोडेको पानी में लेजाय। जब घोडा पानी में बैठेगा तब वह चूना पानीमें भीगने के कारण फूलेगा और उसकी जलन से घोडा खडा होकर भागेगा, ऐसा करने से घोडा पानी में बैठने की आदत भूल जाता है।

सत्रहवां नुसखा—जो घोडा बाग पर फटता होवै उसका यह इलाज करै कि उसकी बागकी मुहरी को आग में गरम करके तीन बार इमली के रसमें बुझावै फिर मोहरी को घोडे के मुख में दे ऐसा करने से उसकी आदत छूट जाती है।

अठारहवां नुसखा—जो घोडा मुंह जोरी करता है उसका यह इलाज करै कि मोहरी को पांच या छःबार चिड चिडाकी राख डालकर इमली के रसमें बुझावे और इस मोहरी को घोडे के मुंह में रक्खे।

उन्नीसवां नुसखा—जो घोडा दो पैरोंसे खडा हो जावे उसका यह इलाज है कि सवार हर समय पानीमें भिगोया हुआ कपडा अपने पास रक्खे और घोडा खडा हो तभी उसके कानमें वह कपडा निचोड देवै दो चार बार ऐसा करने से घोडा अपनी आदत को छोड देता है।

बीसवां नुसखा—जो घोडेके हाथ और पांव रंगने हों तो सूखी मेंहदी पावभर, कत्था चार दामको धरके फूल पांच दाम सबको

पीसकर दो एक दिन तक लगावे. ऊपर से अंजीर के पत्तों की तह बांध दे, ।

इक्कीसवां नुसखां—जो घोडेका दम बढाना चाहै अर्थात् ऐसा करना चाहै कि साठ सत्तर कोस चलकर भी घोडा न थके तो यह उपाय करें कि एक काले सर्पको अधमरा करले किन्तु इस तरह से करै कि न तो उसका रुधिर निकले और न जहर बाहर आवें, फिर उस सर्प के मुंह में सौ या कुछ कम चने भर एक घडे में रखकर उसका मुख बन्द करदे और फिर उस घडे को पृथ्वी में गाढ दे. चालीस दिन पीछे चनोंको निकाल कर साफ रखले और जब दूर जाना हो तब उनमें से एक चना सत्तू या रातिब में मिलाकर घोडे को खिलावें ।

इति अश्वचिकित्सा समाप्त ।

एक हफ्ते अन्दर जो तुम नहीं आओगी ॥
तो राहत को फिर जिन्दा नहिं पाओगी ॥

॥ कहना बांदी का ॥

लावनी--नाहकको रंज इस कदर आप करती हो ॥
समझाने पर भी धीर नहीं धरती हो ॥
सब सखी सहेली संग की आप बुलाओ ॥
दो घडी साथ उनके तुम मन बहलाओ ॥
लो सलाम मेरा जाती हूं मैं प्यारी ॥
भगवान करै रहे तबियत शाद तुमारी ॥

रतनकुमारी बोली सुनों प्यारे बांदी इस तरह समझा बुझाकर राहतजान के महलों से रुखसत हुई और अपने घर जाकर जोगन का भेष बना लिया सींगी सेली गले में डाल बड़े बड़े दानोंकी माला पहन सुन्दर लंबे लंबे बाले छोड सि-तार हाथमें ले रातके बारह बजेके बाद अपने घरसे निकलशा-ही बाग के दरवाज़े पर जो नीमक दरख्त लहलहा रहे थे उनके नीचे मृगछाला बिछा लेटरही सितार को दरख्त से लटका दिया सुबह होतेही बाग के माली ने फाटक खोला यह वहांसे उठ बाग के अन्दर गई और जहां बादशाह आन कर बैठते थे उनके सामनेही एक दरख्तों का बन था वहां आसन लगादिया और सितार की गतें निकालने लगी सुबह के वक्त जो यहां दस बीस रईस शहरके आया करतेथे आये और सितार की गत सुनकर और इसके रूपको देखकर सब पास आन कर हाथ जोर सिर नवा बैठ गये इनको बैठा देख जोगिन ने ये गज़ल गाना शुरू किया ॥

॥ तरजी अबंद ॥

रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ।
कफस में कब तलक तडफूं निहायत बेकरारी है ॥

दोहा—विरह रोग तनमन दहै, कल न पड़ै दिनरैन ।
विधना काहूके कहीं, लागें हाय न नैन ॥
नहीं ज़खमी बचा इसका यह वह पैनी कटारी है ।
रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ॥

दोहा—प्रीत रीत तुम आगली, सबै दई बिसराय ।
ऐसी कोऊ करत है, जैसी तुम की हाय ॥
नहीं मालूम क्या हम से हुई तकसीर भारी है ।
रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ॥

दोहा—प्रीतम प्रीत लगाय तुम, छिपे कौन से देश ।
विरह रोग तनमें बसा, जटा जूट भये केश ॥
तरस आता है देखे से कि जो हालत हमारी है ।
रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ॥

दोहा—हमतो तज कुलकान सब, कीनी तुमसंग प्रीत ।
तुम निर मोही निठुरहो, करन लगे विपरीत ॥
इसीका नाम उल्फत है यही क्या शर्तें यारी है ।
रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ॥४॥

दोहा—कहा न माना किसीका, कीनी तुमसन प्रीत ।
सोई फल पायो हमन, दैनलगे दुख मीत ॥
न कुछ तकसीर है उनकी ये सब किस्मतहमारी है ।
रिहा करदे अरे सैयाद अब फसले बहारी है ॥५॥

दोहा—प्रीत करी सुख के लिये, तन मन धन विसराय ।
सो लागी दुख दैन अब, कीजे कौन उपाय ॥
निहायत ऐसे जीने से हमारी जान आरी है ।

लश्कर मौजूद हुये और वजीर लोग जोगनजी को लिवाने गये और कहा जोगनजी महाराज आपको बादशाह सलामतने याद किया है ॥

जोगन-बाबा हम फकीर लोगों से बादशाह को क्या काम अटका है ?

वजीर-काम की कोई बात नहीं है आपके मुख से कुछगाना सुनने की दरकार है ॥

जोगन-हम लोग गाना बजाना क्या समझें योंही अपनेतान रीरी कर दो घड़ी दिल बहलाते हैं

वजीर-आप का कहना दुरुस्त है मगर हमारी खादिमी पर भी नजर करना चाहिये ।

जब इस कदर वजीर अहलकरों ने अर्ज गुजारिश की तब जोगनजी उनके साथ चलने को तयार हुईं और सवारी में बैठ शाही बाग में जो कदम दिया तो वही खलकत बल्कि उस से जियादह आलम पाया यह अपने आसन पर जा बैठीं अहलकारों ने यथोचित आदर सतकार किया बाद आदरहोने के इसने अपना सितार मिलाना शुरू किया कुछ बाजापखाबज किनारी वगैरा शाहीभी मौजूद हुआ पहले तो जोगनजी ने सितारमेंही वहगत निकाली कि अच्छे २ जो कामिल उस्ताद लोग बैठथे सब चकित होगये पखाबज और किन्नारी इस कदर मिली हुई बज रही थी कि अजब समां दरस रहाथा फिर जोगन जीने यह राग गाना शुरू किया ॥

(खेमटा)

मोहन प्यारे आन दिखा दीदार ॥ तेरे कारन घर दर छांडा छोड दिया परिवार । अब मोहन प्यारे आन दिखा दीदार ॥